





जिसको

जिसको

उद्योतिर्विद पं॰ गोकुलनाथदेव द्वारा

रिक्ति कराकर

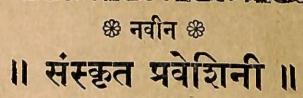
भार्गव पुस्तकोलय ने छपवाकर

प्रसिद्ध किया ।

प्रकाशक ने इसका सर्वाधिकार स्वाधीन रख्या है।

तुष्यंतु सुजनाबुध्या विषेशान् सदुदीरितान् ॥ अयोधेन हसंतोमां तोषमेष्यन्तु दुर्जनाः ॥१॥ सीताराम दिनकर जटार प्रोप्रायटको श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस सिटीमें सीताराम माधव मावळण-करके प्रबन्धसे मुद्दित ॥ सं० १९७ कार्तिक शुक्क १ गुरुवार ॥





-Sirmities-

जिसको

ज्योतिर्विद पं॰ गोकुलनाथदेव द्वारा रचित कराकर भार्गव पुस्तकालय ने छपवाकर

भागेव पुस्तकालय ने छपवाकर प्रसिद्ध किया ।

प्रकाशक ने इसका सर्वाधिकार स्वाधीन रख्खा है।

---

तुष्यंतु सुजनाबुध्वा विषेशान् मदुदीरितान् ॥
अबोधेन हसंतोमां तोषमेध्यन्तु दुर्जनाः ॥१॥
सीताराम दिनकर ष्ठटार प्रोप्रायटरके श्रीछक्ष्मीनारायण
प्रेस, बनारस्र सिटीमें सीताराम माधव मावळणकरके प्रबन्धसे मुद्रित ।
सं० १९७० कार्तिक शुक्क १ गुरुबार ।

LITTLE PROPERTY II who are the second MINISTRATION OF MINISTRA

# संस्कृत प्रवेशिनी।

### प्रथम बोध।

संस्कृत भाषा में सात विभक्तियां होती हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृत्रीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्टी, सप्तमी, और एक संबोधन होता है, वह प्रथमा विभक्ती में. हे के लगान से. बोध होता है.

## इन सातों विभक्तियों की विशेष संज्ञा।

प्रथमा-कर्ता द्वितीया-कर्म तृतीया-कर्ता. करण हेतु. सप्तमी-अधिकरण. चतुर्थी-संप्रदान

पंचमी-अपादान षष्टी-कर्ताः कर्मः संबंधः संबोधन-आकारण

# विभक्तियोंका व्यावहारिक विशेष अर्थ।

विभक्ति.

वह. वो.

एक बचन.

द्विवचन. वे दोनों

जोसो.

ते दोनों

द्वितीयाः {	उसको ताहि- ताको	डन दोनों को
ब्रुतीयाः {	उस <b>चे</b> उसकरके	उन दोनों ने उन दोनों करकें
चतुर्थी. {	उसके छिये उसके वास्ते.	उन दोनोंके लिये. उन दोनोंके वास्ते.
पंचमी. [	उससे 💮	चन दोनोंसे
षष्ठी. {	उसका. उसकी.	उन दोनोंका. उन दोनोंकी.
सप्तमी. {	उसमें. उसपर. उसके विषे.	चन दोनोंमें. चन दोनों पर. चन दोनोंके विषे
संबोधन {	हे. अथि. अरे. रे. अये पुकारना.	हो. अहो. भो.

प्रथमा—
द्वितीया—
नृतीया—
चतुर्थी—
पंचमी—
षष्ठी—

बहुवचन. वे. वे जोसो. उन सबोंको. उन सबोंने. उनसबों करके. उनके लिये. उनके वास्ते. उन सबोंसे. उनका. उनकी. संप्रमी— संबोधन— उन सबों में. उन सबों पर. भा अहो. हो

शब्दों के तीन लिंग होते हैं. पुलिंक स्नीलिक नपुंसकलिक ये सातों विभक्तियां प्रत्येक शब्दों में एक वचन के साथ एक वचन द्विचन के साथ दिवचन बहुवचनों के साथ बहुवचन का प्रयोग करना उचित है। जैसे. (सः रामः) वह एक राम जो सी. (तौ रामौ) वे दो राम जो सो. (ते रामाः) वे बहुत राम जो सो. इसी प्रकार सातों विभक्तियों का अर्थ एक वचन दिवचन बहुवचन के अनुसार उच्चारण करनी उचित है। अब धातुओं के क्रिया का भी रूप तीन प्रकार का होता है। जैसे—

प्रथम पुरुष.

मध्यम पुरुष.

उत्तम पुरुष

भवति

भवतः

भवन्ती.

इन क्रियाओं का भी प्रयोग एकवचनादि रूपसे ही करना चाहिये. इनके उदाहरण आगे छिखेंगे—

# मुरूय २ शब्दोंके स्वरूप और अर्थ।

वयम् प्र-अहम्. आवाम्. हम. मे इम दानों इम सब. आवाम्, नीः द्वि० माम् मा अस्मान् नः इम दोनों को. इम सबाको हमको. आवाभ्यां वृ०- मयाः अस्माभिः इस दोनों से इमने इम सनोंत

इम करके च॰ महाम् मे. मेरे लिये. मेरे वास्ते. पं॰ मत्. इससे.

ष०— मम. मे. मेरा.

स् - मिय. इमारे में. इमारे पर.

प्र०- त्वम् तुमः द्वि०- त्वां त्वाः कुमकोः

तृ०— त्वया. तुमने.

च०- तुभ्यं. ते. तुमारे लिये:

पं०- त्वत्. तुमसे. हम दोनों करके आवाभ्यां नौ. हम दोनों के लिये. हम दोनों के वास्ते, आवाभ्यां हम दोनों से, आवयोः नौ. हम दोनों का, आवयोः इम दोनों का,

इम दोनों पर.

युवाम् तुम दोनों. युवाम्. वां. तुम दोनों को. युवाभ्यां. तुम दोनों ने. तुवाभ्यां वां. तुम दोनों के छिये. युवाभ्यां. तुम दोनों से. हम सबों करकें अस्मभ्यं, नः हम सबों के लिये. हम सबों के वास्ते, अस्मत्, हम सबों से, अस्माकं, नः हम सबों का, अस्मासु, हम सबों में, इम सबों में, हम सबों पर,

यूयम्
तुम सब.
युष्मान्, वः
तुम सबोको.
युष्माभिः.
तुम सबो ने.
युष्मभ्यं. वः
तुम सबोके लिये.
युष्मन्

षं०-	तव. ते.	युवयोः. वां.	युष्माकं. वः.
	तुम्हारां.	तुम दोनों का.	तुम सबों काः
₩°-	त्वाये.	युवयोः	युष्पासु.
	तुमपर	तुम दोनों पर.	तुम सबों पर.
म्०	भवान्।	भवन्तौ.	भवन्तः
	आप.	आप दोनों.	आप सब.
द्धि०-	–भवन्तम्	भवन्तौ.	भवतः
	आपको.	आप दोनों को.	आप सबों को.
तुं >	- भवता•	भवद्भ्याम् .	भवाद्भः
	अापने.	आप दानोंने.	आप सर्वाने.
च०—	– भवते.	भवद्भ्यां.	भवदभ्य:
	आपके लिये.	आप दोनोंके छिये.	आप सर्वोंके लिये.
पं०-	- भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:
	आपसे.	आप दोनोंस.	आप सबोंसे.
ष०-	- भवतः	भवतोः	भवताम्.
	आपका.	आप दोनों का.	आप सबों का.
स०	- भवति-	भवतोः	भवत्सु ।
	आपर्मे.	आप दोनों में.	आप सबों में.
म•	- सः	तौ.	ते.
	वह.	वे दोनों.	ने सन.

हि०-	-तं.		तौ.		तान् .	
	उसको.		उन दोनों	को.	उन सब	ंको.
नृ∘—			ताभ्यां.		तै:	
	्डसने.	2	उन दोनों	ने.	उन सबों	ने.
च०			नाभ्यां.		तेभ्यः	
	उसके लिये.		उन दोनों	के छिये.	उन सर्वो	के लिये.
पं०—	तस्मात्.		ताभ्यां.		तेभ्य:	
	इससे.		चन दोनों		उन सबें।	से.
ब्.०	तस्य.		तयोः		'तेषाम्-	
	उसका.		चनदे।नों	का.	उन सबों	का.
स॰—	तस्मिन्,		तयोः		तेषु.	
	उसमें.		उन दोनो	में.	उन सबों	में.
		-	<del>-</del>			
	एष:	अयम्	•	असी.	यंध	
प्र॰		इमौ.		अमू.		दोनों.
	एते.	इमे.	a	अमी.	ये	सब.

प्राच्याम् आभ्याम् अपूभ्यां. विदानों करके

तृ०एतैः	एभिः	अमीभिः	इनसंबोंक (के.
च०एतस्मै.	अस्मै.	अमुष्यै.	इसके लिये.
च०-एताभ्यां.	आभ्यां.	अमूभ्यां.	इनदोनोंकेलिये
च०एतेम्यः	एभ्यः	अमीम्यः	इनसबकेछिये.
पं० एतसात्.	अस्मात्.	अमुष्मात्.	इससे.
पं० एताभ्यां.	आभ्यां.	अमूभ्यां.	इनदोनोंसे.
पं०- एतेम्यः	एभ्यः	अमीभ्यः	इनंसबोंसे.
ष० एतस्य.	अस्य.	अमुध्य.	इसका.
ष०-एतयोः एनयो	: अनयोः	अमुयोः 🌘	इनदोनोंका-
ष० एतेषाम्.	एषां.	अमीषां.	इनसबोंका.
स॰ एतस्मिन्	. अस्मिन्.	अमुष्मिन्.	इसमें.
	अनयोः एनयोः	अमुयोः	इनदोनोंमें.
एतेषु.		अमीषु.	इनस्वोंमें.

कौ. के. के. पु० का स्री॰ काः का. य. के. कि. कानि. न० कौन दोनों. कौ. कौन सब. कौन एक. कं. पु० कान्. के. र्रीहे. स्त्रीं कां. काः

		~	_	
	न०	र्कि.	के.	कानि.
		किसको.	किन दोनों को.	
	ão	केन.	काम्यां.	कै:
तृ.	स्री०	कया.	काभ्यां.	काभिः
	न्०	केन.	काभ्यां.	कै:
		किसने.	किनदोनोंने.	किनसबोंने.
,		कस्मै.	काभ्यां	केभ्यः
ਚ.	स्री०	कस्यै.	काम्यां.	केभ्यः
	न०	कस्मै.	काभ्यां.	केम्यः
		किसके छिय	<ol> <li>किन दोनोंके छिटे</li> </ol>	. किन सर्वोंके छिये-
	Å.	कस्मात्.	काभ्यां.	केभ्यः
Ų.	स्री.	कस्याः	काभ्यां.	केभ्यः
	न.	कस्मात्.	काभ्यां.	केभ्य:
	किसर	ने.	किनदानोंसे.	किनसर्वोसे.
	युं.	कस्य.	कयो:	केषाम् •
क	स्री	कस्या	कयोः	कासाम्-
	न.	कस्य.	कयो:	केषाम्.
	किसका.		किनदोनोंका.	किनसबोंका.
	ġ.	कस्मिन्,	कयो:	केषु.
सं.	स्री.	कस्याम्.	कयो:	कासु.

न कस्मिन् किसमें.

कयोः किनदानोंमे केषु. किनसबोंमें

# अब अन्यय लिखते हैं।

नः नोः

ना.

मा. अ.

नहि. निषेध

अद्य.

अधुना.

इदानीं.

खलु. किल्

आज.

सभी.

અમી.

निश्चयसे 🗸

इन्तर बता अहहा अहा हाहा.

खंद.

आश्चर्य.

च. वा. किंवा.

याः ।फः और. तुः धुनः फिरः

एवम्.

इसप्रकारसे

### दिशब्दवाक्योदाहरणानि.

सः आगच्छहतिः

वह आता है.

त्वं गच्छासे.

तुम जाते हौ.

मामुपदिश.

इमको उपदेश करो. गौथलतिः

गाय चलती हैं.

ते गताः

वेगये.

अय मीक्षते.

यह देखता है.

वयमालोकइश्यामहे.

इमलोक देखेंगे.

बालको रोदति.

बालक रोता है.

वयं गच्छामः

इमलोग जाते हैं.

युयं दृष्टवंतः

आप लोगोंने देखाथा

अंह जानामि.

इम जानते हैं.

पापी पतति.

अधर्मी गिरता है.

सूर्यः उदेविः सूर्य उगता है. सन्ध्या भवति. सायंकाळ होता है. नदी वहति. नदा बहती है. चायुश्वलती. हवा बहती है. कथं स्थास्यसिः कैसे बैठागे. गायनं कुरू. गाना गाओ. पुस्तकं पठ. किताब पढां' श्वाः आगच्छ. कल आना. अद्य गमिश्यामि. भाज जाऊंगा. पुत्रो दुग्धम पिवत्. लडकेन दूध पीया. मनुष्याः पलायन्ते. आदमी भागते हैं.

रात्रिर्जाता. यत्रि भई. दिवसी स्तीमतः दिन बीत गयाः

चन्द्रोदयते. चन्द्रमा दीख पडता है. मेघो गर्जति. च।दल गरजता है. रृष्टिभीवष्यति. पानी बरसेगा. मूषकाः प्रलायन्ते. चूह भागते हैं. विद्यु दश्यते. विजली दीख पडती है. रामो आगतः राम अए. शुको डीयते. सुग्गा उडता है. व्याघो मृतः शेर मरा. सदास्यति. वह देगा. अहं इनिष्यामि में माह्या.

माजीरो धावति. बिही दौडती है.

### अथ तृशब्द

गुरुः शिष्यं शिक्षयति. गुरु शिष्यका सिखलाता है. माता शिशुं ताडयति. मा लड़के को मारती है. मातुलो देशान्तरं गतः मामा परदेश गया है. मातामहो न दृष्टः नाना को नहीं देखा. गमभागिनी आगता. मेरी बहिन आई. माता मही गृहे अस्ति. नाती घर पर है. तव मातुलानी गायति. तुम्हारी मामी गाती है. सकथं हनिष्यति. वह कैसे मारेगा. असिना इनिष्यति. तळवार से मारेगा.

कुतः आगतः कहांसे आया.

### वाक्यानि-

अइमत्रतिष्ठामि. हम यहां खड़े है. त्वं क गंतासि तुम कहां जानवाळे हो. श्वशुरो मामन्त्रयति. ससुर इमको बुलाता है. अश्रु वस्त्र ददौ. सास कपड़ा द्ती है. मम ज्ञातयः क्रुध्यंतिः इमारे जातके लाक खफा होते हैं. दुष्टसंगात् ज्ञानंनश्यतिः दुष्टकं संगसे ज्ञान नष्ट होता है. कालो जरां विद्धाति काल वृद्धता को देता है. राजाचोरान् दंडयति। राजा चोर लागोंको शिक्षा देताहै. तवश्यालाः इसन्तिः तुम्हारा साले इसते है.

त्वंहितं शृणु. तुम हितीकी बातको सुनीः माता भोजनं दास्यति. मां खाने की देगी. अपि कुशलं तापसस्यः ऋषी कुशंलता से हैं: तव वस्त्रं प्रेषितं. तुम्हारा कपड़ा भेजां। भृत्यः पण्यवीथिकायां गतः नौकर बाजारमें गया है. खड्गो मिलिनो जातः. तलवार मैली भई है. अहं नागामिश्यामि. मैं नहीं आऊंगा. क्रिक्सः कश्मीरादागच्छति। केशर कदमीरसे आता है. नद्याः स्नानं श्रेयः मदी में स्नान करना अच्छा है। दासी गृहं परिष्करोति, मजुरनी घर सफा करती है। मुक्ताः समुद्रे जायन्ते. मोती समुद्रमें होते हैं.

महान्विलंबोजातः. बड़ी दर भइ. मृगमदो मृगाद्भवतिः कस्तूरी मृगंसे उत्पन्न होती है। वर्षासु मेघाभवति। वर्षाकालमें मेघ होते हैं. रमणीयो वसन्तकालः प्राप्तः भनोहरं वसन्त ऋतु आया। पष्टिदण्डैरेको दिवसः साठ घडीका एक अहारात्र होता है त्रिंशता दिनैरेकी मासः तीस दिनका एक महिना होता है. द्वि मासाभ्यामेको ऋतुः दो मांहनोंका एक ऋतु होता है। जेष्ठाषाढौ ग्रीष्मः डेयष्ट आषाढ प्रीध्मऋतु होता है. आश्विन कार्तिकौ शरत्-कुँवार और कातिक परद्ऋतुहोता है माघ फाल्गुनौ शिशिरः माघ और फाल्गुन शिशिर हैं. श्रावण भाद्रौ वर्षा. श्रावण भाद्रपद वर्षा होती हैं.

आग्रहायणपौषौहिमः भगइन आर पूंस यह हेमन्तऋतु है चैत्र वैषाखौ वसन्तः चैत्र और वैषाख वसन्त होता है. ऋतवः षड्भवन्ति. ऋतु छः होते हैं. वाराः सप्त. वार सात होते हैं. विरलःस्तापःहिम् प्रधानम् घाम थोड़ा है जाड़ा विशेष है. प्रामे प्रामे विद्यालयाः सन्ति गांव गांव में पाठशाला हैं. कस्य कस्य शास्त्रस्य. किस किस शास्त्र की, **पातरुध्यितः** संबरे उठा. पवनस्वास्थ्यकरः इवा निरोग कारक है. न्यायालंकार साहित्या दीनाम्. न्याय अलंकार साहित्यादिकों की. गृहकार्य पर्यालोच्यताम्. घरके काम काज को देखी.

त्वया राजसभा दृष्टाः तुम ने राजा का द्बीर देखा. ततो निर्गतोहं. वहाँसे में निकला. समाचार पत्रं पठितम्. अखबार बांचा. तत्र प्रायः खलाः वसंति. वहां बहुत करके दुः छ छोग रहते है पवनः सेवितः हवा खाई. ते पाषाण बत्कडोर हृदयाः वे पत्थरके तरह कठार हृद्यवा है हैं विश्वासं मात्वत्पालयत् विश्वासका माताके सद्घरक्षण करे झटिति नयनं सन्तोषयति. झट पट आंखोंको संतोष देते हैं. प्रजानां सुखदुः खानिराजाश्रितानि प्रजाकासुखदुःखराजाके आधीनहै परिचये काल सर्पवत्यतीयन्ते. परिचय होजाने पर काळे सर्प की सम्ता दिखाते है,

नीतिवादी शत्रुरपिवंधुः नीतिज्ञ रात्रू भी बन्धूके सदृश है. सदामिथ्या व्यवहरन्ति. सदा मिंध्या व्यवहार करते हैं. अनीतिकारी बन्धुरपिश्रत्युः अनीति करनेवाला बंधु भी शत्रुहै. येखलास्ते राजाप्रयाः जो छोग दुष्ट होते हैं वेराजाके प्रियहै, परद्रव्यं लोष्ठवत्त्यजेत्. दूसरेके द्रव्य को विष्ठा के सदृश त्याग देना. ये प्रशंसन्तितेमान्याः जो प्रशंसा करते हैं वे मान्य हैं. जनाः सर्वदा राजानस्तुवन्ति सब छोग राजाकी स्तुति करते हैं. परिश्वयम्मातर्भिव पश्येत्। दूसरेके स्त्रीको माताके सदृश देखे.

तेन दृष्टं मयानालोकितम् उसने देखा था मैंने नहीं देखा. कामं विश्ववत् विन्धात् कामकोविशक सहश जानना. इमे यद्त्रूयुःस्तच्छ्रोदथामि. ये छोक जा बालेंगे वह सुनेंगे. सन्तोषं प्राणवद्रक्षेत्। सन्तोषका प्राणकी समान रक्षण करे गुरुर्यत्कथयति तदुपादेयम्, गुरु जी कहते हैवह प्रहणकेयोग्य है. आवांगतवन्तौते नागताः इम दोनां गये थे व लोक नहीं आये. एतेशिशवः पाउंहित्वान्कीडन्ति ये लड़के पढ़ना छोड़के खेलते है. यूयमग्रेगच्छतवयमन्वागच्छामः तुम लोक भागे जावो इम कोक पाछे से आवेंगे.

अहं पठिष्यामि येनाहं सर्वमान्यो भविष्यामि. इम पढेंगे जिससे सब लोक इमको मानेंगे.

बेळाजाताकिमधुना भोजनाय नामन्त्रयतिः नखत होगई क्यों अभी भोजनको नही बुळाताः

नसं मलीनं जांत अद्य रजकाय देयं.
कपड़ा मेला भया है आज घोनी को देना.
स्वीकमी नायातः कंचुकं नास्ति किंपरिधास्यामि.
दर्जी नहीं आया कुडता नहीं है क्या पहिरेंगे.
पुस्तकं नकीतं किं पठिष्यामि.
पायी नहीं खरीदा क्या पढेंगे.

एषः मद्यं पीत्वा पथि पतितोस्ति । यह शराब पी करके रस्तेमें पडा है.

भ्रातः स्वपुस्तकं यत्नेन न स्थापयसि पत्र्यनवीनं पुस्तकं की दृग्जातं.

भाई अपनी किताब यत्नसे नहीं रखते देखो नई पुस्तक कैसी होगई.

अस्मैदीनाय किंचिद्दास्यामि

इस दीनकों कुछ देंगे।

अयं वश्चकः साधुवेषं कृत्वालोकान्वश्चयति.
यह धूर्त साधूका वेष बनाकर लोकोंको ठगता है।
एनं दृष्ट्वा सर्वे इसन्ति निन्दतिच.
इसको देख लोक इसते हैं और निन्दा करते हैं।
ऋणाद्धिकं पापनास्ति तेनबुद्धिमिलिनाभवति.
ऋण से बढ़कर पाप नहीं है उससे बुद्धी मछीन हो जाती है।
तत्र वर्धमानोनामः विणिशिवसति.

वहांपर वर्धमान नामक बनियां रहता है.

#### ते स्वेच्छा हार विहारं कुर्वाणाः ननन्दतुः

वेलोग अपने मनकी मौजकेसाथ आहार विहार करतेहुए आनंदको प्राप्त हुवे

हेराजन् वो स्वागतं.

हेराजा आप का स्वागत है,

मिक्षका दशति.

मख्खी काटती है.

अश्वो धावति.

घोडा दौड़ता है.

वेतनं दत्तं.

वनख्वाह दिया,

क्रोधः शान्तः

क्रोध गया.

अद्य गामिश्यामि,

आज जाऊंगा.

वाक्रोशति.

कुत्ता भूकता है.

दीपोज्वलति.

दीपक जलता है,

मयूरो नृत्यति.

मोर नाचता है.

निद्रा निर्गता.

नींद् उचट गई,

धनं लब्धम्, द्रव्य मिलाः

X-4 (100)

चक्षुः स्पन्दते.

आंख फडकती है,

वस्त्रं धृतं.

कपडा पहिना.

अहमगच्छम् .

इम गये थे.

गुरुः पूजनीयः

गुरुकी पूजा करना.

पिता सेवनीयः

पिताका सेवा करना उचित है.

पुत्रः पालनीयः

पुत्र पालन के योग्य है.

दुष्टाः दमनीयाः

दुष्टोंका दमन करना उचित है,

खेदो जायते.

पसीना होता है.

चेतः विखश्यति

चित्त दुःखी होता है /

वयं ताडिताः इमलांग मारेगयं. माता माननीया. माताका मान करना चाहिये. समांददर्श. वह मुझे देखता भया. शिष्टाः रक्षणीयाः शिष्टलोग रक्षणक योग्य हैं. सत्येन सर्वे तुष्यान्त् सत्य से सब प्रसन्न रहते हैं. भवद्भिः सत्यं पाल्यम् आपकोसत्यका पालनकरनाचाहिये पिमणः कलंकूजंतिः चिंडिया कलरव करती हैं. मया पाठोभ्यस्तः इमने पाठ पड़ा. रामो वनं जगामः राम बनको जाते भये. गावो वत्सान्दुग्धं पाययन्ति गायें बछड़ेको द्ध पिलाती हैं. विडालाः स्वबालकं खादन्तिः विजैध्या अपने छड़कोंको खाती है.

मेषाः यस्तकै धर्निनतः मेड मस्तकसे मारत हैं. माहिषाः शृंगौर्युध्यंति. भैसे सींगसे लड़ते हैं. कणेन शब्दं शृणवन्ति. कानसे शब्दकी सुनते हैं. मूपकाः वस्तं छेदयंति. मूस वस्रोंको काटते हैं. कायेन चेष्टां कुर्वन्ति. शरीरसे चेष्टा करते हैं. त्वंगागच्छ. तुम मत जाओा. कदागंतासि. कब जाने वाले हो. आगच्छ. अत्भो. आवांती दृष्ट्वंती. इम दोनों ने उसको देखा आ. षष्टि पलैदंडो भवति. साठ पलका एक दंड होता है. रसनया रसान् स्वादयन्ति। जिञ्हासे रसोंका स्वाद छेते हैं.

अपिसुखयतितेनछिनीपत्रवातः क्यों तुमको कमलके पत्रोंको स्पर्ध करने वाला वायु सुख देता है.

पाणिना गृण्हंति. हाथोंसे छते हैं. मनसा इच्छन्तिः मनसे इच्छा करते हैं. वद्नेन भाषंति. मुखसे बोछते हैं. पादेन गच्छन्ति. पाओंसे चलते हैं. आत्मा सर्वस्मा त्रियतमः भारमा सब वस्तुओं से अधिकश्रिय है सर्वे आत्मनः कुशलं कामयन्ते. सब लोग अपने कुंबल की इच्छा करते है। य आत्मनो अप्रियं करोति

सञ्जुर्भवति.

जो आत्माका अप्रिय करता है वह शत्रु होता है.

यो आत्म विक्रयं करोति

समहा मूढः जो आत्माका विकय करता है

वह सहा मूर्व है.

वसंते हक्षाः पुष्पपछाविता भवंति वसन्तऋतुमें वृक्षपुष्प और पत्तों से युक्त होते हैं.

ममापि हदिई हशीएव शंकावर्तते मेरे मनमें भी ऐसी शंका है.

दिशः मसन्ना भवन्ति। दिशा प्रसन्न होतीं हैं।

पवनो मन्दं २ वहति। वाय भीरे २ बहता है.

चन्द्रमा प्रसन्नः सन्तुदेतिः चन्द्रमा प्रसन्न होके उद्य होता है.

व्याधिः शाम्यति.

रोग शांत होता है.

निशा शीणा भवति. रात छोटी होती है.

वनं दावानलेन दहचते. वन दावानलसे दग्ध होता है.

दिवसो इद्धियाति.

दिबस बढ रहा है.

धूलीपटलं गगनमाच्छादयति.
धूल आकाश्चको छा रही है.
तप्तः चलति पवनः
हवा गरम चलती है.

जलेन विना गगने चातकाः रुदंति
पानी।बिना आकाशमें चातक रोते हैं
सदा शीतल वस्तुषुस्पृहा वधिति
हवलत शीतल वस्तुषोम इच्छा

मेघाः गर्जतो वारीणि वर्षतिः मेघगर्जना करके पाना बरसाते हैं. वर्षासु गगनं मेघे राष्ट्रयते. वर्षाकालमें गगन मेघाडंबरोंसे युक्त होता है.

बहती है.

सिन्धुनीमनदः काश्मीरदेशेस्तिः सिन्धुनामकनद् काश्मीर देशमें है. पन्थानः कर्दमिनो भवन्ति. मार्ग सब कीचड्से युक्त होते हैं. सकणकः पवनः श्रठति. जलकणोंसेयुक्त वायु चळता है.

सौदामिनी नयनं स्थगयति. बिजली नेत्रोंको स्तब्ध करती है। जलं मलिनं भवति. जल मेला होता है. क्षेत्राणि सस्यैः पूर्यन्ते. क्षेत्र सव धान्योंसे भरे हैं. जलं स्पर्शदुःसहं भवति. जल छूआ नहीं जाता है. चम्द्रमा हिमैराच्छाद्यते. चन्द्रमा हिमसे आच्छादित होता है. शरदि मेघो निर्मलो भवति. शरद्कालमें मेघ निर्मल होजाता है पश्यननु प्राप्तः सहस्रबाहुः कृतवीय्य पुत्रः देखों ऐसा दिखाई देता है कि कृत-वीर्यका छड़का सहस्रबाहु आया. मरालाः जले क्रीइंति. राजहंस जलमेंक्रीड़ा करते हैं. चन्द्रो परागः प्राप्तः चन्द्रमहण आया. भवता किमापिस्नान दानादिकं कारयं.

आपने कोई स्तानदानादि कार्य करना चाहिये.

शीतमतीव वाधते. जाड़ा बहुत सताता है. कदाण्यालस्यो नविधेयः कभीभि आलस्यको नहीकरना उचित है.

हक्षाः खल्व पुष्पा भवन्ति। वृक्ष निश्चयसे पुष्पद्दीन होजाते हैं. हर्ष संवादो वक्तव्यः खुशीकीबात सुनाओ.

मूर्खतायाः अधिकः कोपिदो

मूर्खतासे बढ़कर कोई दोष नहीं है. सत्यविद्या यथार्थज्ञानेभ्योन्य-त्किमपिनास्तिसुखदायिः

सत्यविद्या और यथार्थज्ञानसे बढ-कर कोई दूसरीवस्तु सुखदाईनहीं है इदंध्येयंयेन सत्संगोन निवर्तेत. इसंबातका विचार करना जिससे सत्संग न छूटे. सूर्योदयात्प्रागेवोत्थातव्यम् । सूर्योदयसे पहिलेही उठना चहिये. उत्थाय शुद्धमनसा परमेश्वर-स्यसारणं कार्यम्. उठकरके शुद्धचित्त होकर परमे-श्वरका स्मरण करना. ततो मातापितृदर्शनं कुरूत. उसके अनंतर माता पिताका दर्शन करो.

तौयथा ज्ञापयेतां तथा कुरूत.
व जैसी आज्ञा दे वैसा करो.
तौ युष्माकं हितमेव वदेताम्.
वे तुम्हारा हित ही कहेंगे.
येन तौ प्रसन्नोस्यातां तथा कुरुत.
व जिस बातसे प्रसन्न होवें वह
कार्य्य करो.

ताभ्यां सह कदापि शठता न

उन लोगोंके साथ कभी दुःष्टता न करो.

इदमेवोत्तम वालकानां लक्षणम् यही अच्छे बालकोका लक्षण है.

शीघ्रमेव पाठशालां गत्वा गुरुं प्रसादयतः

जल्दी पाठशालामें जाकर गुरुकी प्रसन्न करो.

गुरोरग्रे चापल्यं नकार्यम् . गुरूके सन्मुख चपलता नही करना सयदाज्ञापयति तत्सावणान तयाशृणुतं

श्रद्ध शास्त्रं अनंतपारं अस्ति। बहवः सन्ति।

व्याकरण शास्त्र अपार है. और आयुष्य थोडा है. विघ्न बहुत हैं। ततः इंसेर्यथा अम्बुमध्यात् क्षीरं गृह्यते तथा सारोपार्जने यतितव्यम्.

इस हेतुसे जैसे हंस जल मिश्रित दुग्धमें से दूध ही को लेखेता है वैसे ही मनुष्य ने सार वस्तूका उपार्जन करना.

अशाश्वतेन अनेन जीवितेन किम्. आशा रहित इस जीवन से क्या हो सकता है.

इतिकातराः वदन्ति नतु पंडिताः

ऐसा वाक्य कापुरुष उचारण करें हैं निक विद्वान छोक.

कोप्युपायोवक्तव्यः येनाहं विदुशांमध्ये आदरणीयःस्याम् कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे विद्वान् छोग मेरा आदर करें.

वहजो आज्ञादेवे उसको समाधान चित्तसे सुनो.

शिवेरुष्टे गुरू: स्त्राता गुरौरुष्टे नकश्चन.

भगर शिवकष्ट होजायतो मुख् बचा सकतेहैं परन्तु गुरुके रुख्ट होनेपर कोई नहीं बचासकता. तस्मात तं प्रसादयत.

तस्मात् तं प्रसादयतः

इस वास्ते उसको प्रसन्न करो.

तथा आयुः स्वल्यं विद्याश्र

चैत्र शुक्क पौर्णिमायां चित्रा नश्चत्रंभवति अनेन चैत्रोउच्यते. चैत्र शुक्क पौर्णिमाको चित्रानक्षत्र रहता है इसी से वह चैत्र कहाता है. तथैव विषाखा नक्षत्रं वैषाख शुक्क पौर्णिमायां भवति तेनसबै शाखोच्यते.

उसी प्रकार से विशाखा नक्षत्र वैशाखी पौर्णिमाको होनेसे वह वैशाख कहाता है.

ज्येष्ठायुक्ता पौणिमासी यदाभवतिसज्येष्ठः

ज्येष्ठानक्षत्र युक्त पौर्णिमा जब होय तब वह ज्येष्ठ मास कहाता है.

आषाढ शुक्त पौर्णिमायां पूर्वाषाढः प्रवर्तते.

भाषाडी पौर्णिमाको पूर्वाषाडा नक्षत्र रहता है.

श्रवणर्भयुतायां पौर्णिमायां श्रावणः

अवण युक्त पौणिमा होनेसे आवण कहाता है.

यदा पूर्व भाद्रपदर्भ पौर्णिमायां याति तदैव भाद्रपदः

जब पूर्व भाद्रपद नक्षत्र पुनवासीको आता है तभी भाद्रपद कहाता है.

रोगस्य वृद्धेः पूर्वमेव भैशज्य मुचितम्.

बीमारी के बढ़ने के पूर्व ही औषध करना उचित है.

विप्रैःसंध्यात्रये सर्वान्कर्मानपास्य पूर्वं संध्यादि कर्म कार्य्यम्

ब्राह्मणोंने तीनों काल सब कामों को छोडकर पहिले संध्यादि काम

यदि च शरीरं रोगग्रस्तंस्यात्ताहिंस्मरणादेव संध्याफल प्राप्तिः अगर जो शरीर बीमार होय तो केवल ईश्वर स्मरण ही से संध्या फल मिलता है. काश्यां श्री केदारखंडे गौरीकुंड स्नानान्म्रुक्ति रितिश्रुतिः काशों में केदारखंडांतर्गत गौरीकुंड में स्नान करने से मुक्ति मिछवी हैं ऐसा वेद कहता है.

पयागे वेणी स्नानादिष्णुलोका वाण्तः
प्रयागराज में तृवेणी के स्नान से विष्णु लोक प्राप्त होता है.
विदुशां गजेन्द्राणां गुणिर्नृपतिश्च.
यांडित और हाथीयों के प्राहक गुणी जन और राजा ही होते हैं.
भूतनय दिवसे ऋणंन ग्राह्म.
मंगल के दिन कर्जा नहीं लेना.

नचबुधे देयं कदाचित्धनं कस्मैपि। बुधबार को किसी को भी रुपया नहीं देना

गोसेवायां वहवोलाभाः सन्ति विचारदृष्ट्या निरीक्ष्य माण-स्यनते अदृश्याः

गौके सेवा करने में बड़े गुण हैं विचार करके देखने वालों को वे अदृश्य नहीं हैं.

शुक्ते पूर्वार्ध अष्टमी पंचदश्योभेद्रा.
शुक्त पक्षमें पूर्वार्ध में अष्टमी और पौर्णिमाको भद्रा होती है.
शुक्ते एकादश्यां चतुर्थ्यापरार्ध भद्राभवति.
शक्त एकादशी और चतुर्थी को परार्धमें भद्रा होती है.
सूर्यसूनु दिवसे स्थिरप्रदंकार्य कर्तान्यम्.
शिनवार के दिन स्थिर कर्म करना चाहिये.

सुर्याधिष्ठित नक्षत्रादिनक्षंगण्यम्.

सूर्ध्य जिस नक्षत्र पर बैठा होय उस नक्षत्रसे दिननक्षत्रको गिननाः या संख्यास्यात् तम्मध्ये पण्नक्षत्र पर्यतं काष्ट्रकयो श्रुभदः जो संख्या होवे उसमें छ नक्षत्र पर्य्यत लकडी खरीदना अच्छा है.

तद्र्ध्वषण्नेष्टाः तेवज्यीः शुभेच्छुभिः

उसके बाद छ नक्षत्र खराब होते हैं उनको कल्याण की इच्छा करने वालों ने छोड देना.

पुनश्च चत्वाराः नक्षत्राः शुभफलहाः फिर चार नक्षत्र शुभ फल को देते हैं. तद्ध्ये गज परिमिताः अशुभाः इसके ऊपर आठ नक्षत्र नेष्ट होते है. अस्यानंतर मब्धि मिताः श्रेष्टाः

इसके बाद के चार नक्षत्र शुभ हैं.

बुद्धि मद्भिरेतद् विमृश्य काष्ठक्रयः कार्यः

बुद्धिमान मनुष्य ने इस बात को विचार करके लकडियां खरीद करना.

कुजे कस्यचिद्पि कर्मस्य समाप्तिः कर्तव्याचे त्काट्यी.

मंगल के दिन कोई काम समाप्त कर्ना होय तो करना.

गर्भाज्जनेविष्टमेवर्षे विपाणां व्रतवंधनं गदितम्

गर्भ से अथवा जन्म काल से आठवें वर्षमें ब्राह्मण को मौजी बंधन करना कहा है.

पांडवपरिमिते हे मौंजी बंधः शस्तेति पूर्वाचार्यमतम् । पांचवें वर्षमें जनेड करना ऐसा पूर्वाचार्य्य का मत है. ये ग्रंथकाराः स्तेएव पूर्वा चार्याः

जो विद्वान छोग प्रथकर्तो होगये उन्हीं को पूर्वीचार्थ्य ऐसा कहते हैं. उत्तरायण दक्षिणायणौ दिवा निश्यौदिविजानाम्.

उत्तरायण और दक्षिणायन ये क्रम से देशदिकों की दिन और रात है. त्वंयदा पण्यवीथिकायां गच्छासे तदाविषणौ केके पदार्थाः समायांतिद्रष्ट्रच्याः।

तुम नब बजार में जाते हो तब बाजार में कौन २ से पदार्थ आते है जनको देखना.

यदि च कर्णशक्कुलिका मिलिश्यितिचेत् मुद्रा चतुष्ट्यस्यानेयाः अगरजो गुझिया मिले तो चार पैसे की लेते आनाः

एकमासादृध्व गृहे त्वयानस्थेयं नतुवेतनं नदास्यामि. एक महीनके ऊपर घर पर मत रहना नहीं तो तनखाइ नहीं देंगे.

द्विमासाभ्यन्तरे तेन मत्सह सहस्र मुद्रायाः व्यवहारः कृतोस्तिः दो महीनेके भीतर उसने मरे साथ हजार रूपयोंका व्यवहार कियाहै.

अद्यययानिजमित्र गृहे वृन्ताकशाकाभुक्ता उतचक्वथिकाः

आज मैंने अपने मित्रके घर वैंगनकी शाक और कढी खाया.

आक्विन शुक्ल पौर्णिमायां अक्विनी नक्षत्र त्वादाक्विनः स उच्यते

आदिवनी शुक्छ पौर्णिमाको अदिवनी नक्षत्रके रहनेसे वह आदिवन कहाता है.

कृत्तिका नक्षत्रं पौर्णमायां यदाभवति तदैव कार्तिकः कृतिका नक्षत्र जब पुनवासी को रहेगा तभी कार्तिक कहावेगा.

पुष्यर्भयुता पोणिमा पौषे भवति. युष्य नक्षत्रसे युक्त पुनवासी पूस में होती है. माघमासे सितेपक्षे पोर्णिमायां मघानक्षत्रं भवति तेन स माधः माघ शुक्ल पौर्णिमाको मधा नक्षत्र के होने से माध कहाता है. पूर्वफल्गुनीयुक्ता पौर्णिमा फाल्गुने भवति. पूर्व फल्गुनी नामक नक्षत्रसे युक्त पौर्णिमा फाल्गुन मासकी होती है. ऐश्वर्यःस्य विशूषणं किं सुजनता. धनवान् मनुष्यका भूषण क्या है सुजनपन. शूरतायाः भूषणं वाङ्निरोधः श्रूरत्वका भूषण मीठी जवान है. स्वधर्मानुष्टानेन यशःकीर्तिलक्ष्मींच विंदति. अपने धर्मानुष्टानसे यश कीर्ति और लक्ष्मीको प्राप्त होता है. यूयं शास्त्राभ्यासे सुदक्षाः भवतः आपळाग शास्त्रके अभ्यास कर्नेमें दत्तिचत्त होवोः विद्या परिश्रमेन सिध्यति नतु द्रव्येण. विद्या मिहनत कर्नेसे आती है न कि द्रव्यके एकठा करने से. हार्दिकी वार्ता कस्यापि पुरतो न प्रवदितच्या. अपने हृदयकी बात को किसीके आगे न कहे. कृष्णपक्षे अन्त्यार्थेस्यानृतीया दशम्योभेद्रा. कृष्ण पक्ष में तृतीया और दशमीको अन्तय अर्थमें भद्रा होंती है. तथैव कृष्णसप्तमी त्रयोदश्योः पूर्वेभागे भद्रा भवति। उसी तरह सप्तमी और त्रयोदशी को पूर्वभाग में भद्रा होती है.

क्षत्रियाणां मौंजीशष्टे तथा एकादशेगभीज्जनेवी.

शित्रयोंकी जनेऊ छठे अथवा ग्यारवे बरस कर्ना ये भी वर्ष गर्भसे वा जनमसे गिनना.

वैक्यानां व्रतवंधः अष्ठमेवा द्वादन्नेगभीज्जनेवी.

वैश्योंकी जनेक आठवें अथवा बारहवें बरस कर्ना ये भी वर्ष गर्भसे वा जन्मसे गिनना.

च्युत्तरा रोहिणी भास्करः स्थिरेति ज्यौतिषे प्रदिष्टम्

तीनों उत्तारा और रोहिणी और रिवबार ये स्थिर संज्ञक हैं ऐसा ज्योतिष शास्त्र में कहा है-

अस्ति दाक्षिणात्ये कंचनपुरंनाम नगरम्.

दक्षिणात्य देशमें कंचनपुर नामक नगर है.

तस्यां चंदनदासनामा वणिग्महाथनो निवसतिः

उसमें चंदनदास नामका बड़ा धनवान् एक बनिया रहता था.

तेन वार्धक्ये कामातुर चेतसा मकर केतोर्विजय वैजयंतीव यौवनवतीभार्या परिणीताः

उसने बुढापेमें कामातुरचित्त होकर कामदेवके विजय वैजयंतिके सदृश एक सुन्द्रीसे विवाह किया.

घृतकुंभ समानारी तप्ताङ्गारसमः पुमान्.

घीके बरतनके सहश नारी होती है और लाल अङ्गारेके सहश पुरुष है.

मम प्रिया रक्षावली किरणक बुरेपर्यङ्के नित्यं स्वपतीति मन्मित्रेणोक्तम्

हररोज रातको मेरी प्यारी रत्नजदित पढंगपर सोती है एसा मेरे ामञ्जल कहा.

गुर्जरदेशे पायशो धनिनो वसंति.

गुजरातमें प्रायः धनीलोग रहते हैं.

बदिच मद्रचनेनिष्ठा तवचेत् एनांत्यज

अगर जो तुमको मेरे वचनपर निष्ठा होय तो इसको त्याम करो.

नत तव महानपकीर्तिभविष्यति. नहीं तो तुम्हारी बड़ी अपकीर्ति होगी.

दुःसंगात् हीयतेमतिः महतामपि.

बुरेकी संगतमे बुद्धिका हास होजाता है बड़े छोगोंका भी.

प्रायः खलाः मिष्ट भाषिणो भवन्ति.

बहुत करके दुष्टलोग मिष्ट मोहक ऐसा बचन कहते हैं.

जिह्नया रसान् जिघन् सतिष्ठति.

जबानसे रसोंका चीखते वह खड़ा है.

मद्गृहे आगच्छ अहं त्वां एकं पुस्तकं दास्यामि.

मेरे घर आना हम तुमको एक किताब देंगे.

गुरु शुक्रौ यत्छास्रं जानंति तत्छास्रं स्त्रियः स्त्रभावतो एव

शुक्राचार्य्य और वृहस्पति जिस शास्त्रको जानते हैं, उस शास्त्रको श्चियां छोग स्वभावसे ही समझ लेती हैं.

सा लीलावती वणिकपुत्रेणसह चुम्बितवती गयादृष्टा. इस लीलाबतीको बनियेके लड़ केके साथ मुखचुम्बन करते मैने देखाना. काम क्रोबादयो षड्रिपवाः दमनीयाः

काम क्रोधादि छओं शत्रुओंका दमन करना.

स्त्रीणां विश्वासः कदापि न कर्तव्यः

श्चियोंका विश्वास कभी न करे.

रामः सानुजो वाटिकायां रमते.

राम छोटे भाईके साथ बगीचेमें रममाण होते हैं.

मेघाः शीतलजलं वर्षन्यनेन शीतमधिक मुद्भवति.

मेघ ठंढ़ा पानी बरसते हैं इस हेतुसे जाड़ा अधिक पैदा होता है.

कर्णधारः समागतः तमामंत्रयः

मलाह आया उसको बुलाओ.

स्वाती पुनर्वे अवण धनिष्ठा शततारक नक्षत्रं सोमवासरश्रर संज्ञकाः

अवण धनिष्ठा शततारक स्वाती पुनर्वसु और सोमवार ये सब चर संज्ञक कहाते हैं.

वूर्वात्रयं भरणी मधा कुनो उप्र संज्ञकाः

तीनों पूर्वा भरणी मघा और मंगल ये उपसंज्ञक कहाते हैं.

विशाष्त्र कृतिका वुधश्र मिश्र संज्ञकाः

विशापा कृतिका और बुधवार ये मिश्र संज्ञक कहाते हैं.

इस्तान्वि पुष्प अभिजित् गुरुश्र क्षिपसंज्ञकाः

इस्त अधिनी पुष्प अभिजित् और गुरुवार ये क्षिप्र संज्ञक कहाते हैं.

मीन मेष राशि गते सूर्ये वसंत ऋतुः

मीन मेष राशिक सूर्यमें यमन्तऋतु होता है.

द्यमे मिथुने ग्रीष्मोऋतुर्भवति. वृष और मिथुनके संकातिमें शीष्म ऋतु होता है. कर्क सिंहयोः वर्षा ऋतुः ज्ञेयः कर्क सिंहकी संक्रांतिमें वर्षाऋतु जानना. कन्यायांच तुलायांच शरद्ऋतु उदाहतः कन्या और तुला संक्रांतिमें शरद्ऋतु होता है. अछि कोदंडगते खौ हेमंतः नुश्चिक और धनकी संक्रांतिमें हेमंत होता है. मकर कुंभयोः शिशिरः पदिष्टः सकर और कुंभके सूर्यमें शिशिरऋतु होता है. द्विज देव भक्तिकुरू तव श्रेयो भविष्यति. ब्राह्मण और देवताओं की भक्तीकरो तुम्हारा कल्याण होगा. दुर्जनोपरस्यवांछति सदा पराभवः दुष्ट सर्वदा दूसरेका पराभव होना चाहता है. अस्ति मेवाडान्तर्गत प्रदेशे श्रीनाथोनाम देवः मेवाड़ नामक प्रदेशके अंतर्गत श्रीनाथनामक देव हैं. बत्सिन्निधौ एकलिंगाभिधो शिवः समुपतिष्ठति. उन्होंके पास एकलिंगनामक महादेवका मन्दिर है. विदुशांमोद मन्बिच्छन्दालनां बोध हेतवे ॥

विदुशांमोद मन्त्रिच्छन्य। छनां बोध हेतवे ॥ रचितं पुस्तकं चैतत्शीतोभवतु भाधवः॥ १॥

# नवीन संस्कृतप्रवेशिनी का शुद्धिपत्र।

ष्ट. सं.	पं.	शुद्धम्.	श्रम्बारमा
8	188	The second second	अशुद्धम्.
		युवाभ्या,	तुवाभ्याः 💮
1. 8 = 1	814	े श्वः आगच्छः	न्धाः आगच्छः
<b>? ? ? .</b> .	4.66	शुको द्वीयते 🔑	शुकांडायते.
. 8.8	<b>१</b> 0	खश्रुव्याः	श्वश्रूवका.
46	8.8	छोक.	चाक.
* <b>?</b> ?	3	हितकी.	हितीकी=
१३	9	हिमं.	हिम्.
188 " =	*\$	<b>স্টা</b> ।	क्कि.
24	<b>***</b>	निन्दंति.	निन्द्ति,
२५	4.88	भारिवन.	भादिवनी.
२६	8.6	उष्टा.	ंसुष्टा,
30	88	्वाळानां. 🦠	बाळनां.

## श्री भागव पुस्तकालयका संक्षिप्त सूचीपत्र।

नित्यंकर्म पद्धति. -111 एक्साद्ष्रशाद म्ल. 7 सटीक. -111 जानेक पद्धांत. シ तिथिनिणय. ا وت दशकम पद्धति. 1=1 शतम्आधिः 1-1 तथा. सा. टी. 1=1 पारवण. मृ भा है। =1 आशीच तिर्णयः समंत्रक बह शांति प्रयोग 🕕 🔰 श्रुतबोधः चीवीस गायत्री.

वहच्योतिषसारः भाः टी, जिल्द पाख्ता.

ठप्पदार 21=3 लग्नजातक, भा, टी, =1

लघुमंग्रह, भां, टा. 11-1

चमत्कार चिन्तागणी =) चालकोध सारावलीः

होहाचंक्र भा. टी.

हनमान ज्योतियचक सहित = ]!! पद्घीपनने कारिका भा,टी.-॥।

श्रीधनोध भा. टी.

लघपाराशरी भा, टी.

इन पुस्तकों के धातिरिक्त और भी अनेक पुस्तक विक्रयाय तयार हैं )॥ आने का टिकट भेजने से स्वीपत्र बढ़ा भेजा जा सकता है।

> प्रस्तक मिलने का पताः— मैनजर भागव पुस्तकालय,

> > बतारस सिटी।

#### INSORIBED

TO

DR. G. THIBAUT, PH. D.,

WITH FERLINGS OF GRATEFUL REGARD
FOR HIS CORDIAL SYMPATHIES
WITH THE CAUSE OF THE ADVANCEMENT OF
SANSKRIT STUDIES.



#### PREFACE TO THE FIRST EDITION.

--:0:--

An elementary work on Sanskrit grammar together with exercises for the use of the lower forms in English schools preparing for the Middle Class Examination in the United Provinces is a great desideratum. The present book has been prepared to meet this want. The chief difficulty hindering the progress of this work which has taken several months to plan and prepare was its adaptation to the capacities of the very young beginners of so complicated a system of grammar as that of the "language of the gods." That difficulty was intensified by my having to take into consideration the average capacities of the young pupils who read in the lower classes of our schools and the very low state of Sanskrit education here in comparison to that in the schools of Bombay and Bengal.

For reasons which it would be out of place to enumerate in this place, the vernacular (Hindi) and the classics of the Hindus of the United Provinces are in imminent danger of falling into total disuse in the English schools. The ever increasing preponderance of the number of candidates who take up Urdu and Persian in the Middle Class and higher examinations, over those who take up Hindi and Sanskrit, affords unmistakable signs of the approach of the doom of the people's secular and sacred language. The only gratifying ray of hope amidst this gloom of despondency is that the Head of the Department of Public Instruction and his learned coadjutor, the Superintendent of Sanskrit Studies, are both alive to the dangers that threaten Sanskrit and are willing at heart to restore the Hindu classics to their proper status in the Schools and Colleges.

The present undertaking is the outcome of an order issued by the Director of Public Instruction to introduce the study of Sanskrit in the lower forms preparing for the Middle Class Examination. It was necessary therefore to place before the young beginners, in their own vernacular, an elementary text containing as much of grammar and illustrative exercises as would enable them to understand their Middle Class Sanskrit Reader.

The preparation of an abridgment of Sanskrit grammar for young boys is not an easy task. The compiler must, on the one hand, avoid the temptation of entering too deeply into details which would make an excessive claim on the time and intelligence of the students. And, on the other hand, to reduce the bulk of the book, at the expense of thoroughness, would mar its general usefulness and create difficulties to the students by not supplying to them instructions on difficulties that crop up in every page of their Reader.

The language of the rules had also to be made as simple as possible, so as to suit the capacities of the average lad reading in the fifth class of an English school. And this has to be done for the sake of popularising the study of Sanskrit even at the risk of incurring the ill opinion of the old class of Pundits who will perhaps ridicule it as a vulgar innovation. To further adapt it to the use of boys of an English school, all the declensions of cases have not been presented before them at once lest they be frightened at the long array of forms to the like of which they have not before been used. Only the first and second class declensions (together with those of the vocative case which do not always differ from the first class) have been given in the first part of the work. The remainder will form their second year's course.

In the same way, only the sirvadhátuka conjugations, popularly known as the first four conjugations, have been embodied in lessons together with the nominal declensions, and to the end of each lesson a list of nominal bases and verbal roots have been appended with instructions to decline and conjugate them respectively.

Sentences illustrating the use of the case and conjugational forms that have been given in their lessons have also been added. The number of these sentences has been necessarily kept low as this part will form the course of study for one year only.

The rules of Sandhi have been given in footnotes (but not in small type) illustrating the practical application of Sandhi occurring in sentences at the end of each lesson. It is hoped that their study separately and incidentally as they may occur at intervals and not en masse will render it a less irksome task to master and remember them.

Altogether my own impression is that this attempt to prepare a kind of *Principia Sanskrit* in the vernacular of these Provinces will be attended with good results.







## सङ्केतों का विवरण

प० = एकवचन
द्वि० = द्विवचन
ब० = बहुवचन
संज्ञाशब्दोंके रूपोमें
प० = प्रथमा
सं० = सम्बोधन
द्विती० = द्वितीया
पुं० वा पुँ० = पुँ हिंग
स्त्री० = स्त्रीलिंग
नपुं० = नपुंसकिलंग

व० = वचन

इ० = इत्यादि

सं० = सन्धि

धातु ग्रोंके रूपोंमें

प्र० = प्रथम पुरुष

म० = मध्यम पुरुष

उ० = उत्तम पुरुष

परस्मै० = परस्मैपदी

वा परस्मैपद

ग्रात्मनेणद्

उभय० = उभयपदी

वा उभयपद

वर्त्त० = वर्त्तमानकाल

अन्वभूत = अन्यतनभूत

यथाखळ

### सूचना

१-यद्यपि ब्रादेश के खेलां में उचारण की सुगमता निमित्त सस्वर व्यञ्जन लिखित हैं तथापि वे स्वररहित ही स्वररहित व्यञ्जनों के स्थान में ब्रथवा स्वरों के स्थान में ब्रादेश होते हैं।

२-सिन्ध के नियमों के उदाहरणां का शिक्षक गद्यपद्यसंग्रह से संकलित करके विद्यार्थियोंका ग्रभ्यास के लिये सिखलावेंगे॥

### संस्कृत

## **ऋजु**ब्याकरगाम्

## भूमिका

हिन्दी व्याकरण से वर्णविचार श्रीर सन्धि के नियमादि कुछ जान छेनेके पीछे संस्कृत व्याकरणका श्रारम्भ पाठशालाश्रों की ऊपरी कक्षाश्रों में होता है। इस कारण इस संस्कृत के ऋजुव्याकरण नाम पुस्तक में उन श्रंशों का मुख्य रूप से विचार नहीं किया गया जिनकी विद्यार्थी हिन्दीव्याकरण में पढ़ चुके हैं॥

संस्कृतव्याकरण में पिहले ही सिन्ध पढ़ाई जाती है इस से बालकों के शिर पर अखरता बेम्म सा पड़ जाता है। वे उसे रुचि से नहीं सीख सकते और वैसा लाभ नहीं उठाते हैं। इसी बात के ध्यान से इस अंथ के आरम्भ में सिन्ध के नियम एक ज नहीं लिखे गये किन्तु अवसर अनुसार खान खान पर डाले गये हैं। प्रसंग से उन नियमों के अभ्यास करने में विद्यार्थियों को एक साथ अधिक अम न होगा वरन नियम सुख से सारण रहेंगे।

कुछ नायक संज्ञा ग्रीर क्रिया शब्दों के रूप दिखा कर वाक्यरचना के उदाहरण दिये गये हैं जिस से ग्रागे चलके छोटी छोटी संस्कृत पाठ्य पुस्तकें समभ में ग्राने लगें। शब्दों के रूप बनाने के नियमों का जानना बालकों का

कठिन है सो उनके लिये रूपों की घाष के कण्ठ कर लेना बस है। हाँ जब ऊपरकी कक्षा में वे जायेंगे तब नियमों की भी जान लेंगे॥

इस प्रथम भाग में संज्ञा ग्रीर सर्वनाम शब्दों के केवल प्रथमा, द्वितीया ग्रीर सम्बोधन के रूप दिये गये हैं। ग्रीर प्रत्येक गण के धातुरूप चुन चुन कर वर्त्तमानादि चार लकारों में दर्साये गये हैं॥

हीच बीच में बहुधा प्रचलित ग्रव्यय शब्द भी लिखे गये हैं। व्याकरण के ग्रीर २ ग्रंश इस पुस्तक के ग्रन्य भागी में रक्खे जाँयगे।

### संस्कृत

## **ऋजु**ब्याकरगाम्

### प्रथम भाग

#### ग्रन्थ का उपक्रम

संस्कृत व्याकरणमें वर्णमाला ग्रीर वर्णविभागका क्रम प्रायः वैसाही है जैसा कि हिन्दीमें सिखाया जाता है। यथा स्वर, व्यञ्जन, हस्व, दीर्घ, प्लुत, वर्गादिकांका भेद ग्रीर वर्णोंके उच्चारणस्थान इत्यादि॥

संस्कृतमें लिंग तीन हैं। हिन्दीमें देा ही माने जाते हैं परन्तु पुँ हिंग स्त्रीलिंगसे अधिक संस्कृतमें नपुंसकलिंग भी है॥

ग्रंगरेज़ीमें बहुत करके पुरुषवेषिक प्राणिवासक शब्द पुँक्षिंग, स्त्री-वेषिक प्राणिवासक शब्द स्त्रीलिंग, श्रीर श्रप्राणिवासक शब्द नपुंसकिलंग समझे जाते हैं। पर संस्कृतमें यह लिंगके पहचान का ढंग नहीं है। इस में तेर शब्दों के लिंग, शुद्ध व्यवहार श्रीर प्रत्ययों से जाने जाते हैं जो व्याकरण श्रीर केरिंग, बतलाये गये हैं॥

संस्कृतमें वचन तीन हैं। हिन्दी ग्रीर ग्रंगरेज़ी में केवल एकवचन ग्रीर

बहुवचन होते हैं परन्तु संस्कृतमें उनसे अधिक द्विवचन भी होता है जो दे। ब्यक्तियों का वेधि कराता है।

संस्कृतमें संशाशब्द के उत्तर प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, ग्रीर सप्तमी ये सात विभक्तियां लगती हैं जिनके चिह्न विसर्ग, ग्री इत्यादि हैं। उनमें से कानसी विभक्ति किस ग्रथमें ग्राती है इसका निरूपण स्थल २ पर किया जायेगा।

जिस संज्ञा राष्ट्र के अन्तर्में स्वर रहता है उसे स्वरान्त और जिसके अन्त में व्यञ्जन रहता है उसे व्यञ्जनान्त कहते हैं॥

अकारान्तादि कमसे विशेष सहज प्रचलित संज्ञा शब्दोंके श्रीर बीच २ में सर्वनाम शब्दों के रूप (ग्र) दिखाये जायेंगे॥

जैसे ग्रकारान्तादि विशेष्य शब्दों के रूप होते हैं वैसेही ग्रकारान्तादि विशेषण शब्दों के भी होते हैं। विशेष्य ग्रीर विशेषण शब्द समान ही लिंग, वचन ग्रीर विभक्ति के होते हैं॥

<sup>(</sup>श्र) इस प्रन्थ में जो संज्ञा शब्द दिखाये गये हैं उनमें जिस स्वरान्त श्रयवा व्यञ्ज-नान्त शब्दको न पात्रों तो समभो कि वैसा स्वरान्त वा व्यञ्जन।न्त शब्द विशेष सहज प्रचलित नहीं है ॥

#### प्रथम पाठ

#### संशा

### ग्रकारान्त पुँ ह्विंग बालक शब्द

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालकः	वालकी	बालकाः
सम्बोधनम् (ग्र)	हे बालक	बालका	बालकाः
द्वितीया	बालकस्	बालकी	बालकान्

प्रायः सब ग्रकारान्त पुँ छिंग राब्दोंके रूप बालक राब्द के समान होते हैं।। ग्रकारान्त नपुंसकिलंग पुस्तक राब्द

	Φo	द्धि०	ब०
प्र०	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
सं०	हे पुस्तक	पुस्तके	पुस्तकानि
द्विती०	पुस्तकम् (ग्रा)	पुस्तके	पुस्तकानि

प्रायः सब अकारान्त नपुंसकिलंग शब्दों के रूप पुस्तक शब्द के समान होते हैं॥

<sup>. (</sup>श्र) सम्बोधन श्रर्थमें प्रथमा विभक्ति लगती है। परन्तु उसके ए० व० में बहुधा रूप भेद होता है।

<sup>(</sup>त्र्या) नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रथमा विभक्ति में जैसे होते हैं वैसेही कमसे द्वितीया विभक्ति में भी होते हैं। यथा पुस्तक शब्द में देखते हो॥

### ग्राकारान्त स्त्रीलिङ्ग विद्या शब्द

	The state of the s					
	ОД	द्वि०	ब०			
प्र०	विद्या	विद्ये	विद्याः			
सं०	हे विद्ये	विद्ये	विद्याः			
द्विती॰	विद्याम्	विद्ये	विद्याः (ग्र)			

प्रायः श्राकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप विद्या शब्दके समान होते हैं। श्राकारान्त स्त्रीलिंग अम्बा (माता) शब्द के सं० के ए० व० में हे अम्ब ऐसा रूपभेद होता है।

तीनों छिङ्गों में समान सर्वनाम शब्द

	40		
		युष्मद् (तू)	
	Qo	द्वि०	ল০
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्विती०	त्वाम् १		युष्मान ो
	्रत्वा ∫	युवाम् वाम् }	वः ∫
	तीनेां लिङ्को	ं में समान सर्वनाम शब्द	F
	"	ग्रसाद् (मैं )	,
	ΦO	द्धि०	च०
प्र०	ग्रहम्	ग्रावाम्	वयम्
द्विती०	माम्	. ग्रावाम् )	ग्रसान् ]
	मा	्र ग्रावाम् ना	नः

युष्मद् इत्यादि सर्वनाम राब्दोंका प्रयोग सम्बोधन विभक्ति में नहीं पाया जाता है॥

<sup>(</sup>ऋ) स्त्रीलिङ्ग शब्दों की द्वितीया के बहु॰ व॰ के ऋन्त में नकार कभी नहीं होता है। यथा विद्या इत्यादिके रूपीं में॥

## द्वितीय पाठ

#### क्रिया

जैसे बहुत से द्रव्यादिवाचक संज्ञा शब्द हैं वैसे बहुतसे क्रियावाचक शब्द हैं। उनके। संस्कृत में धातु कहते हैं॥

धातुके उत्तर, कालादि अर्थ बोध करानेके लिये कियाकी ति, ते, श्त्यादि विभक्तियाँ आती हैं। वेदो प्रकारकी होती हैं। एक परस्मैपद दूसरी आत्मनेपद ॥

कुछ धातु ऐसे हैं जिनके उत्तर केवल परस्मैपद विभक्तियाँ आती हैं इससे वे परस्मैपदी कहलाते हैं। जैसे पट इत्यादि। कुछ धातु ऐसे हैं जिन के उत्तर केवल आत्मनेपद विभक्तियाँ आती हैं इससे वे आत्मनेपदी कहे जाते हैं जैसे भाष इत्यादि। श्रीर कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनके उत्तर उक्त दोनों प्रकारकी विभक्तियाँ आती हैं इससे वे उभयपदी कहाते हैं। जैसे वप इत्यादि धातु॥

हिन्दीमें ते। छिंग के कारण क्रियाके रूपमें विकार होता है परन्तु संस्कृत में नहीं होता है॥

किया की विभक्तियों के समुदाय दश हैं जो भिन्न २ अर्थ बोध करानेके लिये लगाये जाते हैं। उनमें प्रत्येक समुदाय का नाम संस्कृतव्याकरण में "लकार" कहा जाता है॥

धातुपाठमें देा सहस्र के लगभग धातु हैं ग्रीर वे दश विभागेंमें विभक्त हैं। कारण इस विभागके करने का यह है कि वर्त्तमानकाल, ग्राह्मा, विधि मीर अनद्यतनभूत (अ) इन चार लकारों में धातुओं के रूप भिन्न २ रीतिसे बनते हैं। उक्त दश विभागों का नाम गण है॥

इस ग्रन्थके प्रथम भागमें उक्त वर्त्तमानादि चार लकारोंमें देशों गणां के चुन २ के ऐसे धातुग्रोंके सिद्ध रूप रक्खे गये हैं जिनके ग्रनुरूप बहुतेरे सहज प्रचलित धातुग्रों के रूप होते हैं।

गणके नायक धातुके उत्तर 'ब्रादि' शब्दको लगाके गणका नाम व्यवहार किया जाता है। जैसे भू + ब्रादि=भ्वादि यह एक गणका नाम है॥

दशों गणके नाम यथा भ्वादि, तुदादि, दिवादि, खुरादि, स्वादि, तनादि, क्रशादि, रुधादि, ग्रदादि ग्रीर हादि॥

दशों गणेंके धातुग्रोंके ग्रभी वे रूप लिखे जाते हैं जिनका कर्ता प्रथमा भार कर्म द्वितीया विभक्ति पाता है ॥

<sup>(</sup> त्र ) त्रनदातनभूत उस काल के। कहते हैं जिसकी किया बे।लने से त्राठ पहर पहिले है। चुकी हे। त्रथवा जे। त्रासनभूत, वा पूर्णभूतका त्रार्थ देती है। ॥

### ऋजुव्याकरणम् ॥

### भ्वादिगणका उभयपदी धातु

वप् (बानाः)						
	परस्मैपद् <b>म</b>			9	गतमनेपदमें	. (
	वर्त्तमान ए	2			वर्त्तमान	
ए०	द्वि० '	ब्		ए०	द्धि०	ब॰
प्र॰ वपति	वपतः '	वपन्ति	স০	वंपते	वपेते	वंपन्ते
म॰ वपसि			म०	वंपसे	वपेथे	वपभ्वे
उ० वपामि	वपावः	वपामः	30	वपे	वपावहे	वपामहे
	ग्राह्मा त्रा	2			ग्राज्ञा	77
प्र॰ वपतु	वपताम्	वपन्तु	স০	वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्
म॰ वप	वपतम्	वपत	स०	वपस्व		
उ० वपानि	वपाव	वपाम	उ०	वपै		
	विधि टि	3.			विधि	
प्र॰ वपेत्	वपेताम्	वपेयुः	স০	वपेत	वपेयाताम्	वंपेरन्
म० वपेः	वपेतम्	वपेत	म०	वपेथाः	वपेयाथाम्	वपेश्वम्
ड० वपेयम्	चपेव	वपेम	30	वपेय ं	वपेवहि	वपेमहि
, , · · · · 30	नद्यतनभूत	तरु.		30	नद्यतनभूत	
प्र० ग्रवपत्	<b>अवपताम्</b>	ग्रवपन्	স৹	ग्रवपत	ग्रवपेताम्	ग्रवपन्त
म० अवपः	ग्रवपतंम्	ग्रवपत	म०	ग्रवपथाः	ग्रवपेथाम्	ग्रवपःवम्
उ० ग्रवपम्	ग्रवपाव	ग्रवपाम	उ०	ग्रवपे	ग्रवपावहि	अवपामहि

### वाक्यरचना

कुछ अकारान्त पुँ हिंग शब्द अध्य (पण्डित ), नर, शिष्य, पुत्र, श्रुगाल, कृषक, पवन, हस्त, पाद, ज्याच्न, गंज, कुक्कुर, मृग, ग्रंथ्य, रासभ (गर्दभ ), वृक्ष इत्यादि ॥

कुछ ग्राक्रारान्त नपुंसकलिंग शब्द

क्ष्रक, बीज, ग्रीषध, सत्य, सुख, दुःख, धन, वन, ज्ञान, रास्त्र, (१) शास्त्र, पत्र, वस्त्र, जल, अनृत, ( झूठ), सुख, नयन, मित्र, नक्षत्र, इत्यादि॥ कुछ ग्राकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

लता, वार्त्ता, धरा, (पृथ्वी ), माला, बाला, कन्या, भिक्षा, शिक्षा, बुभुक्षा ( भूख ), पिपासा ( प्यास ), गंगा, यमुना, इत्यादि ॥

(स्क) (१) किसी पदके बीच ऋ, ऋ, र, वा ष, इनमेंका कोई ग्रक्षर हा ग्रीर उसके ग्रनन्तर दन्त्य नकार ग्रावे ता उस (नकार) के स्थानमें मूर्द्धन्य एकार आदेश होता है। और यदि एक ही पदके बीच ऋ, ऋ, र, वाष इनके उत्तर कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग ग्रथवा य, व, ह वा अनुस्वार इनमेंसे एक वा अनेक आवें ग्रीर उनके अनन्तर दन्त्य नकार **ब्रावे तो भी उस (नकार) के स्थानमें मृद्ध**न्य णकार ब्रादेश होता है। जैसे शस्त्राणि इत्यादि रूपें में ॥

पदके अन्तके दन्त्य नकारके स्थानमें मूर्ड न्य एकार आदेश नहीं होता है जैसे नरान् इत्यादि रूपोंमें॥

त, थ, द, ध, वा प, भ इनके पूर्वमें इनसे संयुक्त दन्त्य नकारके स्थानमें मृद्ध न्य गाकार अदेश नहीं होता है। यथा प्रन्थ इत्यादिमें ॥

### भ्वादिगण के कुछ परस्मैपदी धातु जिनके रूप परस्मैपदर्में वप् धातु के समान होते हैं॥

पठ् (पढ़ना ), इस् (इँसना ), वद (बेळना ), पत् (गिरना ), वस् (बसना ), चळ (चळना ), फळ् (फळना ), वज् (चळना ), दह (दाह करना ), ज्वळ् (जळना ), त्यज् (छाड़ना ), रक्ष (रखना ), नम् (नमस्कार करना ), इत्यादि॥

### कुछ ग्रात्मनेपदी घातु जिनके रूप ग्रात्मने० में वप् घातु के समान होते हैं॥

लभ् (पाना ), सह (सहना ), सेव् (सेवना ),वन्द् (प्रणाम करना ), यत् (यत्न करना ), कम्प् (कांपना ), शिक्ष (सीखना ), बाध् (पीड़न करना वा सताना ), भाष् (बेालना ), इत्यादि ॥

### कुछ उभयपदी धातु जिनके रूप देानें। पदेांमें वप् धातु के समान होते हैं॥

पच् ( पकना वा पकाना ग्रथवा पचना ), याच् ( माँगना ), स्वत् ( स्वनना ), राज् ( विराजमान होना ), वह् ( बहना वा ढोना, ) इत्यादि ॥

### वाक्य (ग्र)

(संस्कृत) बालकः पुस्तकं (२) पठित ॥ फले पततः ॥ बुधाः सत्यं वदन्ति (३)॥ ग्रम्ब (ग्रा) त्वां वन्दे (३)॥ त्वमाषधं (४) सेवस्व॥ (हिन्दी)
देा लड़िकयाँ हँसती हैं॥
हे मित्र तू सत्य बेल ॥
मैं दुःख के। सहता हूँ। तू सह ॥
वेटी तुम विद्या सीखे।॥
सूर्य्य चमकता है॥

( अ ) संस्कृतसे हिन्दीमें श्रीर हिन्दीसे संस्कृतमें उल्या करने के लिये ॥

(सं०) (२) यदि कोई व्यञ्जन ब्रक्षर परे रहे ते। पदके ब्रन्त में मकारको ब्रन्तस्वार कर के भी पढ़ सकते हैं। यथा 'पुस्तकम् पठति' इसकी 'पुस्तकं पठति' कह के भी पढ़ सकते हैं॥

(सं०)(३) पद के मध्यमें स्पर्श वर्ण के पूर्वमें अनुस्वार कभी नहीं रहने पाता किन्तु जिस वर्गका अक्षर उस (अनुस्वार) के उत्तर हो उसी वर्ग का पञ्चम अक्षर उस (अनुस्वार) के खानमें आदेश होता है। जैसे 'वदन्ति' सदा ऐसा ही होगा, 'वदंति' ऐसा नहीं॥

(त्रा ) सम्बोधन पदके पहिले 'हे, शब्द रक्खा जाता है पर चांहे उसे न भी रक्खा

तो उसका ऋर्ष समभ ितया जाता है।।

(इ) मध्यम वा उत्तम पुरुषको कियाके साथ युष्मद् श्रथवा श्रस्मद् राब्दका प्रयोग जब नहीं किया जाता है तब वहां श्रपने मनसे वह समभ लिया जाता है॥ जैसे 'बन्दे' इस किया का कर्त्ता श्रहंपद श्रथ्याहार कर लिया जाता है॥

(सं०)(४) स्वररहित व्यञ्जन के अनन्तर जो अक्षर आता है उस अक्षर से उस स्वररहित व्यञ्जन के। मिला देते हैं। जैसे त्वम् + ग्रीषधम् =

त्वमौषधम् इत्यादि ॥

उक्त नियम में यदि किसी सन्धिकी प्राप्ति हो ते। उस सन्धि के। पहिले करके तब मिळा देते हैं ॥ संस्कृत

वयं वीजान्यवपामहि (५)॥ हे कृषका (६)यूयं वपेध्वम्॥ शिष्या ज्ञानं लभन्ते॥ हिन्दी

शिर कांपता है ॥ लड़की ग्रन्न रींधती है॥ भूख मुक्तको सताती है॥

(सं०) (५) हस्व वा दीर्घ इकार, उकार, अथवा ऋकार के अनन्तर कोई असवर्ध स्वर आवे ते। उस हस्व वा दीर्घ इकार, उकार, अथवा ऋकार के ख्यान में कम से यकार, वकार अथवा रकार आदेश होता है यथा वीजानि + अवपामहि = वीजान्यवपामहि इत्यादि॥

(सं०)(६) पद के अन्त में आकार के अनन्तर विसर्ग हो और उसके अनन्तर स्वर, किसी वर्गका तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम अथवा य, र, छ, ब, ह इनमें से कोई अक्षर आवे तो उस विसर्गका छोप हो जाता है और छोप हो जाने पीछे फिर कोई सन्धि प्राप्त हो तौ भी वह नहीं होती है। यथा (६) से अंकित वाक्य में कृषकाः + यूयम् = कृषका यूयम् इत्यादि॥

### तृतीय पाठ ॥

#### संज्ञा

### हस्व इकारान्त शब्द

पुं॰ कवि				पुं॰ स	ाखि ( सखा	)	
	ए०	द्धिः	व०		Q0	द्वि ०	च०
प्र०	कविः	कवी	कवयः	प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
सं०	हे कवे	कवी	कवयः	संग	हे सखे	सस्रायौ	सखायः
ब्रिती	कविम्	कवी	कवीन्	द्विती०	सखायम	र् सखायौ	सस्रीन्
				1			

प्रायः हस्य इकारान्त पुंछिंग शब्दों के रूप किय शब्द के समान होते हैं। सिख शब्दके कुछ रूप इकारान्त शब्दों के रूपोंसे भिन्न होते हैं। सो ऊपर दिखा दिये हैं॥

हस्य इकारान्त स्त्रीलिंग स्तुति इत्यादि शब्दों के भी रूप कविशब्द के समान होते हैं। केवल द्वितीया का बहुव० स्तुतीः इत्यादि ऐसा होता है॥ हस्य इकारान्त नपुं०लिंग शब्द

### वारि (जल)

	ए०	द्वि०	व०
স০	वारि	वारिणी	वारीिख
सं॰	हे वारि, } हे वारे ∫	वारिणी	वारीिख
द्विती॰	वारि	वारिगी	वारीणि

हस्य इकारान्त नपुं०िलंग राब्दों के रूप वारि राब्द के समान होते हैं।

### ऋजुव्याकरणम् ॥

### दीर्घ ईकारान्त शब्द

स्त्री० नदी			ন্ধ্ৰী০ শ্বী				
	Q0	द्धि०	ब॰		Qο	द्धि ०	ब्
No	नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०	श्रीः	श्रिया	श्रियः
सं०	हे निद्	नद्यौ	नद्यः	सं०	हे श्रीः	श्रिया	श्रियः
द्विती	नदीम्	नद्यौ	नदीः	द्विती०	श्रियम्	श्चिया	श्रियः

#### स्त्री॰ स्त्रो

	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	स्रो	स्त्रिया	स्त्रियः
सं०	हे स्त्रि	स्त्रिया	स्त्रियः
द्धि०	स्त्रियम्	स्त्रिया	ह्मियः }
	स्त्रीम्		स्त्रीः

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी शब्द के समान होते हैं। लक्ष्मी शब्द की प्रथमा के एक ब॰ में लक्ष्मीः ऐसा रूप भेद होता है।

दोष रूप नदी के समान होते हैं॥

श्री इत्यादि शब्दों के ग्रीर स्त्री शब्द के रूप में जा कुछ भेद होता है से। दिखा दिया। पुंछिंग सुधी इत्यादि शब्दों के रूप श्री शब्द के समान होते हैं॥

## चतुर्थ पाठ

### क्रिया

### उभयपदी नी ( ले जाना वा पहुँचाना )

		_ ,	4 /		11 13 41	***	
		परस्मै०				ग्रात्मने०	
		वर्त्तमान				वर्त्तमान	
	ए०	द्वि०	ब॰		ए०	द्धि०	ब०
प्र०	नयति	नयतः	नयन्ति	प्र०	नयते	नयेते 🦷	नयन्ते
म०	नयसि	नयथः	नंयथ	Ho	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ०	नयामि	नयावः	नयामः	उ०	नये	नयावहे	नयामहे
		ग्राज्ञा				ग्राज्ञा	
प्रव	नयतु	नयताम्	नयन्तु	प्र०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म०	नय	नयतम्	नयत	Ho	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ०	नयानि	नयाव	नयाम		नयै		
		विधि				विधि	
प्रo	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	प्र०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
		नयेतम्		Ho	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्यम्
30	नयेयम्	नयेव	नयेम	उ०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि
	ड	<b>।</b> नद्यतनभूत			ब	<b>प्रनद्यतनभूत</b>	
प्र०	ग्रनयत्	अनयताम्	ग्रनयन्	प्र॰	अनयत	ग्रनयेताम्	ग्रनयन्त
म०	ग्रनयः	ग्रनयतम्	ग्रनयत	Ho	अनयथा	ग्रनयेथाम्	<b>अनय</b> ध्वम्
30	ग्रनयम्	ग्रनयाव '	अनयाम	उ०	ग्रनये	ग्रनयाचहि	ग्रनयामहि
	श्चि (	सहारा लेन	(1		ह्य	( पुकाराना	)
		o 3			पर	स्मै०	ग्रात्मने०
वत्त	मा० श्रय	रति 🐪	श्रयते	वर्त्त		यति	

नीके उभयपदके समान रूप हाते हैं।

परस्मैपदी गै ( गांन करना ) के गायित इ० ग्रीर ग्रात्मनेपदी त्रै ( त्राखः करना ) के त्रायते इ० रूप नीके समान छे जाग्रे। ॥

### वाक्यरचना

### संज्ञाशब्द

#### हस्य इकारान्त

पुं०-ग्रम्नि, कपि ( वानर ), ऋषि, मुनि, पति, ( ग्र ) भूपति इत्यादि ॥ स्त्री॰-लिपि ( वर्णमाला वा हस्ताक्षर ), वृत्ति ( जीविका ), गति, बुद्धि, रात्रि, विह्न ( लता ), इत्यादि ॥

### दीर्घ इकारान्त

स्त्री०-जननी, पुत्री, भगिनी, सखी, कुमारी इत्यादि ॥

#### धातु

परस्मै॰—जि (जीतना), ग्लै (खिन्न होना), ग्लै (मुरक्ताना) ग्रीर ध्यै (ध्यान करना), इत्यादि॥

<sup>(</sup>त्र ) इस भाग में जो रूपों के साहश्य वा भेद कहे जायेंगे उन्हें संज्ञा शब्दों की प्रथमा, द्वितीया श्रीर सम्बोधन इन तीन विभक्तियों में श्रीर धातुश्रों के वर्त्त मानादि चार खकारों में समम्मना चाहिये॥

#### वाक्य

### संस्कृत

दासी कुम्भं नदीं ( ग्र ) नयति ॥ संख्या ( ७ ) गीतं गायन्ति ॥ स्त्री पतिं श्रयते ॥ मुनिरीश्वरं ( ८ ) ध्यायति ॥ संखायः सायन्ते ॥

### हिन्दी

मा लड़की की पुकारती है। बेटी तू पाथी ले जा।। बहिन मुक्तको बचा॥ लता मुर्काती है॥ सखायो तुम मुसक्याते हो॥

- (श्र) संस्कृत में नी धातु के दे। कर्म होते हैं इसी हेतु से कुम्म श्रीर नदी देनि शब्दोंने द्वितीया विभक्ति पाई है।
- (सं०)(७) पदके अन्त में विसर्ग के पूर्व में यदि हस्व अकार हा और उसी विसर्ग के अनन्तर हस्व अकार, किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम अथवा य, र, छ, व, ह, इनमें से कोई अक्षर हा ता पूर्व का अकार और विसर्ग दोनों मिछ के एक ओकार के रूप में हा जाते हैं और जा अनन्तर हस्व अकार हा ता उसका छोप करके उस छोप का उपसा विह छिख दिया जाता है। यथा सख्यः + गायन्ति = सख्या गायन्ति, इ०। अष्यकः + अवपत् = इषकां उवपत्, इत्यादि।
- (सं०)(८) पद के अन्त में यदि विसर्ग के पूर्व हस्व वा दीर्घ अकार की छोड़ के रोष स्वर वर्णी में से कोई आवे और उसी विसर्ग के अनन्तर स्वर, किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम, किंवा य, र, छ, व, ह इनमें से कोई अक्षर आवे ते। उस विसर्ग के स्थान में रेफ आदेश है। यथा मुनिः + ईश्वरं = मुनिरीश्वरं इत्यादि॥

### पश्चम पाठ

### संशा हस्य उकारान्त शब्द

			4				
पुँह्धिंग शिशु				नपुंस	कळिङ्ग मधु		
	एe	द्धि०	ब॰		Q0	हि०	ब॰
प्र॰	<b>शिशुः</b>	<b>विाश्</b>	शिशवः	प्रव	मधु	मधुनी	मधूनि
	हे शिशो	रिश् रिश	हाशवः हाशवः	संवह	मधु }	मधुनी	मधूनि
<b>ग्छ</b> त	ो॰ शिशुम्	ારાજ્ય	शिशून्	द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि

हस्य उकारान्त पुँहिंग राब्दों के रूप शिशु राब्द के समान होते हैं। हस्य उकारान्त स्त्रीलिङ्ग थेनु इत्यादि राब्दों के भी रूप वैसे ही होते हैं परन्तु द्विती० के ब० व० में धेन्ः ऐसा रूप भेद होता है॥ हस्य उकारान्त नपुं० लिङ्ग शब्दों के रूप मधु राब्द के समान होते हैं॥

### दीर्घ ऊकारान्त शब्द

	स्त्री० वधू ( बहु )			स्रो	स्त्री॰ भू ( पृथ्वी )			
	ए०	द्धि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०		
Пo	वधूः	वध्वी	वध्वः	प्र० भूः	भुवौ	भुवः		
सं॰	हे वधु		वश्वः	सं० हे भूः	भुवौ	भुवः		
द्विर्त	ो० वधू	म् बध्वौ	ं वधूः	द्विती० भुवम्	भुवी	भुवः		

भू शब्द के रूप में जो भेद होता है सो ऊपर दिखा दिया है ॥ पुँक्षिंग प्रतिभू (जामिन्दार) इत्यादि शब्दों के रूप भू शब्द के समान होते हैं ॥

### किया

परस्मैपदी भू ( होना )				आत्मनेपदी प्लु ( पैांड़ना ) ·			
वर्त्तमान				वत्तमान			
	ए०	ड़ि॰'	ब॰		Qо	द्वि०	No.
শ্বত	भवति	भवतः	भंवन्ति	प्र०	प्रवते	<b>प्र</b> वेते	प्रवन्ते
्म ०	भवसि	भवथः	भवथ	Ho	प्रवसे	प्रवेथे	प्रवध्ये
'उ०	भवामि	भवावः	भवामः	उ०	प्रवे	प्रवावहे	प्रवामहे
		ग्राज्ञा				ग्राज्ञा	
্যত	भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्रव	प्रवताम्	प्रवेताम्	प्रवन्ताम्
म०	भव	भवतम्	भवत	म०	प्रवस्व	प्रवेथाम्	प्रवध्वम्
उ०	भवानि	भवाव	भवाम	उ०	प्रवै	प्रवावहै	प्रवामहै
विधि				विधि			
্যত	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र०	प्रवेत .	प्रवेयाताम्	प्रवेरन्
म०	भवेः	भवेतम्	भवेत			प्रवेयाथाम्	
30	भवेयम्	भवेव	भवेम		प्रवेय		
ग्रनद्यतनभूत			ग्रनद्यतनभूत				
oR.	ग्रभवत्	ग्रभवताम्	ग्रभवन्	ДO	ग्रप्रवत	ग्रप्लवेताम्	ग्रप्लवन्त
Ho	ग्रभवः	अभवतम्	ग्रभवत	म०	ग्रप्लवधाः	ग्रप्नवेथाम्	ग्रप्लवध्वम्
তত	ग्रभवम्	ग्रभवाव	ग्रभवाम	उ०	ग्रप्नवे	ग्रप्नवावहि	अप्रवामि

### वाक्यरचना

संज्ञा शब्द हस्य उकारान्त

पुँ०—प्रभु, विधु ( चन्द्र ), बन्धु, साधु, रात्रु, इत्यादि ॥ स्त्री॰—रेगु ( धूलि ), तनु, रज्जु ( रस्सी ), इत्यादि ॥ नपुं०-वस्तु, जतु ( लाह ), इत्यादि ॥ दीर्घ ऊकारान्त

पुं०-स्वयम्भू ( ब्रह्मा ) इत्यादि ॥ स्त्री॰—तनू ( शरीर ), खज्जू ( खाज ), ददू ( दाद ), इत्यादि॥ धातु **ग्रात्मने**॰

परस्मै० दु (दौड़ना ), स्रु (चूके बहना ) 🕴 च्यु (पतन होना ) ॥

वाक्य

संस्कृत

विधू (९) राजते ॥ नद्यः सागरं ( ग्र ) व्रजन्ति । साधुरपराधान् क्षमते ॥ मण्डूकाः प्रवंते ॥ शत्रः प्रभुरभवत् ॥

हिन्दीं मुमको दाद सताती है॥ गायें दाड़ती हैं॥ दे। लड़के पैांड़ते थे॥ बहू रसरी का छे जाती है॥ हे प्रभु तू मुभको बचा ॥

(सं०) (९) यदि विसर्ग के परे रेफ रहे तो विसर्ग का लोप होता है ग्रीर उस विसर्ग के पूर्वका हस्व दीर्घ हो जाता है। यथा-विधुः + राजते = विधूराजते इत्यादि ॥

( ऋ ) गत्यर्थक धातु संस्कृत में सकर्मिक भी होते हैं इसी हेतु से सागर शब्द ने द्वितीया विभक्ति पाई है ॥

#### षष्ठ पाठ

संशा

हस्व

पुँ • दातृ ( दाता ) पुँ॰ पितृ ( पिता ) द्वि० Q0 द्धि ० Q0 ৰ০ प्र॰ दाता दातारी दातारः पिता पितरी पितरः No. हे दातः दातारी दातारः सं० हे पिता पितरी पितरः सं० ंद्विती॰ दातारम् दातारी दातृन् द्विती॰ पितरम् पितरी पितृन्

हस्व ऋकारान्त पुँ लिङ्ग रान्दों के रूप बहुधा दात रान्द के समान होते हैं। पितृ रान्द के रूपों में जो भेद हैं सो ऊपर दिखा दिये। भ्रातृ (भाई), जामातृ (दामाद) ग्रादि रान्दों के रूप पितृरान्द के समान होते हैं॥

हस्व ऋकारान्त स्त्रीलिंग भातृ ग्रादि शब्दों के रूप पितृशब्द के समान होते हैं परन्तु द्वितीया के ब० व० में मातृः पेसा रूपभेद होता है ॥ ग्रीर स्वस् (बहिन) शब्द के रूप दातृशब्द के समान होते हैं। पर द्वितीया के ब० व० में स्वसृः पेसा रूपभेद होता है ॥

#### क्रिया

उभयपदी ह (हरना ) धातु के रूप परस्मै० व हरति इ० वपति इ० के समान, ग्रीर ग्रात्मने० में हरते वपते इ० के समान क्रम से होते हैं ॥

### परस्मैपदी कृष् ( खींचना वा हल जातना )

वर्त्त० ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत प्र० ए० कर्षति कर्षतु कर्षेत् ग्रकर्षत्

### ग्रात्मनेपदी वृत् ( वर्त्तना वा होना )

वर्त्त० ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत प्र० ए० वर्त्तने वर्त्तताम् वर्त्तेत ग्रवर्त्तत

पृथक् २ चारों छकारों में क्रम से वप् धातु के समान रूप होते हैं।

### वाक्यरचना

### संज्ञा शब्द

पुं०-कर्नु, भर्नु (स्वामी) इ०॥

स्त्री॰ दुहित (वेटी), ननान्ह (ननद) यातृ (देवरानी वा जिठानी)॥

#### धातु

परस्मै॰—स्मृ (सारण करना), सृ (चलना), तृ (पार होना वा तैरना), वृष् (बरसना), घृष् (घिसना), सृष् (रेंगना), इ॰ ॥ ग्रात्मने॰—वृध् (बढ़ना), इत्यादि॥

#### वाक्य

### संस्कृत

दातारा वर्धन्ताम् ॥ भ्रातरावावां (१०) यमजी (ग्र) दुहितरा मातरं स्मरन्ति ॥ स्वसा भ्रातन् वदति । हे भ्रातरः क्षेत्रं कषेत ॥ मेघा वादि वर्धन्तः रावग्रस्तीतां (११) हरति स्म (ग्रा) ॥

### हिन्दी

मनुष्य ईश्वर के। स्मरण करें॥ हे मा बहिनें मुक्तको खोंचती हैं॥ किसान खेत जातता है॥ दे। सांप रेंगते हैं॥ राम सागर के पार उतरे थे॥

(सं०) (१०) ऐकार वा ग्रीकार के परे यदि स्वर वर्ण रहे ते। ऐकार के स्थान में ग्राय् ग्रीर ग्रीकार के स्थान में ग्राव् होता है परन्तु प्रस्तुत सन्धि में पदान्त में स्थित ऐ वा ग्री के स्थान में ग्रा भी हे। सकता है किन्तु तब फिर सन्धि नहीं होती । यथा भ्रातरी + ग्रावाम् च्य्रातरावावां वा भ्रातरा ग्रावाम् इत्यादि ॥

( ऋ ) यद्यपि किया का प्रयोग नहीं किया गया है तथापि भवावः इस कियापदका बाध कर लेना चाहिये ॥

(सं०) (११) विसर्ग के परे यदि दा, ष, वा स, ग्रावे ते। विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है। ग्रथवा उस (विसर्ग) के स्थान में क्रम से दा, ष वा स, है। जाता है॥ यथा रावणः +सीतां =रावणः सीतां वा रावणस्सीताम्, इ०॥

(স্ব) वर्त्त मानकाल के साथ स्म श्रव्यय (शब्द ) लगाने से वह श्रनदातन श्रथवा परोत्त्वभूत कालका श्रर्थ देता है॥

### सप्तम पाठ

#### संका

ग्रोकारान्त शब्द भौकारान्त शब्द पुं॰ वा स्त्रो॰ गा ( गाय वा बैल ) स्त्री० ना (नाव) द्वि० Q0 ब द्धि० ₹0 ब॰ प्र० गीः गावै। गावः प्र० नैाः नावी नावः सं० हे गीः गावी गावः सं० हे नीः नावी नावः द्विती॰ गाम् गावा गाः द्वि॰ नावम् नावा नावः

### इति स्वरान्त संज्ञाराब्द

### किया

## परस्मैपदी रुह् ( ग्रंकुर उगना )

वर्ता । ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत रोहति राहतु DO QO . रोहेत् ग्ररोहत् ग्रात्मनेपदी रुच् ( चमकना वा ग्रच्छा लगना ) वर्त्तः विधि ग्रन० भूत आज्ञा राचते राचताम् राचेत ग्रराचत प्र Q0 पृथक् २ चारों लकारों में रूप ले जाग्री।

### वाक्यरचना

### संज्ञाशब्द

स्री०—द्यो ( ग्राकाश )॥

पुं०-ग्ला ( चन्द्र )॥

धातु

परस्मै०

शुच् ( शोक करना ) कुश् ( रोना वा चिल्लाना ) इ०॥ ग्रात्मने०

द्युत् (चमकना), मुद् (हर्षित हेाना) गुभ् ( शोभित हेाना ) इ०॥

वाक्य

संस्कृत

मात (१२) मीस ( ग्र ) शोचः । स्वसारी स्वस्थे वर्त्तेते ॥ हिन्दी

चांद शोभता है॥ दे। तारे चमक रहे हैं॥

(सं०) (१२) रेफ के खान में जो विसर्ग (ग्रर्थात् ऋकारान्त संज्ञा के सम्बोधन के एकवचन का किंवा ग्रन्थ किसी ऋकार के खान में ग्रादेश भया विसर्ग ग्रथवा पुनरादि शब्द का विसर्ग) होता है उसकी सिन्ध, सिन्ध के (७) ग्रंकके नियम के ग्रनुसार नहीं होती किन्तु उक्त विसर्ग के खान में फिरसे रेफ ही हो जाता है ग्रीर यदि रेफ परे रहे ते। सिन्ध के (९) ग्रंक के ग्रनुसार सिन्ध होती है। यथा मातः (मातर्) + मा = मातर्मा; पुनः (पुनेर) + रमते = पुनारमते इत्यादि॥

(श्र) निरोधवाचक श्रन्थय मा स्म शब्दों के साथ श्राने से श्रनग्रतनभूत लकार में धातु । के पूर्व श्रकार नहीं लगता है इस लिये मा स्म + श्रशोचः ऐसा रूप नहीं किन्तु भा स्म शोचः ऐसा रूप मया। मा स्म के लगाने से श्रनग्रतनभूत का श्रर्थ नहीं होता किन्तु श्राज्ञा वा विधि लकार का श्रर्थ होता है। यथा मातर्मा स्म शोचः—हे माता तु शेषक मत कर ॥

#### वाक्य

संस्कृत
कृषका वीजान्यवपन्त । ग्रंकुरा
रोहेयुः ( ग्र )॥
सिंहा गामकर्षत् । वत्सा ग्रद्रवन् ॥
मादस्व दुहितमीदस्व । भ्रातरी
धनानि लभन्ते ॥
नक्षत्राणि द्योतन्ते । द्यौः शोभते ॥

हिन्दी दे। अंकुर उगते हैं॥ हे लड़के। शोक मत करो॥ हर्ष करो॥ दे। नावें बहती हैं॥

## अष्टम पाठ

संज्ञा सर्वनाम राज्द

तद् (वह )					पतत् ( यह )				
	g	हिंग			पु	हिंग			
	Qο	द्धि०	ब॰		ए०	द्धि०	च०		
yo.	सः	तै।	ते	प्र०	एषः	पता	पते		
द्विती	तम्	तैा	तान्	द्विती०	पतम्	एतै।	पतान्		
	रु	ब्रीलिंग			<b>&amp;</b>	गि <b>छिंग</b>			
प्र॰	सा	ते	ताः	प्र०	एषा	पते	पताः		
द्विती	ताम्	ते	ताः	द्विती०	एताम्	पते	पताः		
	नपुं	सकछिंग			नपुंर	तक <b>लिंग</b>			
प्र०	तत्	ते	तानि	प्र०	एतत्	एते	पतानि		
द्विती		ते	तानि	द्विती०	पतत्	एते	पतानि		

(ख्र) सम्मावना ख्रीर शक्ति अर्थमें भी विधि लकार का प्रयोग होता है ॥

# किया

# परस्मैपदी

हा	त (देखना	)	गम् ( जाना )				
वर्त्तमान			वर्त्तमान्				
ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्धि०	ब॰		
प्र॰ पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	प्र॰ गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति		
म० पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	म० गच्छास	गच्छथः	गच्छथ		
उ० पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः	उ० गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः		
	ग्राज्ञा			ग्राज्ञा			
प्र॰ पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु	प्र॰ गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु		
म॰ पश्य	पश्यतम्	पश्यत	<b>म०</b> गच्छ	गच्छतम्	गच्छत		
उ० पश्यानि	पश्याव	पश्याम	उ० गच्छानि				
	विधि	•		विधि			
प्र॰ पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः	प्र० गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः		
म० पश्येः	पश्येतम्	पश्येत	म० गच्छेः				
उ० पश्येयम्	पश्येव	पश्येम	उ० गच्छेयम्				
ग्र	नद्यतनभूत		=	ग्रनद्यतनभूत			
प्र॰ ग्रपश्यत्	ग्रपश्यताम	् ग्रपश्यन्	प्र० ग्रमच्छत्	अगच्छताम	अगच्छन्		
म० ग्रपश्यः	ग्रपश्यतम	ग् अपश्यत	म० ग्रगच्छः	ग्रगच्छतम्	ग्रगच्छत		
उ० अपश्यम्	ग्रपश्याव	अपश्याम	उ० ग्रगच्छम्	ग्रगच्छाव	अगच्छाम		

वर्त मान ग्राज्ञा विधि अनद्यतनभूत प्र० ए० पा (पीना) पिबति अपिवत् पिबतु पिबेत् तिष्ठति ग्रतिष्ठत् तिष्ठतु तिष्ठेत (ठहरना) प्र० ए० स्था जिन्नेत् ग्रजिघत् (सू घना) जिघ्रति जिघ्रतु प्र० ए० हा (फूंकना) धमति धमेत् धमतु ग्रधमत् प्र० ए० ध्मा द्रशति (डँसना) दशेव दशतु अद्रात् प्र० ए० दन्श (दुःखपाना) सीदति सीदतु सोदेत् ग्रसीदत प्र० ए० सद

यों क्रम से पृथक् २ चारों लकारों में रूप ले जागा।

## वाक्यरचना

कुछ सहज प्रचलित ग्रव्यय (ग्र) शब्द ॥

च (ग्रीर), वा, न, तु, किन्तु परन्तु (ते।), पुनर् (फिर), बहिंस् (बाहिर), (१३) ग्रपि (भी)॥

कुछ परस्मै॰ धातु जिनके रूप सीदित इ॰ की नाई होते हैं—जीव (जीना), कीड (खेलना), मील् ( आंखें मूँदिनी ) इ॰ ॥

# इति भ्वादिगणके धातु

( ऋ ) ऋव्यय शब्दों के उत्तर विभक्तियां नहीं लगतीं । तथापि वे पद कहे जाते हैं ।

(सं०) (१३) पदान्त में स्थित रेफ वा सकार के स्थान में विसर्ग आदेश होता है। यथा पुनर्=पुनः। बहिस्=बहिः, इत्यादि॥

#### वाक्य

## संस्कृत

स पश्यति । एष क्रोडति (१४)॥
नाहन्तिष्ठामि । त्वमपि गृहं गच्छ॥
ते पुष्पाण्यजिझन् वयं मध्यपिबाम॥
पुत्रा जीवन्तु । विद्यां धनब्च
(१५) लभन्ताम्॥
सर्पो बालकमदशत् । जीवति
तु सः॥

स शंखं धमति॥

## हिन्दी

आग की फूं की। मैं भी दूध पीऊं॥ वह बालक मानी देखता और हर्ष करता ॥ गाय खेत की गई थी। उसकी सांप ने डँसा॥ देखी लड़के पाठशाला की जाते हैं॥ ये लड़कियाँ खेलती हैं। वे ता पढ़ती हैं॥ उस फूल की सूँघा। उन पेड़ी की

(सं०) (१४) सः वा एषः के परे हस्य ग्रकार के। छोड़ के दूसरा कोई ग्रक्षर ग्रावे ते। सः वा एषः के विसर्ग का छे। हो जाता है।। यथा सः + पश्यति = स पश्यति। एषः + क्रीडित = एष क्रीडित इत्यादि॥

देखा ॥

(सं०) (१५) पद के अन्त में स्थित अनुस्वार के स्थान में उसी वर्गका पञ्चम अक्षर भी आदेश है। सकता है जिस वर्ग का (स्पर्श) अक्षर उस अनुस्वार के अनन्तर है। यथा धनं + च = धनञ्च वा धनं च इ०॥

## नवम पाठ

संशा

चकारान्त शब्द

स्रो॰ त्वच् (त्वचां)

प० द्वि० ब० प्र० त्वक् त्वची त्वचः सं० हे त्वक् त्वची त्वचः द्विती० त्वचम् त्वची त्वचः

प्रायः चकारान्त पुं० अथवा स्त्री० शब्दों के रूपत्वच् शब्द के समान होते हैं। जकारान्त शब्द

पुं० विशेष (बिनया)
प्र० द्वि० व०
प्र० द्वि० विश्वास

# नपुं० ग्रस्ज्० ( लाह् )

	ए०	窟。	ब०
प्र॰	ग्रहक्	त्रस्जी	ग्रसृष्टित
सं०	हे ग्रस्क्	ग्रस्जी	ग्रस्कित
द्वि०	ग्रस्क	ग्रस्जी	ग्रसृञ्जि

# किया

तुदादि गण डभयपदी कृष् ( खोंचना वा हळ जातना )

परस्मै०					ग्रात्मने०	
	वत्तमान				वर्त्तमान	
Ųο	द्धि०	ब॰		do	द्वि०	व०
प्र॰ कृषति	कृषतः	कृषन्ति	प्र०	कृषते	कृषेते	कृषन्ते
म० क्रषसि	कृषथः	कृषथ	म०	कृषसे	कृषेथे	कृषध्वे
उ० कृषामि	कुषावः	कृषामः	उ०	कुषे	कुषावहे	कृषामहे
	ग्राज्ञा				ग्राज्ञा	
प्र॰ कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु	प्र०	कुषताम्	कुषेताम्	कुषन्ताम्
म० कृष	कृषतम्	कृषत	म०	कृषस्व	कुषेथाम्	कुषध्वम्
उ० कृषाणि	कृषाव	कुषाम	30	कृषे	कृषावहै	कृषामहै
-	विधि				विधि	
प्र॰ कृषेत्	कृषेताम्	कुषेयुः	प्र०	कृषेत	कृषेयाताम	म् कृषेरन्
	कुषेतम्	कृषेत	म०	कृषेथाः	कुषेयाथा	म् कृषेध्वम्
उ० कृषेयम्	कृषेव	कुषेम	उ०	कृषेय	कृषेवहि	कुषेमहि
33	नद्यतनभूत	-		ग्र	<b>च्यतनभू</b> त	
प्र० अकृषत्	ग्रकृषताम्	ग्रकुषन्	प्र०	ग्रकुषत	ग्रकृषेताम	ग् ग्रकृषन्त
म० ग्रकुषः	ग्रकृषतम्	ग्रकृषत	म०	ग्रकृषथाः	ग्रकृषेथाम्	अकृषध्वम्
उ० ग्रकुषम्	ग्रकृषाव,	ग्रकुषाम	30	ग्रकृषे	ग्रकृषावहि	ग्रकृषामहि

परस्मै०	ग्रात्मने०	पर	स्मै०	ग्र	त्मने०
उभय० तुद् (कोंचना)		मज (	(डूबना)	लज	त ( लजाना )
प्र० ए० वर्त्त० तुद्ति	तुद्ते	मजाति			<b>ब</b> ते
प्र० ए० ग्राज्ञा तुद्तु	तुदताम्	मज्जत्	3	छड	ताम्
प्र॰ प॰ विधि तुदेत्		मङ्जे	त्		जेत
प्र० ए० अ०भू० अतुदत्	ग्रतुदत	अभज	ात्	ग्रल	ज्जत
		वर्त्तमान	ग्राज्ञा	विधि	<b>ग्र</b> नद्यतनभूत
परस्मै० इष् (इच्छा करर्न	ो प्र०ए०	इच्छति	इच्छतु	इच्छेत्	पेच्छत् (ग्र)
परस्मै॰ प्रच्छ् ( पूछना	) স০ ए०	पृच्छति	पृच्छतु	पृच्छेत्	ग्रपृच्छत्
		मुञ्चति	मुञ्चतु	मुञ्चेत	अमञ्चत
उभय० मुच् ( छोड़ना )	у о чо -	मुञ्चते	मुञ्चता	म् मुञ्चे	त ग्रमुञ्चत
उभय० सिच् (सींचना)					

परस्मै॰ कृत् (काटना) के कृन्तित इ॰, उभय लिए (लीपना) के लिम्पति, लिम्पते इ॰ रूप मुञ्चित मुञ्चते इत्यादि के समान होते हैं॥

<sup>(</sup>ऋ) अनदातनभूत लकार में धातु के आदि में खित इ, ई वा ए के खान में ऐ और उ का वा ओ के खान में औ आदेश होता है। यथा इष्⇒ ऐच्छत् इ०। परन्तु मा स्म इन अव्यय शब्दों के साथ आने से यह नियम नहीं होता है। किन्तु धातु के आदि में खित अन्तर ज्यों का त्यों रहता है। यथा मा स्म इच्छत इ०॥

## वाक्यरचना

संज्ञा राज्द चकारान्त

पुं॰ जलमुच् ( मेघ )इ॰। स्त्री रुच् (कान्ति ), शुच् ( शोक ) इत्यादि।

## जकारान्त

पुँ० ऋत्विज् ( याश्चिक ), भिषज् ( वैद्य ) इ० । स्त्रो० रुज् ( रोग) स्रज् ( माला ) इ० बनिज् के समान ॥

पुँ० विराज् ( विश्वरूप भगवान् ), विश्वस्ज् ( विश्वकर्ता ), परिवार् ( संन्यासी ) इ० सम्राज् के समान ॥

धातु

परस्मै॰ सुज् ( सुजना ), स्पृश् ( छूना ), हुज् ( अग्न करना ) इ॰ ॥

वाक्य

ं संस्कृत विश्वसङ् (१६) विश्वमस्जत् ॥ जलमुचा भुवं सिञ्चन्ति ॥ ्हिन्दी संन्यासी वनको जाता है ॥ मुभको मत छू॥

(सं०) (१६) पदान्तमें स्थित क के स्थान में ग, ट के स्थानमें इ ग्रीर त के स्थानमें द है। जाता है जब स्वर वा किसी वर्गका तृतीय, बतुर्थ पञ्चम अथवा य, र, ल, व, ह इनमें से कोई अक्षर परे रहे। यथा—विश् सुट् + विश्वं = विश्वसृङ्विश्वम्। भिषक् + श्रीषधम् = भिष्गीषधम् इत्यादि

#### वाक्य

संस्कृत
वधूर्वज्ञते । वाचञ्च न वद्ति ॥
विश्वविद्यान्य मुञ्च (१७)॥
एषा स्रक् शोभते ॥
खज् स्त्वचन्तुद्दि (१८)॥
पाषाणा मज्जित काष्ठन्तु प्रवते ॥
क्रम् मां (१९) हज्जित ॥
भिष्गीषधन्दिश्ति ॥

हिन्दी
मैं लजाता हूँ॥
वह फूल उतराता है। पर यह फल बुड़ता है॥
चक्रवर्ती राजाने पृथ्वीका जय कर लिया है॥

- (सं०) (१७) पदान्तमें श्थित क, ट, त, द, वा न इनमें से किसी
  ग्रक्षरके परे दा रहे ग्रीर उस दा के परे स्वर म, य, र, छ, ग्रथवा व इन
  मेंसे कोई ग्रक्षर है। तो उस दाके स्थानमें छ भी होता है। यथा विश्वक् म
  गुचम् = विश्वक् छुचम् वा विश्वक् ग्रुचम् इ०॥
- (सं०)(१८) विसर्गके अनन्तर च वा छ हो ते। शः, ट वा ठ हो ते। षः, त वा थ हे। ते। सः, उस विसर्ग के स्थान में आदेश हो, जाता है। यथा खर्जू: त्वचम् = खर्जू स्त्वचम् इ०॥
- (सं०) (१९) पदान्तमें स्थित कके स्थानमें ग वा छ, चके स्थानमें ज वा अ, ट के स्थानमें ड वा ए, त के स्थानमें द वा न ग्रीर प के स्थानमें ब वा म ग्रादेश होता है यदि न वा म परे हो। यथा रुक् + मां = रुग्मां वा रुङ्माम्। ग्रच् + नास्ति = ग्रज्जास्ति वा ग्रज्जास्ति। ग्रमज्जत् + नैाः = ग्रमज्जद्नैः वा ग्रमज्जित्। ग्रमज्जद्नैः वा ग्रमज्जित्।

## दशम पाठ

#### संश्रा

#### तकारान्त शब्द।

ं द्वि० U.o. वव द्धि० Œο व० प्र॰ सरित् सरिता सरितः प्र० धावन धावन्तौ धावन्तः सं॰ सरित् सरिता सरित: सं० हे धावन धावन्ती धावन्तः द्विती॰ सरितम् सरिता सरितः द्विती० धावन्तम् धावन्ता धावतः सर्वनाम पुं० भवत् ( ग्राप ) पुं० महत् ( बड़ा ) प्र० भवान् भवन्तौ भवन्तः महान् महान्तौ प्र॰ महान्तः सं० हे भवन् भवन्तौ सं० भवन्तः हे महन् महान्तौ महान्तः द्विती० भवन्तम् भवन्ता द्विती॰ महान्तम् महान्तौ भवतः महतः

तकारान्त पुं० कुछ शब्द धावत् के ग्रीर कुछ भवत् के समान रूप पाते हैं। महत् शब्द के रूपें के भेद दर्सा दिये। शेष तकारान्त पुंछिङ्ग वा स्त्री॰ शब्दों के रूप सरित् शब्द के समान होते हैं।

# नपुं० जगत्

 ए०
 द्वि०
 ब०

 प्र०
 जगत्
 जगती
 जगित

 सं०
 हे जगत्
 जगति।
 जगित

 द्विती०
 जगत्
 जगित
 जगित

प्र० सं० ग्रीर द्विती० के ब० व० में नपुं० महत् का रूप महान्ति होता है, शेष जगत् के समान होते हैं॥

## क्रिया

# उभय० क्षिप् ( फेंकना )

वर्तमान ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत परस्मै॰ प्र॰ ए० क्षिपति क्षिपतु क्षिपेत् ग्राक्षिपत् ग्रात्मने॰ प्र॰ ए० क्षिपते क्षिपताम् क्षिपेत ग्रक्षिपत वप् धातु के समान रूप होते हैं॥

# ग्रातमने० मृ ( मरना )

म्रियते इत्यादि रूप नी धातुके ग्रात्मने० के नयते इत्यादि के समान होते हैं ॥

परस्मै॰ कु ( बिखेरना वा छितराना )

वर्त्तमान आज्ञा विधि अन० भूत

प्र० ए० किरित किरतु किरेत् ग्रिकरत् इ० रूप छेजाग्रे। ।।
परस्मै० गृ (निगलना) के रूप कृ के समान होते हैं ग्रीर गिरित इ० रूपों के समान गिलित इ० भी रूप होते हैं ॥

## वाक्यरचना

## संज्ञाराव्द--तकारान्त

पुं०—भृभृत् (पहाड़ वा राजा ) इ० सरित् के समान ॥
पुं०—गच्छत् (जाता हुआ), पचत् (राधता हुआ), हसत्
(हँसता हुआ), भवत् (हाता हुआ) (आ) इ० धावत् के समान ॥
श्रीर श्रीमत्, भगवत् (पेश्वर्ययुक्त ) इ० भवत् (आप) के समान ॥

### धातु

उभय० दिश् ( देना ), मिल् ( मिलना ) परस्मै० लिख् ( लिखना ), विश् ( प्रवेश करना ) इ०॥

## इति तुदादि गणके धातु

### ग्रव्यय शब्द

भेाः (हे), मिथः (परस्पर), मा (निषेधवाचक), एवं (ऐसा, इस प्रकारसे), एवं (ही), कथं (क्यों, किस प्रकारसे), यावत् (जबलें), तावत् (तबलें), यदि, तर्हि (ता), हि (हेतुवेधिक), किम्, (क्या, क्यों), ग्रवश्यम् नाम (प्रसिद्धि वेधिक)॥

<sup>(</sup> ऋ ) यह भवत् शब्द जिसका ऋर्ष होता हुआ है उस भवत् शब्दसे जिसका ऋर्ष ऋष है भिन्न है। छै।र संस्कृतमें भवत् ( ऋष् ) शब्द प्रथम पुरुष माना जाता है यथा भवान् क्षिखति इ॰ प्रयोगों में देखें।।

#### वाक्य

संस्कृत
भ्रातमा क्षिप लेखम् ।
तिद्ध (२०) गच्छन्तं बालकमर्देत् ॥
याबद्भवां लिखति (२१) पत्रं,
ताबदहं पुस्तकं पठामि ॥
किं हससि । गुरुस्त्वां पश्येत् ॥
हिमालया नाम महान् भूभृद्

हिन्दी ग्राप क्यों नहीं लिखते ॥ तमसा नाम नदी है ॥ ग्रापको नमस्कार करता हूं ॥ वट नाम का पेड़ बड़ा होता है ॥

(सं०) (२०) पदान्तमें स्थित किसी वर्गके प्रथम वा तृतीय ग्रक्षरके ग्रनन्तर हकार ग्रावे ते। दोनों मिलके क्रमसे ग्य, वा ग्ह, जम वा जह, ड्ढ वा ड्ह, द्ध वा दृह, ग्रीर क्म वा वह हो जाते हैं। यथा तत्+हि = तद्धि वा तद्हि इ०।।

(सं०) (२१) नकारके अनन्तर ज, भ, वा रा, इनमेंसे कोई हो ते। ज; इ वा ढ इनमें से कोई हो ते। ण; भीर छ हो ते। छँ उस नकारके स्थान में आदेश होता है। यथा राजन् + जय = राजञ्जयः अधावन् + शशाः = अधावञ् शशाः वा अधावञ्छशाः, भवान् + दुण्डित = भवाण्दुण्डित। भवान् + छिखित = भवाँ छिखित हु ।।

#### वाक्य

संस्कृत

हिन्दी

भा (२२) बालका मिथा मिलच्चम् ॥ किस लिये फूलें के। छितराते हे। ॥

## एकादश पाठ

## संज्ञा

## दंकारान्त शब्द

ġ	० सुहृद्			नपुं०	हृद्	(हृद्य)
ए०	द्धि ०	वर्०		ए०	द्धि०	* ब॰
प्र॰ सुहत्	सुहदी	सुहदः	प्र०	हत्	हदी	हन्दि
सं॰ हे सुहृत्	सुहदै।	सुहदः	सं० हे	हत्	हदी	हन्दि
द्विती० सुहदम्	सुहदौ	सुहदः	हि ०	हत्	हदी	हन्दि

वकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दों के रूप सुदृद् शब्द के समान होते हैं।।

## धकारान्त शब्द

# स्त्री० क्षघ (भूख)

স্ত	ंश्चत्	क्षुधा	क्षुधः
सं०	हे क्षुत्	क्षुधे।	ं क्षुधः
द्विती० 💮	क्षुधम्	श्चुघो	क्षुधः

धकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दोंके रूप क्षुध्र शब्द के समान होते हैं।।

(सं०) (२२) भाः शब्दके विसर्गके स्थानमें ग्राठवीं सन्धिके नियमसे रेफ नहीं होता किन्तु उस (विसर्ग) का ले।प हा जाता है यदि स्वर, किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम ग्रथवा य, ल, व, ह इनमें से कोई ग्रक्षर उस विसर्ग के उत्तर हो। यथा भाः + बालकाः = भा बालकाः इ०।।

## किया

# दिवादि गण

परसा ० धातु-नृत् (नाचना)									
वत्त मान									
	ए० द्वि० ब०								
प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति						
म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ						
उ०	नृत्यामि	<b>नृ</b> त्यावः	नृत्यामः						
		आज्ञा							
No	नृत्यतु	नृत्यताम्	<b>नृ</b> त्य <b>न्तु</b>						
म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत						
उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम						
		विधिः							
To	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः						
म०	<b>नृ</b> त्येः	नृत्येतम्	नृत्येत						
उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम						
	ą	प्रनद्यतनभूत							
प्रव		ग्रनृत्यताम्	ग्रनृत्यन्						
		ग्रनृत्यतम्							
		ग्रनृत्याव							

परस्मै० अम् (अम करना) प्र० ए० परस्मै० व्यध् (वेधना) प्र० ए० परसा ० ज (जीर्थ होना ) प्र० ए० जीर्यत जीर्यत जीर्यत् अजीर्यत्

ग्रात्मने० धातु मन् ( समभना ) वत्तमान द्धि० ए० व० मन्येते मन्यन्ते प्र॰ मन्यते म॰ मन्यसे मन्येथे मन्यध्ये उ० मन्ये मन्यावहे मन्यामहे ग्राज्ञा प्र॰ मन्यताम् मन्येताम् मन्यन्ताम् म० मन्यस्व मन्येथाम् मन्यध्वम् उ० मन्य मन्यावहै मन्यामहै विधि प्र॰ मन्येत मन्येयाताम् मन्यस्न् म० मन्येथाः मन्येयाथाम् मन्येध्वम् उ० मन्येय मन्येवहि मन्येमहि ग्रनद्यतनभूत् प्र० ग्रमन्यत ग्रमन्येताम् ग्रमन्यन्त म० ग्रमन्यथाः ग्रमन्येथाम् ग्रमन्यध्वम्

वर्त्त० ग्राज्ञा विधि ग्रन०भूत श्राम्यति श्राम्यतु श्राम्यत् अश्राम्यत् विध्यति विध्यतु विध्येत् ग्रविध्यत्

उ० ग्रमन्ये ग्रमन्यावहि ग्रमन्यामहि

वर्त्तमान आज्ञा विधि अन०भूत

परसौ० दिव् ( जुग्रा खेलना ) प्र० प० दीच्यति दीव्यतु दीव्येत् ग्रदीव्यत् परसौ० क्रम् ( चलना ) प्र० प० काम्यति काम्यतु काम्येत् ग्रकाम्यत् परसौ० ष्टिव् ( थूकना ) प्र० प० ष्टीव्यति ष्टीच्यतु ष्टीव्येत् ग्रष्टीव्यत्

कम् ग्रीर ष्टिव्ये देनिं। धातु भ्वादिगण में भी पठित हैं ग्रीर उनके रूप कम मे कामति इ० ग्रीर ष्टीवित इत्यादि होते हैं॥

्र श्रात्मने॰ जन् ( जन्म पाना ) के जायते इत्यादि भ्वादि के त्रे धातु के त्रायते इत्यादि के समान रूप होते हैं ॥

डी ( उड़ना ) के डीयते इत्यादि भ्वादि के नी धातुके ब्रात्मने० के नयते इ० रूपों के समान होते हैं॥

परसाँ । नश् ( नष्ट होना ) के नश्यति इ० रूप भ्वादि के हश् धातु के पश्यति इ० के समान होते हैं ॥

## वाक्यरचना

संशा राष्ट्र

दकारान्त

स्त्री०—प्रतिपद् ( पड़िवा ), मृद् ( मिट्टी ), हषद् ( चट्टान ), शरद् ( एक ऋतु ) इ०

#### धकारान्त

स्त्री०-कुष् (क्रोध), युष् (युद्ध), समिष् (यक्षकाष्ट) इ०॥

## धातु

परस्मै॰ कुघ् (कोध करना), कुप् (कोप करना), क्षुघ् (मूखा होना), सिध् (सिद्ध होना वा पूरा होना), रघ् (रींधना) इ॰ नृत् धातु के समान । श्रम् (शान्त होना), मद् (मत्त होना), इ० श्रम् के समान ॥

ग्रात्मने० युध् ( युद्ध करना ), वुध् ( समक्षना ) खिद् ( खेद करना ), विद् ( होना ) इ० मन् धातु के समान ॥

# इति दिवादिगण के धातु

#### ग्रव्यय शब्द

ग्रत्र (यहां), तत्र (वहां), कुत्र (कहां), यत्र (जहां), सर्वत्र (सब ठार)॥

#### वाक्य

## संस्कृत

श्रुध्यत्येष बालकः । किं माता न रध्यत्यन्नम् ॥ बालका ग्रक्षान्मा दीव्यत नश्यन्त्येतानि धनानि ॥ किं पुत्रोऽजायत कन्या वा ॥ बहवै। विद्या विद्यन्ते ।

## हिन्दी

क्यां खेद करते हा ॥

शत्रु तो मरा ॥

हम तुमको सुदृद् समभते हैं ॥
वहां मयूर नाचता है ॥
जहां छड़के जुग्रा खेलते हैं,
वहां मत जाग्रे। ॥

## संस्कृत

कथमेतांस्तरेयम् ( ४३ ) ॥ चनृत्यन्नत्र ( २४ ) मयूराः॥

## द्वादश पाठ

### संश्वा

### नकारान्त शब्द

पुं॰ राजन्				पुँ० ग्रात्मन्			
ए०	द्धि०	ब०		ए०	द्वि०	च०	
प्र० राजा	राजाना	राजानः	प्र०	ग्रात्मा	ग्रात्मानी	ग्रात्मानः	
संव्हे राजन्	राजानी	राजानः	सं०	हे ग्रात्मन्	ग्रात्माना	ग्रात्मानः	
द्विती० राजान	म् राजाना	राज्ञः	द्विती	० ग्रात्मान	म् ग्रात्मानी	<b>आत्मनः</b>	
युवन	र् (जवान)	j			(कुत्ता)		
प्र॰ युवा	युवानी	युवानः	प्र०	श्वा	श्वाना	श्वानः	
सं० हे युवन्	्युवानी 💮	युवानः	सं०	हे श्वन्	श्वानी	श्वानः	
द्विती॰ युवानम	र् युवानी	यूनः	द्विती	० श्वानम्	श्वानी	शुनः	

(सं०) (२३) पदान्त में श्वित न के अनन्तर च, छ, ट, त वा थ आवे तो उस न के स्थान में अनुस्वार होता है, और च इत्यादि के स्थान में कम से रच, रछ, छ, छ, स्त वा स्थ आदेश होते हैं। यथा एतान् + तरेयम् = एतांस्तरेयम् इ०॥

(सं०)(२४) पदान्त में हस्व स्वर के अनन्तर नकार हा और उस नकार के अनन्तर कोई स्वर हो तो उस नकार को दो कर देते हैं यथा मनृत्यन् + अत्र≕अनृत्यन्तत्र इ०॥ जिन नकारान्त पुं॰ वा स्त्रो॰ शब्दों के अन्तर्मे अन् हा प्रायः उनके रूप राजन् शब्दके समान होते हैं। युवन् श्रीर श्वन् शब्दोंके रूपोंमें जो भेद होता है सो दिखा दिया॥

जिन नकारान्त पुं० वा स्त्री० शब्दोंके अन्तमें मन् या वन् हो मीर उस मन् अथवा वन्के पूर्वमें कोई व्यञ्जन वर्ण मन् अथवा वन् के मकार वा वकारसे संयुक्त हो ऐसे शब्दोंके रूप आत्मन् शब्दके समान होते हैं॥

पथिन (पथ) स्वामिन द्धि० व० द्धिः Q0 ब॰ पन्थानी स्वामिना स्वामिनः पन्थाः पन्थानः प्र० सं हे स्वामिन् स्वामिना स्वामिनः सं हे पन्थाः पन्थाना पन्थानः द्विती व्यामिनम् स्वामिना स्वामिनः द्विती पन्थानम् पन्थाना पथः

जिन नकारान्त शब्दोंके अन्तमें इन हो उनके रूप स्वामिन शब्दके समान होते हैं॥

पथिन् शब्द के रूपेंग्नें जो भेद होता है सो दिखा दिया॥ नपुंसकिलंग

,		जन्मन्			नामन्	
	Qο	द्वि०	ब॰	ए०	द्धि०	ब॰
Дo	जन्म	जन्मनी	जन्मानि	अंध गांस	नामनी,) नाम्ली	नामानि
सं०	हे जन्म, जन्मन्	जन्मनी	जन्मानि	सं हे नाम ।	नामनी )	नामानि
	१० जन्म	<sup>7</sup> जन्मनी	जन्मानि	द्विती० नाम	नामनी	नामानि

## अहन् (दिन)

	प्र	हि०	ब॰
স্ত '	ग्रहः	ग्रहनी, रे ग्रही	ग्रहानि
सं०	हे ग्रहः	ग्रहनी, <b>ग्रह</b> नी, <b>ग्रह</b> ी	ग्रहानि
द्विती०	ग्रहः	ग्रहनी, ो ग्रही	अहानि

जिन नकारान्त नपुं० शब्दोंके अन्त में अन् हो उनके रूप नामन शब्द के समान होते हैं॥

अहन ग्रीर जन्मन् शब्दोंके रूपोंमें जो भेद होता है उसकी दिसा दिया॥

आत्मन् शब्द जिस प्रकारके नकारान्त पुं० शब्दोंका नायक है जन्मन् शब्द उसी प्रकारके नकारान्त नपुं० शब्दोंका नायक है जिनके अन्तमें उक्त विध मन् ग्रथवा वन् हो॥

नकारान्त नपुं० जिनके अन्तमें इन् हा यथा स्थायिन् इत्यादि उनके रूप वारि शब्द के समान हाते हैं। केवल सं० के ए० व० में स्थायि वा हे स्थायिन् इतना भेद हाता है॥

# चुरादि गग

# उभयपदी रच् ( रचना करनी )

		रस्मै०						
				ग्रात्मने०				
		र्त्तमान				वर्त्तमान		
	Q0	द्धि०	ब॰		ए०	द्धि०	ब०	
प्र० रच	यति	रचयतः	रचयन्ति	স০	रचयते	रचयेते	रचयन्ते	
म० रच	यसि	रचयथः	रचयथ	म०	रचयसे	रचयेथे	रचयभ्वे	
उ० रच	यामि	रचयावः	रचयामः	30	रचये	रचयावहे	रचयामहे	
		ग्राज्ञा 🥌				ग्राज्ञा		
प्र० रच	यतु	र्चयताम्	रचयन्तु	अ०	रचयताम्	रचयेताम् ः	<b>च्यन्ताम्</b>	
म० रच		रचयतम्	रचयत	म०	रचयस्व	रचयेथाम्	रचयध्वम्	
उ० रच	यानि	रचयाव	रचयाम	उ०	रचयै	रचयावहै	रचयामहै	
		विधि				विधि		
प्र॰ रच	येत्	रचयेताम्	रचयेयुः	प्र०	रचयेत	रचयेयाताम	रचयेरन	
म॰ रच		रचयेतम्	रचयेत			रचयेयाथाम		
उ० रच	येयम्	रचयेव	रचयेम	30	रचयेय	रचयेवहि	रचयेमहि	
	. ग्रन	<b>यतनभू</b> त	9		ग्र	नद्यतनभूत		
प्र० ग्रर	चयत् व	प्ररचयताम्	ग्ररचयन्	प्र०		ग्ररचयेताम्	ग्ररचयन्त	
		प्ररचयतम्		HO		<b>ग्ररचयेथाम्</b>		
उ० ग्रर	चयम् ३	प्ररचयाव	ग्ररचयाम	उ ३	प्रस्वये ग्र	त्वयावहि इ	प्रचयामहि	
			उभय	पदी				

छल् ( लाड़ करना ) परस्मै० ग्रात्मने० प्र० ए० वर्त्त० लालयति लालयते तिज् (तीक्ष्ण करना)
परस्मै॰ ग्रात्मने॰
प्र० ए॰ वर्त्त॰ तेजयित तेजयते

परस्मै० ग्रात्मने० परस्मै० ग्रात्मने० प्र०ए० ग्राज्ञा लालयतु लालयताम् प्र०ए० ग्राज्ञा तेजयतु तेजयताम् प्र०ए० विधि लालयेत् लालयेत प्र०ए० विधि तेजयेत् तेजयेत प्र०ए० ग्रान०भूत ग्रालयत् ग्रालयत् प्र०ए० ग्रान०भूत ग्रातेजयत् ग्रातेजयत

यों रचयति ग्रीररचयते इत्यादिके समान रूप ले जाग्री॥ वीज् (पंखा भालना ) के वीजयति ग्रीर वीजयते इ०॥

चुर् (चारी करनी) के चारयित ग्रीर चारयते इ०। पूज् (पूजा करनी) के पूजयित ग्रीर पूजयते इ०। वृज (वर्जना) के वर्जयित ग्रीर वर्जयते इ०। स्पृह् (चाहना) के स्पृह्यित ग्रीर स्पृह्यते इ०। वृ (ग्राड़ करनी) के वारयित ग्रीर वारयते इ० कम से रूप ले जाग्री॥

परसौ॰ ज्ञा ( जतलाना ) के ज्ञापयति इ० रूप ले जाओ ॥

## वाक्यरचना

संज्ञा शब्द

#### नकारान्त

पुं॰ महिमन्, मूर्धन् (दिार वा मस्तक) इ॰। स्त्री॰ सीमन् इ॰ राजन् के समान ॥

पुं० ग्रहमन् ( पत्थर ), ग्रध्वन् ( मार्ग ), इ० ग्रात्मन् के समान ॥ नपुं० धामन् ( घर वा तेज ) इ० नामन् के समान ॥

नपुं॰ रार्मन् (सुख) (ग्र), वर्मन् (कवच) (ग्रा), कर्मन्, वर्त्मन् (बाट), पर्वन् (पार वा पार्णमासी तिथि ग्रथवा त्योहार), चर्मन् (वाम वा ढाल ) इ० जनमन्के समान ॥

### धातु

उभय० अर्च ( पूजा करनी ), अर्ज ( उपार्जन करना ) इ०। परस्मै॰ कथ् ( कहना ), गरा ( गिनना ), भक्ष् ( खाना ), छक्ष ( छखना ), दण्डू (दण्ड देना) इ०। ग्रात्मने ग्रर्थ (मांगना), तर्ज (डांटना), भत्सं (धिकारना), वक्च (ठगना) इ० रच् के समान॥

परस्मै॰ तड् ( ताड़ना करना ) इ० लल् के समान ॥ परस्मै॰ पीड् (पीड़ा देनी) इ॰ वीज् के समान॥ उभय० तुल (तालना) इ० चुर् के समान॥ परस्मै चूर्ण ( चूर्ण करना ) इ० पूज् 🕏 समान ॥

इति चुरादि गण के धात

वाक्य

संस्कृत विष्णुशर्मा नाम ब्राह्मणा राजानमर्थ- धन कमाग्रे। ग्रीर खाग्रे॥ यते॥ किय प्रन्थ रचता है॥

हिन्दी

<sup>(</sup> अ ) ब्राह्मग्रों। के नामका भी वाचक पुं॰ है।।

<sup>(</sup> श्रा ) क्तत्रिया के नामका भी वाचक पुं० है ॥

संस्कृत

राजा चौरं भत्संयते दण्डयति च।
शटः साधुमसाधुञ्च वञ्चयते॥
मातरे।ऽलालयञ्चिशून्॥
भाः शिष्य तत्त्वं चिन्तय। सम्बरितं
(२५) चर।
राजागणयज्जनान्॥
द्विजो न भक्षयेल्लश्चनम्॥

हिन्दी

छड़के फलेंं के। गिनते ग्रीर खाते हैं ॥ उसने पत्थर फेंका ग्रीर कुत्तेका मारा॥

# त्रयोदश पाठ

संज्ञा

पकारान्त

स्त्री० ग्रप् (पानी) शब्द के रूप केवल बहुवचन में होते हैं। प्र० ब० ग्रापः। सं० ब० हे ग्रापः। द्विती० ब० ग्रपः॥

(सं०)(२५)त वाद के अनन्तर ज, छ वा रा, इनमें से कोई हो तो च, ज वा भ, इनमें से कोई हो तो ज, ट वा ठ इनमें से कोई हो ते ट, ग्रीर ड वा ढ, इनमें से कोई हो तो ड, ग्रीर छ हो ते। (नित्य) छ, उस त वाद के स्थान में आदेश होता है। यथा सत् + चितम् = सम्चितम। ग्रीरतम् = जनान् = अगण्यज्ञानान् । भक्षयेत् + छशुनम् = भक्षयेह्नशुनम् इत्यादि॥

ब०

यानि

यानि

# सर्वनाम शब्द

यद् ( जो )

		g'o				स्री॰	
	ए०	द्धि०	ब॰		Qο	ब्रि॰	অ০
To	यः	या	ये	प्र०	या	ये	याः
द्विती०	यम्	यैा	यान्	द्विती०	याम्	ये	याः
ਜਹ*਼							

नपु ०

ए० द्वि**०** प्र० यत् ये द्विती० यत् ये

क्रिया स्वादिगगा

उभय० व ( वरण करना )

/
<b>आत्मने०</b>
वर्त्तमान
વલાવ
ए० द्वि० व०
० बृगाते वृण्वाते वृण्वते
ा० वृगाषे वृण्वाथे वृगाध्वे
ा वृण्वे विगुजहे विगुमहे वृण्वहे वृण्महे

(सं०) (२६) अ वा आ की छोड़ के रोष स्वर, कवर्ग अथवा रेफ इनमें से किसी अक्षर से परे प्रत्ययके दन्त्य सकारके स्थान में मूर्धन्य पकार आदेश होता है। यथा वृशेष + सि = वृशेषि इ०॥

		ग्राज्ञा				त्राशा	
	Qο	द्धि०	蜀の		Ųο	द्वि•	व०
प्र॰	वृग्णतु	वृगुताम्	वृण्वन्तु	স০	वृगुताम्	वृण्वाताम्	<b>चृ</b> ण्वताम्
म०	<u>बृगु</u>	गुतम्	वृगुत	म०	तृगुष्व	वृण्वाथाम्	वृशुश्वम्
उ०	वृगावानि	वृग्यवाव	वृणवाम	30	वृग्वै	<b>बृ</b> ण्वावहै	वृष्वामहै
		<u> </u>				विधि	
प्र०	वृगुयात्	वृणुयाताम्	वृणुयुः	प्र०	<b>बृ</b> ण्वीत	<b>त्रु</b> ण्वीयाताम्	वृण्वीरन्
म०	<b>वृ</b> गुयाः		वृशुयात			वृण्वीयाथाम्	
	वृशुयाम्	वृणुयाव	वृशुयाम	उ०	त्रुण्वीय	वृण्वीवहि	त्रुण्वीमहि
	ग्र	नद्यतनभूत			द्य	नद्यतनभूत	
No	अवृशात्	अवृक्षुताम्	ग्रवृण्वन्	प्र०	<b>अ</b> बृगुत	ग्रवृण्वाताम्	ग्रवृण्वत
#o	ग्रवृषोः	अवृग्रुतम्	अव्यात	Ho	स्रवृशुधा	: ग्रवृण्वाथाम्	ग्रवृ <u>ण</u> ुश्वम्
30	ग्रवृग्वम्	∫ग्रह्मगुव ग्रहण्य	्रियं बुखुम अबुणम	उ०	ग्रवृण्वि	(ग्रत्रुणुत्रहि ग्रत्रुण्वहि	अवृणमहि अवृणमहि

वर्त्तमान ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत

परस्मै॰ प्र॰ ए॰ श्रु (सुनना) श्रुगोति श्रुगोतु श्रुगोयात् ग्रश्रुगोत् इत्यादि परस्मै॰ वृगोति इ० के समान रूप होते हैं॥

# परस्मै० ग्राप् (पाना)

		वर्त्तमान				ग्राज्ञा	
	ए०	द्धि०	ब०		ए०	द्धि०	च०
y é	ग्राप्तोति	ग्राप्तुतः	ग्राप्तु वन्ति	प्र०	ग्राप्तोतु	ग्राप्तुताम्	ग्राप्तु बन्तु
Ho.	ग्राप्तोषि	ग्राप्तु थः	ग्राप्तुथ	म०	ग्राप्तु हि	<b>ब्राप्तुतम्</b>	<b>ग्राप्तु</b> त
उ०	ग्राप्तोमि	<b>ग्रा</b> शुवः	ग्राप्तुमः	उ०	ग्राप्तवानि	ग्राप्तवाव	ग्राप्नवास्

विधि ग्रनद्यतनभूत द्धि० द्वि० Q0 वि Q0 ब॰ प्र॰ आप्त यात् आप्त्याताम् आप्तुयुः प्र॰ आप्तोत् आप्तुताम् ग्राप्त् वन् म० ग्राप्त याः ग्राप्तु यातम् ग्राप्त् यात म० ग्राप्ताः ग्राप्तम् ग्राप्त त उ० ग्राप्त याम् ग्राप्त्याव ग्राप्त्याम उ० ग्राप्तवम् ग्राप्त्व ग्राप्त म

## वाक्यरचना ॥

धातु

उभय•

परस्मै०

चि ( बटेारना ) वृके समान ॥

शक् (सकना) ग्राप् के समान॥

इति स्वादि गणके धातु

ग्रव्यय

रानैः (धीरे २), इव (नाईं), द्याः (कलका दिन जो बीत गया), अद्य ( आज ), सम्प्रति ( इस समय ), यदा ( जब ), कदा ( कब ), तदा ( तब ), सदा, सर्वदा ॥

#### वाक्य

संस्कृत धर्मं राने (२७) दिचनुयाद्वरुमीक- यहाँ पानी है। क्या तुम उसे नहीं मिव पुत्तिकाः (ग्र)॥

हिन्दी

पाते हा ॥

(सं०) (२७) विसर्ग के अनन्तर च वा छ हो ते। विसगके स्थानमें तालच्या रा, टावा ठ हो ते। मूर्धन्य षः त वा थ हो ते। दन्त्य सं ग्रादेश होता है यथा—शनैः + चिनुयात् = शनैरिचनुयात् इत्यादि ॥

(अ) प्रतिका = कीटविशेष । वल्मीक = वमीटा ॥

संस्कृत
सदा धर्ममेव श्रृणुयात् ॥
कदाप्यधर्म न चरेत् ॥
ह्यो यानि फलानि (ग्र) ग्रचिनवं
तान्यद्य भक्षयामि ॥
या विद्यां शिक्षते स ज्ञानं
सुखञ्चाप्रोति ॥
मुनिः कथयति राजन् वरं
वृग्णुष्व ॥

हिन्दी
जिन फूलों को कल हमने बटेरा था
वे कहां हैं॥
स्वयंवरा कन्या ने वर को वरण
किया है॥
कल मैंने यह पोधी पाई॥

वाक्य

# चतुर्दश पाठ

संज्ञा

## रेफान्त शब्द

স্থা ০	गेर् ( वाणी	)	स्त्री॰ पुर	(नगर)	
ए०	द्धि०	ब०	य०	हि•	ब०
प्र० गीः	गिरी	गिरः	प्र० पुः	पुरी	पुरः
सं० हे गीः	गिरी	गिरः	सं हे पूः	पुरी	पुरः
द्विती० गिरम्	गिरी	गिरः	द्विती॰ पुरम्	पुरी	पुरः

<sup>(</sup>त्र) वाक्य में चाहे सन्धि न भी करें तो दोष नहीं है। यथा--फलानि + श्रिचनवम् इस वाक्य में इ के स्थान में यं त्रादेश नहीं करें तो भी त्राशुद्ध नहीं है। इसी प्रकार से श्रन्यत्र भी वाक्यों में सन्धिका करना वा न करना वक्ता की इच्छा के त्राधीन है।

# स्त्री० द्वार्

	ए०	द्धि०	ब०
प्रo	द्राः	द्वारी	द्वारः
सं०	हे द्वाः	द्वारी	द्वारः
<b>इिती</b> ०	द्वारम्	द्वारी	द्वारः

सर्वनाम

# इदम् (यह)

ġo			श्री०	
	बर	ए०	द्धि०	ब०
	मे प्र	4 1.4	इमे	इसाः
द्विती०{	इमान् द्वर	ती० इमाम्	इमे	इमाः
(एनम् एनै। ए	नान्	पनाम्	एने	पनाः

नपुं०

СO	द्धि •	অ০	
प्र० इदम्	इमे	इमानि	
द्वि० ∫ इदम्	इमे	इमानि	
(एनत्	एने	एनानि	ŧ

# तनादि

# उभय॰ तन् (तानना)

	परस्मै०		t	ग्रात्मने०	
	वत्तमान			वर्त्तमान	
ए०	द्वि०	च०	Qo	द्धि०	व०
प्र॰ तनाति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र॰ तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० तनाषि	तनुथः	तनुथ	म० तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० तने।मि	्रतनुवः, तन्वः	तनुमः तन्मः	उ० तन्वे	∫ तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे
	ग्राज्ञा			ग्राज्ञा	
प्र॰ तनातु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र॰ तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म॰ तनु	तनुतम्	तनुत		तःवाथाम्	
उ० तनवानि	तनवाव		उ० तनवै		
	विधि	,		विधि	
प्र॰ तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र॰ तन्वीत		_
म० तनुयाः	तनुयातम्	तजुयात	म० तन्वीथाः		
उ० तनुयाम्			उ० तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
	नद्यतनभूत			प्रनद्यतनभूत	
प्र॰ ग्रतनात्		ग्रहस्त	प्र० ग्रतनुत	ग्रतन्वाताम्	ग्रतन्वत
		ग्रतन्वन्	म० अतनुथाः	ग्रतन्वाथाम्	ग्रतनुध्वम्
म० ग्रतनाः		ग्रतनुत		ग्रतनुवहि,	ग्रतनुमहि,
उ० ग्रतनवम्	अतनुष,	अतनुम,	उं० ग्रतन्चि	ग्रतन्वहि	ग्रतन्महि
	( अधाप	जाता ग		,	

# उभय० कु० (करना)

वर्तमान वर्त्तमान	1
ए० द्वि० ब० ए० द्वि० ब	10
20 00	र्वते
2-2	रुध्वे
20 0	र्महे
ग्राज्ञा ग्राज्ञा	
	र्वताम्
	रुध्वम्
	रवामहै
विधि विधि	
प्र० कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः प्र० कुर्वीत कुर्वीयाताम् कु	वीरन्
म० कुर्याः कुर्यातम् कुर्यात म० कुर्वीथाः कुर्वीयाथाम् कु	
उ० कुर्याम् कुर्याव कुर्याम उ० कुर्वीय कुर्वावहि कु	
ग्रनद्यतनभूत ग्रनद्यतनभूत	
प्रवासन् अकुरुताम् अकुर्वन् प्रवासन् अकुर्वतः अकुर्वाताम् अ	प्रकृवित
म॰ अकरोः अकुरुतम् अकुरुत म॰ अकुरुथाः अकुर्वाथाम् अ	
	प्रकुर्महि

इति तनादि गण के धातु

# वाक्यरचना

संज्ञा

स्त्री० धुर् ( दे। मा ) पुर् शब्द के समान ॥

### ग्रव्यय शब्द

ननु ( प्रश्नवाचक ), नूनम् ( निश्चयवाचक ), आशु ( शीघ्र ) शीघ्रम्, उच्चैः ( ऊंचा ), नीचैः ( नीचा ), उपरि( ऊपर ), क्व ( कहां ), अधः (नीचे), पुरा ( पूर्वकालमें ), अधुना ( अब ) ।।

#### वाक्य

संस्कृत ग्रहमिमां काशीं नाम पुरं पश्यामि। त्वमपि पश्यैनाम् ( २८ ) (ग्र) ॥

हिन्दी
लड़को इस काम की शीघ करी।
अच्छा, ग्रभी करते हैं॥
बताग्री कुल तुमने क्या किया।

(सं०)(२८) अ के परे प वा पे हो तो दोनों मिल के एक पे हो जाता है। यथा पर्य + एनाम् = पर्येनाम्। आ के परे प वा पे हो तो देनों मिल के एक पे हो जाता है। यथा राजा + पेच्छत् = राजैच्छत्॥ अ के परे ओ वा भी हो तो देनों मिल के एक भी हो जाता है। यथा पच + ओदनम् = पचौदनम्। आ के परे ओ वा भी हो तो देनों मिल के एक भी हो जाता है। यथा सेवस्व + भीषधानि = सेवस्वौषधानि॥

<sup>(</sup>स्त्र) जब वाक्यमें इदम् शब्दका एक बार कथन हो गया हो और फिर भी उसीका प्रयोग करना हो तो उस (इदम् शब्द) के दूसरे रूपका प्रयोग करना चाहिए। यथा इमां पुर पश्यामि, त्वमपि पश्य एनाम्, इत्यादि॥

#### वाक्य

संस्कृत त उपरि ( २९ ) तिष्ठन्ति ॥ ग्रहमधस्तिष्ठामि ॥ सोऽहं कविर्देवदत्तष्टीकां तनामि ॥

हिन्दी क्या ग्रयोध्या नाम नगरी के। देखा॥ व्याधने जाळ के। फैलाया॥

## पञ्चदश पाठ

## संशा

#### वकारान्त शब्द

# स्रो॰ दिव् (स्वर्ग)

	ए०	द्धि०	ब०
प्र॰	द्योः	दिवै।	दिवः
सं०	हे द्यौः	दिवैा	दिवः
द्विती०	दिवम्	दिवै।	दिवः

(सं०) (२९) प वा बो के परे कोई स्वर हो तो उस प वा मो के स्थान में कम से अयु वा अव् आदेश होता है परन्तु पदान्त में स्थित प वा बो के स्थान में अ आदेश भी हो सकता है बीर फिर सन्धि नहीं होती है। यथा ते + उपरि=तयुपरि अथवा त उपरि इत्यादि॥

ग्रीर पदान्तमें स्थित ए वा ग्री के उत्तर यदि हस्व ग्रकार हो तो उस (हस्व ग्रकार) का लेाप हो जाता है ग्रीर उस लेाप का सूचक ऽऐसा चिह्न लिख दिया जाता है। यथा ते + ग्रिप=तैऽपि इ०॥

## शकारान्त शब्द

पुं॰ वा स्त्री॰ ताहश् (वैसा वा वैसी)
प॰ द्वि॰ ब॰
प॰ ताहक् ताहशा ताहशः
सं॰ ताहक् ताहशा ताहशः
द्वि॰ ताहशम् ताहशा ताहशः

नपुं० ताहरा (वैसा)
प० द्वि० ब०
प० ताहक् ताहरी ताह रि।
सं० हे ताहक् ताहरी। ताह रि।
द्वि० ताहक् ताहरी। ताह रि।

क्रिया

# क्रचादि गरा

# उभयपदी की ( माल लेना )

		परस्मै०	
		वर्त्तमान	
	ए०	द्वि	व०
प्र०	कीणाति	क्रींगीतः	कीर्णन्त
	कीणासि	क्रीणीथः	क्रीगीथ
उ०	क्रीणमि	कीग्गीवः	कोणीमः
		ग्राज्ञा	
<u>प्र</u> 0'	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीगन्तु
म॰	कोग्गीहि	कीखीतम्	कीणीत
उ:0	कीसानि	क्रीणाव	क्रीग्राम
		विधि	
प्रo	की णीयात्	कीणीयाता	म् क्रीग्रीयुः
			म् क्रीगीयात
उ० इ	र्धाणियाम	कीणीयाव	कीखीयाम

वर्त्तमान द्धि० ए० व० प्र० की गीते क्रीगाते की गते म० क्रीग्रीचे कोणाथे कीर्णाध्वे उ० की गे क्रीणीवहे कीणीमहे ग्राज्ञा प्र० की णीताम् की णाताम् की णताम् म० कीर्णीष्व कीरणथाम् कीरणीध्वम् उ० क्रीग्रै , कीणावहै कीणामहै विधि प्र० कीगीत कीगीयाताम् कोगीरन्

म॰ कीणीथाः कीणीयाथाम् कीणीध्वम् उ० कीणीय कीणीविह कीणीमिह

ग्रात्मने०

### ग्रनद्यतनभूत

प्र० अकीणात् अकीणीताम् अकीणन् प्र० अकीणीत अकीणीताम् अकीणत

## ग्रनद्यतनभूत

द्भि० To म० अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत म०अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम् उ० अक्रीसाम् अक्रीसीव अक्रीसीम उ० अक्रीसी अक्रीसीवहि अक्रीसीमहि

## उभयपदी ज्ञा ( जानना )

वर्त्त० ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत परस्मै॰ प्र॰ ए॰ जानाति जानातु जानीयात् अजानात् प्र० ए० जानीते जानीताम् जानीत अजानीत ग्रात्मने० इत्यादि की धातु के उभयपद के समान रूप ले जाग्री।

# परसमैपदी बन्ध् ( बांधना )

वर्त्तमान ग्राश द्धि० ब० द्वि० Q0 UO . च० प्र॰ बधाति बधीतः बधन्ति प्र० बधातु बधीताम् वधन्तु ब्रघ्नीथः ब्रघ्नीथ म० बधान बधीतम् बधीत म० बधासि उ० बधामि बधीवः बध्रीमः उ० बधानि बधाव बंधाम विधि अनद्यतनभूत प्र० बधीयात् बधीयाताम् बधीयुः प्र० अबधात् अबधीताम् अबधन् म० बध्नीयाः बध्नीयातम् बध्नीयात म० अबधाः अबधीतम् अबधीत उ० बधीयाम् बधीयाव बधीयाम उ० अबधाम् अबधीव अबधीम

# उभयपदी ग्रह् ( ग्रहण करना )

वर्त्त० ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत परसौ॰ प्र० ए० गृह्णाति गृह्णातु गृह्णीयात् त्रात्मने० प्र० ए० गृह्णीते गृह्णीताम् गृह्णीत त्रगृह्णीत

इत्यादि परस्मैपद में बन्ध धातु के परस्मैपद के रूपें के समान ग्रीर श्रात्मनेपद में की धातु के ग्रात्मनेपद के रूपें के समान ले जाग्री।

परस्मै० ग्रश् (खाना)

वर्त्तः याश्चा विधि ग्रन० भूत प्रक ए० ग्रश्नाति ग्रश्नातु ग्रश्नीयात् ग्राश्नात्

बधाति इत्यादि के समान रूप ले जाग्री॥

## वाक्यरचना

# संज्ञा राज्य

सहश्, ईहश् ( ऐसा वा ऐसी ), याहश् ( जैसा वा जैसी ) माहश् (मुभसा वा मुभसी); त्वाहश् (तुभसा वा तुभसी), भवाहश् (ग्रापसा वा ग्रापसी), इत्यादि ऐसे शब्द जिनके ग्रन्त में हश् पाया जावे तीनें। लिङ्कों में ग्रीर स्त्री॰ में हश् ( ग्रांख ), दिश् ( दिशा ) इ॰ ताहश् के समान ॥

## धातु

डभय० प्री ( प्रसन्न होना वा करना ) इ० क्री के समान ॥ परस्मै० पुष् ( पोषण करना ), मुष् ( चेारी करनी ) इ० ग्रश् के समान । परस्मै० ग्रन्थ ( ग्रृंथना ), मन्थ् ( मंथना ) इ० गन्ध् के समान । इति क्रयादिगणके धातु ॥

#### ग्रव्यय

वरम् ( ग्रच्छा वा कुछ ग्रच्छा ), वाढम् ( हां, ग्रच्छा ), ग्राम् ( हां ), यथा (जैसा ), तथा ( वैसा ), इत्थम् ( ऐसा ), हन्त ( हर्ष या शोक बेाधक ), ग्ररे, ग्रहो ( ग्राश्चर्य ग्रादि बेाधक ) ॥

#### वाक्य

संस्कृत गुको याहशं गिरं श्रेखाति ताहशं वदति॥ वत्स जानासि गखितम्॥ ग्राम् जानामि गुरो॥

## हिन्दी गाय बांधेा श्रीर दिध मंथा ॥ इस पेड़ की काटी फूलें की चुनी ॥

इस पेड़ की काटी फूलीं की चुनी। लड़का जैसा सुने वैसा बाले॥ क्या नहीं जानते हो कल मैंने देा कपड़े मोल लिये॥

(सं०)(३०) य के परे य वा या, यथवा या के परे य वा या है। तो दोनों मिल के एक या हो जाता है। यथा यदा+ यहम् = यदाहम्॥

इ के परे इ वा बड़ी ई; अथवा ई के परे इ वा ई हो ते। देोनें मिल के एक है हो जाता है। यथा मुख्णाति + इति = मुख्णातीति॥

उ के परे उ वा ऊ; अथवा अ के परे उ वा ऊ होता दोनों मिळ के पक ऊ हो जाता है। यथा कुरु + उन्नतिम् = कुरून्नतिम्॥

ऋके परे ऋं वा ऋ; अथवा ऋ के परे ऋ वा ऋ हो ता दोनों मिलके एक ऋ हो जाता है।

#### वाक्य

संस्कृत
अद्याहं (३०) की णामि (अ) पत्रं
लेखनीं मधीञ्च ॥
मुष्णातीति मूषकः। द्यारयतीति चारः॥
यः पितरम्प्रीणाति स प्रियः पुत्रः॥
यथा तै कुर्वन्ति तथा कुरून्नतिम्॥

हिन्दी मुभासा मनुष्य ग्रापसे मनुष्यां की सेवा करे॥

## षोडश पाठ

संशा

षकारान्त शब्द

पुं० द्विष् ( रात्रु )

	ए०	द्वि०	च्
স০	द्विट्	द्विषी	द्विष:
सं०	हे द्विट्	द्विषी	द्विष:
द्धि०	द्विषम्	द्विषी	<b>हिं</b> ष

(श्र) निकटके भूत वा भविष्य के बेघ करने के लिये वर्त्त मानकालकी कियाका भी प्रयोग किया जा सकता है। यथा "श्रंच क्रीग्णामि" इंसका तालप है कि श्राज श्रीव्र मोल लेकेंगा॥

#### सकारान्त शब्द

पुं० चन्द्रमस् ( चन्द्र )			पुं॰ जटायुस्				
	ए०	द्धि॰	ब्	प्र		हि०	ब०
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसैा	चन्द्रमसः	স০ ব	जटायु <u>ः</u>	जटायुषा	जटायुषः
सं०	हे चन्द्रमाः	चन्द्रमसा	च-द्रमसः	सं० हे	जटायुः	जटायुषेा	जटायुषः
द्धि०	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसै।	चन्द्रमसः	द्वि० उ	तटायुषम्	् जटायुषौ	जटायुषः
	पुं० विद्व	स् (विद्वाः	न्)		पुं0 पु	म्स् (पुरुष	)
	(Co	ड्रि॰	ब॰	1	ए०	द्धि०	च्र
प्र०	विद्वान्	विद्वांसा	विद्वांसः	স০	पुमान	् पुमांसा	ुगांसः
सं॰	हे विद्वन्	विद्वांसै।	विद्वांसः	सं० हे	पुमन्	पुमांसा	ं पुमांसः
द्वितं	ो॰ विद्वांस	म् विद्वांसै।	विदुषः	द्विती०	पुमांस	तम् पुमांसा	पुंसः

प्रायः पुंछिङ्ग सकारान्त शब्दों के रूप चन्द्रमस् शब्द के समान होते हैं ॥ विद्रस् इत्यादि शब्दों में जो भेद होता है सो दिखा दिया।

## स्त्री० ग्राशिस् (ग्राशिर्वाद)

	ए०	द्धि०	च०
স৹	अगर्शाः	ग्राशिषौ	ग्राशिषः
सं०	हे आशीः	ग्राशिषौ	ग्राशिषः
<b>展</b> 0	आशिषम्	ग्राशिषौ	ग्राशिषः

नपुं० मनस् ( मन ) नपुं० चक्षुस् ( ग्राँख )

ए० द्वि० व० ए० द्वि० व०

प्र० मनः मनसी मनांसि प्र० चक्षुः चक्षुषी चक्षूषि
सं० हे मनः मनसी मनांसि सं० हे चक्षुः चक्षुषी चक्षूषि
द्विती० मनः मनसी मनांसि द्विती० चक्षुः चक्षुषी चक्षूषि

प्रायः नपुंसकिलक्ष सकारान्त शब्दों के रूप मनस् शब्द के समान होते हैं। जहां पूर्विस्थित इकारादि स्वर वर्ण के कारण से स का मूर्धन्य होना सम्भव है वहां चक्षुस् के समान रूप होते हैं। यथा ज्योतिस् शब्द के ज्योतिः, ज्योतिषी, ज्योतींषि इत्यादि॥

## क्रिया रुघादि गग उभयपदी घातु

## भुज् ( पालन वा भाजन करना ) ॥

पालन ग्रर्थ में परस्मै॰			)	भाजन	ग्रर्थ में ग्रात्म	ने०	
वर्त्तमान			•		वर्त्तमान		
	Qο	द्धि०	च०		Qо	द्धि०	ब्
प्र०	भुनक्ति	<b>भु</b> ङ्कः	भुञ्जन्ति			ग्राज्ञा	
Ho	भुनिक	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	प्र०	भुङ्क	भुङजाते	भुञ्जते
उ०	भुनिजम	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्यः	म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
		ग्राज्ञा		उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्बहे	भुञ्ज्महे
प्र०	भुनक्तु	भुङ्काम्	भुञ्जन्तु	प्र०	भुङ्काम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
Ho	भुङ्गिध	भुङ्कम्	भुङ्क		भुङ्ख	भुञ्जाथाम्	
उ०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

		विधि	
प्र०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
Ho	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उ०	भुञ्ज्याम्	भुङ्याव	भुञ्ज्याम
	9	ग्रन० भूत	
σĸ	ग्रभुनक	ग्रभुङ्काम्	• अभुञ्जन्

प्र० अभुनक् अभुङ्क्ताम् अभुञ्जन् म० अभुनक् अभुङ्क्तम् अभुङ्क्त उ० अभुनजम् अभुञ्ज्व अभुञ्जम

### विधि

प्र॰ भुञ्जीत भुञ्जीयाताम् भुञ्जीरन्
म॰ भुञ्जीथाः भुञ्जीयाथाम् भुञ्जीध्वम्
उ॰ भुञ्जीय भुञ्जीवहि भुञ्जीमहि
स्रन॰ भूत

अभुञ्जन प्र० अभुञ्ज्क अभुञ्जाताम् अभुञ्जत अभुञ्ज्क म० अभुञ्ज्क्षाः अभुञ्जाथाम् अभुञ्ज्वम् अभुञ्जम उ० अभुञ्जि अभुञ्ज्वहि अभुञ्जाहि

### भिद् (भिन्न करना)

पर्स्मै०					ग्रात्मने०	
	वर्त्तमान				वंचेमान	
QD	द्धि०	ब॰		Ψo	द्धि०	ख०
प्र० भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति	प्र	भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते
म० भिनत्सि	भिन्धः	भिन्थ	म०	भिन्त्से	भिन्दाधे	भिन्ध्वे
उ० भिनद्यि	<b>भिन्द्रः</b>	भिन्दाः	उ०	भिन्दे	भिन्द्रहे -	भिन्द्राहे
	ग्राज्ञा				ग्राज्ञा	
प्र॰ भिनत्तु	भिन्ताम्	भिन्दन्तु	प्र०	भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्
म० भिन्धि	भिन्तम्	भिन्त			भिन्दाथाम्	
उ० भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम	उ०	भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै
	विधि				विधि	
प्र॰ भिन्द्यात्	भिन्द्याताम	भिन्द्यः	प्र०	भिन्दीत	भिन्दोयाताम	म् भिन्दीरन्
स० भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात	म०	भिन्दोथा	भिन्दीयाथा	म् भिन्दी ध्वम
उ० भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम	30	भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि

अनद्यतनभूत प्र० अभिनत् अभिन्ताम् अभिन्दन् प्र० अभिन्त अभिन्दाताम् अभिन्दत म॰ अभिनत् , अभिन्तम् अभिन्त अभिनः उ० ग्रिभनदम् ग्रिभन्द्व ग्रिभन्दा उ० ग्रिभन्दि ग्रिभन्द्वहि ग्रिभन्द्वहि

अनद्यतनभूत म० अभिन्थाः अभिन्दाथाम् अभिन्ध्वम्

## क्ष्यं (रोकना)

		परस्मै०		1		ग्रात्मने०	
		वर्त्तमान				वर्त्तमान	
	Qо	द्धि०	ब्		ए०	द्धि०	ৰ৹
प्र०	रुणिद	रुन्धः	रुन्धति	प्र	रुन्धे	रुन्धाते	रुम्धते
म॰	रुणित्स	रुन्धः	रुन्ध	म०	रुन्त्से	रुन्धार्थ	रुन्ध्वे
उ०	रुणिधम	हन्ध्वः	रुन्ध्मः	उ०	रुन्धे	रुम्बहे	रुग्धमहे
		ग्राज्ञा			*	ग्राज्ञा	
ДO	रगदु	रुन्धाम्	रुधन्तु	प्र०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म०	रुस्थि	रुन्धम्	रुत्ध	म०	रुनस्व	रुम्बाधाम्	रुग्ध्यम्
उ०	रुगधानि	रुगधाव	रुखधाम	उ०	रुगाधै	रुखधावहै	रुणधामहै
		विधि				विधि	
प्र०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	<b>हन्ध्युः</b>	प्र०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
Ho	हन्ध्याः	<b>ह</b> न्ध्यातम्	<b>म्ध्यात</b>	म०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	्रुन्धी ध्वम्
उ०	हन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उ०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
	, अन	<b>चितनभूत</b>			3	<b>गनद्यतनभू</b> त	
	, ,	ग्रहन्धाम्	ग्ररुन्धन्	प्र०	ग्रहन्ध	ग्ररुम्याताम्	ग्ररूधत
म् २	ग्रहणत् ,   ग्रहणः ∫	ग्ररुन्धम्	ग्रहन्ध	Ho.	ग्ररुधाः	ग्ररुम्थाथाम्	ग्ररुक्षम्
	ग्रहणधम्		ग्रहन्धा	उ०	ग्रहिंघ	ग्रहन्ध्वहि	ग्रहन्ध्महि

### वाक्यरचना

### संज्ञाशब्द्

स्त्रीं विष् (दिप्ति), प्राह्मष् (वर्षा ऋतु) इ० द्विष्के समान ॥ पुं ० वेधस् (ब्रह्मा), अप्सरस् (अप्सरा) इ० चन्द्रमस्के समान ॥ नपुं ० यशस्, तमस्, पयस् (दूध वा पानी) इ० मनस्के समान ॥ नपुं ० आयुस्, धनुस्, वपुस् (शरीर) इ० चक्षुस् के समान ॥

#### धातु

उभय० युज् ( येाग करना ) इ० भुज् के समान ॥ परस्मै० भञ्ज् ( ताेंड़ना ) के भनक्ति, भङ्कः, इत्यादि रूप होते हैं ॥ उभय० छिंद् ( छिन्नकरना ) भिद्के समान ॥

#### ग्रव्यय

वृथा, हा ( शोकबेधिक ), इदानीम् (इस समय), तदानीम् (उस समय)॥

इति रुधादि गरा॥

#### वाक्य

संस्कृत

द्विषो जय। यशो लभस्व॥ यः पुमान् न विद्वान् न च धार्मिकः स वृथा जीवति॥ हिन्दी

राजा राज्यका पालन करता है ग्रीर सुख भागता है ॥ हे विद्वान संशयका काट ॥

#### वाक्य

संस्कृत द्विषा ब्यूहमभिन्दन् । पुरञ्चारुन्धन् ॥ चन्द्रमास्तमा भिनत्ति॥ बुधा ग्रच्छिनः (३१) शासाम्॥

हिन्दी हाय राज्य भाग रहे 🕻 🛭 इस दण्डे का छा ग्रीर ताड़ा ॥

### सप्तदश पाठ

संशा

#### हकारान्त शब्द

पुं॰ मधुलिह् ( भ्रमर ) द्वि० ब० प्र॰ मधुलिट् मधुलिही मधुलिहः सं० हे मधुलिट् मधुलिही मधुलिहः सं० हे उपानत् उपानही उपानहः द्वि॰ मधुलिहम् मधुलिहै। मधुलिहः

स्त्री० उपानह ( जूता ) द्धि० प्र० उपानत् उपानही उपानहः द्वि० उपानहम् उपानहा उपानहः

(सं०)(३१) स्वरके अनन्तर छकार हो ते। छकारके स्थानमें च्छ हो जाता है। यथा अ + छिनः = अच्छिनः इ०॥

पदान्तमें स्थित दीर्घ स्वरके अनन्तर छकार हो ता उसके स्थानमें च्छ नहों. भी होता है । यथा बृथा + छिनित्स = बृथाच्छिनित्स वा बृथा छिनित्स इस्प्रादि ॥

## ऋजुव्याकरणम्॥

## सर्वनाम शब्द्।

## किम् (कौन)

प्र० कः द्विती० कम्	पुं० की की	के कान्	प्रo द्वितीo	का काम्	स्त्री० के के	, काः काः
			नपुं०			
до	किम्	4	को		कानि	
द्विती०	किम्		के		कानि	

## किया

# ह्वादि गणके उभयपदी धातु

## दा (देना)

	पर्स्मै॰			ग्रात्मने०	
	वर्त्तमान			वर्त्तमान	
पु०	द्धि०	ब०	ए०	द्वि०	অ <b>০</b> ·
प्र॰ ददाति	दत्तः	ददति	प्र० दत्ते	द्दाते	ददते
म० ददासि	दृत्थः .	दत्थ	म० दत्से	ददाधे	दद्भ्वे
उ० ददामि	दहः	द्वाः	उ० ददे	दहहे	दशहे -
	ग्राशा			ग्राज्ञा	4 246
प्र॰ ददातु	दत्ताम्	ददतु	प्र० दत्ताम्	ददाताम्	222m
म० देहि	दत्तम्	दत्त	म० दत्स्व	ददाथाम्	ददताम्
उ० ददानि	ददाव	ददाम	उ० ददे		दद्ध्वम्
			44	ददावहै	ददामहै

	विधि				विधि	
प्र॰ दद्यात्	द्याताम्	दद्यः	प्र०	द्दीत	द्दीयाताम्	ददीरन्
	दद्यातम्	द्यात			द्दीयाथाम्	
उ० दद्याम्	द्द्याव	दद्याम	उ०	ददीय	द्दीवहि	द्दीमहि
	,					
	।नद्यतनभूत			=	प्रनद्यतनभूत	
ब	ानद्यतनभूत	ग्रददुः	য়০		ग्रनद्यतनभूत अद्दाताम्	ग्रददत
म्र० अददात्	ानद्यतनभूत	ग्रददुः ग्रदत्त		ग्रदत्त		ग्रददत ग्रदद्ध्यम् ग्रद्शहि

## धा ( धारण वा पोषण करना )

		परस्मै०				ग्रात्मने०	
		वर्त्तमान				वर्त्तमान	
	ए०	द्वि०	ब०		Œο	द्धि०	অ০
प्र	द्धाति	धत्तः	दधति	प्र०	धत्ते	द्धाते	द्धते
म॰	द्यासि	<b>धत्थः</b>	घत्थ	म०	धत्से	द्घार्थ	दद्ध्वे
उ०	दधामि	दघ्वः	दध्मः	उ०	द्धे	दध्वहे	दध्महे
		ग्राज्ञा				ग्राज्ञा	
प्र०	द्धातु	धत्ताम्	द्धतु	Яo	धत्ताम्	द्धाताम्	द्धताम्
Ho	धेहि	धत्तम्	धत्त	म०	धत्स्व	द्धाथाम्	दद्ध्वम्
उ०	द्धानि	द्धाव	द्धाम	उ०	द्घै	दधावहै	द्धामहै
•		विधि				विधि	
प्रव	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र०	दधीत	द्धीयाताम्	द्धीरन्
	दुव्याः	दध्यातम्	दध्यात			द्धीयाथाम्	
	दध्याम्	दुध्याव	द्ध्याम	उ०	द्घीय	दुधीवहि	दधीमहि

	<b>3</b> x	नंद्यतनभूत		]	33	नद्यतनभूत	
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्धि०	অ০
प्र॰	अद्धात्	ग्रधत्ताम्	अद्धुः	प्रव	ग्रधत्त	ग्रद्धाताम्	अद्धत
Ho	अद्धाः	ग्रधत्तम्	ग्रधत्त	म०		<b>अद्धाथाम्</b>	
उ०	अद्धाम्	ग्रद्घ	अद्धा			<b>अद्ध्व</b> हि	ग्रदध्महि

इति ह्वादि गणके धातु

### वाक्यरचना

#### ग्रव्यय

चित् वा चन (ये अव्यय प्रश्नवाचक राब्दोंके सिद्ध रूपों के अनन्तर लगके उनके प्रयोगोंकी अनिश्चयवाचक बना देते हैं), चेत् (यदि), ना (नहीं)॥

#### वाक्य

#### संस्कृत

विद्या ददाति विनयम् ॥
कानि कानि दुःखानि नाददाच्छत्रुः ॥
उपानुहं धारय । ना चैत् कण्टकानि
पादा विध्येयुः ॥

### हिन्दी

कौन २ फल तुमने कल स्नाये ? मा त्राशीष दे मैं विद्या ग्रीर धन पाऊँ ॥

#### वाक्य

संस्कृत कः कीऽत्र भाः अत्रेदं ( ३२ ) पुस्तकं देहि ॥ मधुलिख माद्यति ( अ )॥ हिन्दी भगवान् विश्वको पोषण करते हैं ॥ यहाँ वह कान पेड़ है जिसमें फूल नहीं छगे हैं ?

### ऋष्टादश पाठ

संज्ञा सर्वनाम राज्द \_सकारान्त ग्रदस् ( वह )

स्त्री॰ Ţο द्वि० ब॰ To To . द्वि० व० ग्रसा ग्रसा ग्रम्. ग्रम्ः ग्रम् ग्रमी प्र प्र द्धि० ग्रम्ः द्धि० ग्रमुम् ग्रम् ग्रमुन् ग्रमुम् ग्रम्

(सं०)(३२) अ के परे इ वाई हो ते। देनों मिल के एक ए ही जाता है। यथा अञ्च + इदम् = अञ्चेदम् इ०॥

आ के परे इ वा ई हो तो दोनों मिलके एक ए क्रो हो जाता है। यथा

ससा + इच्छित = सखेच्छित इत्यादि॥

ग्रा के परे उ वा ऊ हो ते। देानें मिलके एक ग्रेग होता है। यथा गच्छ + उपरि = गच्छोपरि इत्यादि॥

ग्रा के परे उवा ऊ हो ते। दोनों मिलके एक ग्रेग हो जाता है। यथा पिता + उचितं चदति = पिते।चितं चदति इ०॥

( ऋ ) ( सं० ) ( ११ ) के नियमानुसार सन्धि भई है ।

नपुं०

प्र° द्वि° ग्रदः ग्रदः अमू अम्

ग्रमूनि ग्रमूनि

सर्व (सब)(ग्र)

सर्व शब्द के पुँछिङ्ग में बालक शब्द के समान रूप होते हैं केवल प्रथमा के बहुवचन में सर्वाः ऐसा नहीं किन्तु सर्वे ऐसा रूप होता है।

स्त्रीलिङ्ग में विद्या शब्दके समान ग्रीर नपुंसकलिङ्गमें पुस्तक शब्द के समान रूप होते हैं॥

पूर्व शब्द के तीनें। लिङ्गों में सर्व शब्द के समान होते हैं, केवल पुं॰ प्रथमा के बहुवचन में पूर्वें ग्रीर पूर्वाः येां दे। रूप होते हैं॥

अन्य राज्दके रूप तीनों लिङ्गों में सर्व राज्द के समान होते हैं केवल नपुंसक के ए० व० में अन्यम् ऐसा नहीं किन्तु अन्यत् ऐसा रूप होता है।।

<sup>(</sup>ऋ) वाक्यरचना के लिये सर्वनाम शब्दों के ऋति प्रयोजनीय ऋस्मदादि शब्दों के रूप पहिले ही दिखला चुके । रोष सर्वादि, पूर्वादि श्रीर ऋन्यादि शब्दों का भी परिचय इस भाग में यहाँ दिया जाता है ॥

## क्रिया

## अदादि गरा

् परस्मै०				परस्मै०			
	ग्रद्	(खाना)		या (जाना)			
		वर्त्तमान			वर्त्तमान		
	Ф	द्धि ०	्ब॰	щo	द्धि०	ब॰	
No	ग्रति 🤚	ग्रतः	अदन्ति	प्र॰ याति	यातः	यान्ति	
म०	ग्रत्सि	<b>ग्रत्थः</b>	ऋत्थ	म० यासि	याथः	याथ	
उ०	ग्रद्मि	ग्रह:	अद्यः	उ० यामि	यावः	यामः	
		आज्ञा			आज्ञा	1	
प्र०	ग्रतुं	ग्रत्ताम्	ग्रदन्तु	प्र॰ यातु	याताम्	यान्तु	
	ग्रदि	ग्रत्तम्	ग्रत	म॰ याहि	यातम्	यात	
उ०	ग्रदानि	ग्रदाव	अदाम	उ० यानि	याव .	याम	
		विधि			विधि		
Дo	ग्रद्यात् ·	ग्रद्याताम्	ग्रद्युः	प्र॰ यायात्	यायाताम्	यायुः	
	ग्रद्धाः	ग्रद्यातम्	ग्रद्यात	म॰ यायाः	यायातम्	यायात	
	ग्रद्याम्	ग्रद्याव	ग्रद्याम	उ० यायाम्	यायाव	यायाम	
		नद्यतनभूत		3	प्रनद्यतनभूत		
		हि॰	ब०	Q0	द्धि०	ब॰	
	Œ0			प्र० ग्रयात्	ग्रयाताम्	ग्रयान्	
प्रव	ग्रादत्	ग्रात्ताम्	ग्राद्न्			ग्रयुः)	
म०	ग्रादः	ग्रात्तम्	ग्रात्त	म० ग्रयाः	ग्रयातम्	ग्रयात	
उ०	यादम् 🔻	ग्राह	ग्राद्म	उ० ग्रयाम्	ग्रयाव	ग्रयाम	

### ऋजुव्याकरणम् ॥

## उभयपदी

## ब्रू (बोलना)

	परस्मै॰			<b>ग्रात्मने</b> ०	
•	वर्त्तमान			वर्त्तमान	
ए०	द्धि०	ब०	ए०	द्धि०	ब०
प्र॰ ब्रवीति, ग्राह	ब्रूतः, ग्राहतुः	ब्रुवन्ति, ग्राहुः∫	प्र० ब्रते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० ब्रवीषि ) ग्रात्थ	ब्रथः, ो ब्राह्थुः ∫	ब्र्थ	म० ब्रुषे	ब्रुवाथे	ब्रध्वे
उ० ब्रवीमि	ब्रवः	ब्रूमः	उ० ब्रुवे	ब्रवह	ब्रमहे
	ग्राज्ञा			ग्राज्ञा	
प्र० ब्रवीतु	ब्रताम्	ब्रुवन्तु	प्र० ब्रुताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम् 💮
म० ब्रहि	ब्रतम्	ब्रुत	म० ब्रब्द		ब्रध्वम्
उ० ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ० ब्रवै	- 4	ब्रवामहै
	विधि			विधि	
प्र॰ ब्र्यात्	ब्र्याताम्	ब्र्युः	प्र॰ ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम् इ	ब्वीरन्
म० ब्रेयाः	ब्र्यातम्	ब्र्यात	म० ब्रुवीधाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रवीध्वम्
उ० ब्र्याम्	ब्र्याव	ब्र्याम	उ० ब्रुवीय		ब्रुवीमहि
	नद्यतनभूत			ग्रनद्यतनभूत	
प्र॰ ग्रब्रवीत्	ग्रब्रुताम्	ग्रब्रुवन्	प्र० अब्रत	ग्रब्रुवाताम्	ग्रब्रुवत
म० अब्रवीः	ग्रब्र्तम्	ग्रब्रूत	म० ग्रब्र्थाः		
उ० ग्रब्रवम्	ग्रब्र्व	अब्रोम	उ० ग्रब्रिव	अब्रुवहि	ग्रब्रमहि

### वाक्यरचना

### संज्ञाशब्द

विश्व ( सब ), एक, इनके रूप सर्व शब्द के समान होते हैं।।
पर, ग्रपर, स्व, प्रथम, चरम ( ग्रन्तिम ), ग्रन्प, कतिपय (कुछ) इत्यादि
शब्दों के रूप पूर्व शब्द के समान होते हैं।।

इतर ( अल्प ), कतर ( देा में से कैानसा ), कतम (तीन आदिकों में से कैानसा ) इत्यादि शब्दों के रूप अल्य शब्द के रूपेंग के समान होते हैं॥

### धातु

स्ना ( नहाना ), ख्या ( बेालना ), मा ( मापना ), वा ( वायु का बहना), द्रा ( भागना ), नि + द्रा ( स्रोना ), भा ( चमकना ) इ० या धातु के समान ॥

#### ग्रन्यय

ग्रथ ( इसके ग्रनन्तर ), ग्रतः ( इस कारण से ), यतः जिस ( कारणसे ) ततः ( उससे वा उस कारण से ), कुतः ( कहां से वा किस कारण से ) ॥

#### वाक्य

संस्कृत

हिन्दी

नतु सर्वः (३३) सर्वन्न जाना-तीति ब्रवीषि किम् । ग्राम् एवं ब्रवीमि॥

वायु बहता है। कैसे मैं नहाऊं॥ मैं कहता हूं तुम कहां गये थे ग्रीर तुमने क्या खाया था॥

(सं०) (३३) स्वरके अनन्तर रेफके उत्तर स्परा, अथवा य छ, व इनमें से कीई अक्षर हो तो वह दो भी हो सकता है। यथा सर्वः अथवा सर्वः ये दोनों ठीक हैं॥

स्वर के उत्तर स्पर्श, वा य, छ, व इनमें से किसी ग्रक्षर के ग्रनन्तर यदि स्वर ग्रक्षर न पाया जावे ते। वह (स्पर्श वा य, छ, व) दे। भी है। सकता है। यथा विध्यति = विध्ध्यति वा विध्यति इत्यादि॥

किसी वर्गका द्वितीय ग्रक्षर यदि दे किया जाय ते। उन दोनों में से प्रथम के स्थान में उसी वर्गका प्रथम ग्रक्षर ग्रादेश होता है। ग्रीर यदि किसी वर्ग का चतुर्थ ग्रक्षर दे किया जाय ते। उन दोनों में से पहिले के स्थान में उसी वर्गका तृतीय ग्रक्षर ग्रादेश होता है। यथा विध्यति = विद्वचिति इत्यादि॥

#### वाक्य

#### संस्कृत

ग्रहे। ग्रमी (३४) ग्रह्वा यान्ति ॥ रासम ग्राहः । भा न त्वं जानासि गीतम् । ग्रत इदं ब्रवीमि । श्टगाल ग्राह माम ग्रस्त्येतत् ॥ रात्रिरयात् । ग्रथ पश्य पूर्वा दिग्यसतीव (ग्र) ॥

#### हिन्दी

भाइया, नहाग्री, खाग्री, तब जाग्री॥
सब बनिये ग्रीरं ब्राह्मण बेलि कि
छड़के तो जीते हैं। इसने किस
छड़के को खा लिया॥
यह ते। दूसरी वस्तु हैं इसकी मैं
न लाँगा॥

(सं०)(३४) अदस् राब्द के रूप में मकार के उत्तर दीर्घ है अथवा जिस किसी राब्द के द्विचचनान्त सिद्ध रूप के अन्तमें दीर्घ है, उत् वा ए इनमें से कोई स्वर हो ते। उस (ई, उत्त वा ए) के साथ उनके अनन्तर खित किसी स्वर की सिन्ध नहीं होती है। यथा अमी + अद्याः = अमी अध्याः, अमू + अभैकी = अमू अभैकी; कवी + इमी — कवी इमी; शिशू + अत्र = शिशू अत्र; पचेते + एता = पचेते एता, इत्यादि ऐसे की रहेंगे। इनकी सिन्ध नहीं होगी॥

ग्रोकारान्त अन्यय के उत्तर स्थित स्वर के साथ उस अव्यय के अन्त में स्थित ग्रोकार की भी सन्धि नहीं होती है। यथा अहा + ग्रमी = ग्रहा अमी इत्यादि ऐसे ही रहेंगे। इसकी सन्धि नहीं होगी॥

<sup>(</sup> अ ) ( सं० ) ( २० ) के अनुसार दिक् + हसित = दिग्घसित ।

## ऊनविंश पाठ

### संख्यावाचक शब्द (ग्र)

ग्रकारान्त एक शब्द के रूप तीनें छिङ्गों में सर्व शब्द के समान प्रायः एकघचन ही में होते हैं॥

इकारान्त द्वि ( देा ) शब्द के केवल द्विवचन ही में प्रयोग होते हैं। यथा

	पु.0	स्त्री०	नपुं०
	द्धि०	द्वि०	द्धि०
Дo	द्वी	इ	इं
सं॰	हे द्वी	हे	द्वे
द्विती०	द्वी	ं ह्रे	हे

त्रि (तीन) राब्द के ग्रीर इसके ग्रनन्तर के चतुर् (चार) इत्यादि दशन् (दश) राब्द पर्यन्त संख्यावाचक राब्दों के रूप केवल बहुवचन ही में होते हैं। यथा—

<sup>(</sup>ऋ) इस भागके चतुर्थ पृष्ठमें कह आये हैं कि विशेष्य और विशेषण शब्द समान ही लिङ्ग, वचन, और विभक्ति के होते हैं। पर संख्यावाचक विशेषण शब्दों के लिङ्ग वचन में उक्त नियम सर्वदा नहीं माना जाता है, किन्तु किसी किसी संख्यावाचक विशेषण में उक्त नियम पाया जाता है और किसी किसी में नहीं। इस भेदका निर्देश इस पाठमें और आगेके पाठमें भी खल खल पर किया जावेगा।

	· ã.º	स्रो०	नपु ं०
	ब्र०	ब०	ब०
'স০	त्रयः	तिस्रः	त्रीिंग
<b>सं</b> ०	हे त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्विती०	त्रीन्	तिस्रः	त्रींगि
		रेफान्त चतुर	
	पु ०	स्रो॰	नपुं०
	ब०	ब०	ब०
্ম০	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
सं०	हे चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्विती०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि

## नकारान्त पञ्चन् ( पांच )

पञ्चन राष्ट्र के ग्रीर इसके ग्रनन्तर के संख्यावाचक षष्, नकारान्त सप्तन, ग्रष्टन, नवन्, दशन्, इत्यादि राष्ट्रों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं, चाहे उनके विशेष्य किसी लिङ्ग में क्यों न हों॥

## पुं० नपुं० वा स्त्री०

	~	9 611-	
	पञ्चन्	ग्रष्ट्न	( স্থাত )
,	व०		ল্ভ
प्र०	पञ्च	प्र०	∫ ग्रष्टौ, स्रष्ट
सं०	हे पञ्च	सं०	∫ ग्रष्टौ,
द्विती॰	पञ्च	द्विती०	( ग्रष्ट् { ग्रष्टी, { ग्रष्ट

सप्तन् (सात), नवन् (नव), दशन्, इत्यादि नकारान्त संख्यावाचक राष्ट्रों के रूप पञ्चन् के समान होते हैं॥

> षकारान्त षष् (छ) पुं० नपुं० वा स्त्री०

> > ब॰

प्र॰ सं॰ द्विती॰

षट् षट् षट्

किया

परस्मै॰				ग्रात्मने०				
ग्र	ग्रस् (होना वा रहना)				ग्रास् ( वैठना )			
वर्त्तमान					वत्तमान			
Qο	द्वि०	ब॰		ए०	द्धि०	<b>ब</b> ०		
प्र० ग्रहि	त स्तः	सन्ति	प्रव	ग्रास्ते	ग्रासाते	ग्रासते		
म० ऋरि	त स्थः	स्थ	म०	ग्रास्से	ग्रासाथे	ग्राध्वे		
उ० ग्रारि	स स्वः	सः	उ०	ग्रास	ग्रास्वहे	ग्रासह		
	ग्राज्ञ				ग्राज्ञा			
प्र० ग्रस्	तु स्तार	म् सन्तु	प्रव	ग्रास्ताम्	ग्रासाताम्	ग्रासताम्		
म० पश्चि	र स्तम	(स्त	म०	ग्रास्स्व				
उ० ग्रस	ानि अर	राव असाम	उ०	ग्रासै	ग्रासावहै	ग्रासामहै		
	विधि				विधि			
प्र० स्या	त् स्यात	ाम् स्युः	प्र०	ग्रासीत	ग्रासीयाताम्	्र <b>ग्रासीर</b> न्		
म० स्या	: स्यात	ाम् स्यात	म०	ग्रासीथ	ः ग्रासीयाथा	म् ग्रासीध्वम		
उ० स्या	म् स्याव	ा स्याम	उ०	ग्रासीय	ग्रासीवहि	ग्रासीमहि		

#### ग्रनद्यतनभूत

प्र० ग्रासीत् ग्रास्ताम् ग्रासन् म० ग्रासीः ग्रास्तम् ग्रास्त उ० ग्रासम् ग्रास्व ग्रास

#### ग्रनद्यतनभूत

प्र० ग्रास्त ग्रासाताम् ग्रासत म० ग्रास्थाः ग्रासाथम् ग्राध्वम् उ० ग्रास्त ग्रास्वहि ग्रासहि

### वाक्यरचना

वाक्य

#### संस्कृत

पक (३५) ब्रास्तै अपरेग याति ।
विभक्तयः सप्त । लिङ्गानि वचनानि च त्रीणि । दश लकारा
दशैव च गणाः । समासाः कारकाणि तु पट् षड् भवन्ति । पकश्चन्द्रो द्रौ पक्षौ त्रयो गुणाश्चत्वारेग
वेदाः पञ्च प्राणाः षड् ऋतवः
सप्त भुवनान्यष्टौ वसवा नवग्रहा
दश दिशो भवन्ति ॥

#### हिन्दी

यहां पाँच लड़के बैठे हैं ॥
यहां तीन स्त्रियां बैठी हैं ॥
सात घोड़े ग्रीर छ गायें कल हमने
मोल लीं ॥
तीन लड़कियां ग्रीर दें। लड़के खेल
रहे हैं ॥
चार पाथियां मैंने पढ़ लीं ।
उसने ता दें। एक लड़की ग्रीर दें।
लड़के खेलते हैं ॥

(सं०) (३५) पदान्त में स्थित विसर्ग के पूर्व में यदि ग्रकार है। ग्रीर उस विसर्ग के ग्रनन्तर ग्रकार की छोड़ के यदि कोई दूसरा स्वर ग्रावे ते। उस विसर्ग का छोप हो जाता है ग्रीर फिर सिन्ध नहीं होती है। यथा एकः + ग्रास्ते = एक ग्रास्ते इ०॥ रेफ के स्थान में जो विसर्ग होता है उसके छिए यह नियम नहीं है। यथा भ्रातः + ग्रागच्छ = भ्रातरागच्छ इसादि॥

## विंश पाठ

संख्यावाचक इकारान्त स्त्री० विंशति ( बीस ) ( अ ) शब्दके रूप स्तुति शब्द के समान होते हैं ॥

षष्टि (साठ), सप्तित (सत्तर), अशीति (अस्सी), नवति (नह्वे), इन संख्यावाचक शब्दोंके रूप विंशतिशब्द के समान स्त्री० में ही होते हैं ग्रीर विंशति इत्यादि शब्द जिनके अन्त में हैं। उन (एकविंशति इत्यादि) संख्या-वाचक शब्दोंके रूप भी विंशति इत्यादि ही के समान स्त्री० में होते हैं॥

तकारान्त स्त्री॰ त्रिंशत् (तीस) शब्दके रूप सरित् शब्दके समान होते हैं।

चत्वारिंशत् ( चालीस ), पञ्चाशत् (पचास) इन संख्यावाचक शब्दोंके रूप त्रिंशत् शब्दोंके समान स्त्री॰ ही में होते हैं ग्रीर ये शब्द जिनके अन्तमें ही उन ( एकत्रिंशत् इत्यादि ) संख्यावाचक शब्दों के रूप भी त्रिंशत् शब्द ही के समान स्त्री॰ में होते हैं ॥

<sup>(</sup> ऋ ) विशति श्रीर इसके अनन्तरके संख्यावाचक शब्द विशेषण श्रीर विशेष्य देनों होते हैं । जब विशेषण होते हैं तब एक ही बचनमें उनका प्रयोग होता है चाहे उनका विशेष्य किसी बचनमें क्यों न हो । श्रीर लिङ्ग भी उनका श्रपनाही रहता है चाहे विशेष्य मा लिङ्ग जो कोई क्यों न हो यथा—विशतिः पुरुषागच्छन्तिः, विशतिमश्चान् कीणामिः, विशति फलानि भन्नयामि इत्यादि । इसी प्रकार सहस्र स्त्रियः, लन्न श्रश्थाः, कोटिर्मनुष्याः, इत्यादि प्रयोग होते हैं ॥

ग्रकारान्त नपुंसकलिङ्ग शत (सा) शब्दके रूप फल शब्दके समान होते हैं।

सहस्र, ( हज़ार ), त्र्रयुत (दशहज़ार), लक्ष (लाख), नियुत (दशलाख) इनके रूप शत शब्दके समान नपुं० ही में होते हैं ॥

हस्य इकारान्त स्त्री॰ कोटि ( करोड़ ) शब्दके रूप स्तुति शब्दके समान होते हैं ॥

हस्य इकारान्त कित (कितना) शब्दोंके रूप तीनों छिङ्गोंमें समान ग्रीर सदा० ब० व० में होते हैं। यथा—

पुं० नपुं० वा स्त्री० ब०

 प्र०
 कति

 सं०
 हे कित

 द्विती०
 कित

पेसे ही यति (जितना), तति (तितना) इन शब्दों के भी रूप होते हैं।

# किया

## परस्मै०

	रुद् (रोना	)	1		हन् हनना	
	वर्त्तमान				वर्त्तमान	
ए०	द्धि०	ब॰		<b>T</b> 0	द्धि०	ब०
प्र॰ रोदिति	रुद्तिः	रुदन्ति	স০ ঃ	इन्ति ं	हतः	घ्रन्ति
म० रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ	म० ह	इंसि '	हथः	हथ
उ० रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः	₹ 05	हान्म	हन्वः	हन्मः

म०	रेादितु रुदिहि रोदानि	ग्राज्ञा रुदिताम् रुदितम् रोदाव	रुदन्तु रुदित रोदाम	Ho	हन्तु जहि हनानि	ग्राज्ञा हताम् हतम् हनाव	न्नन्तु हत हनाम
म० ।	<u>च्चाम्</u>	विधि श्याताम् श्यातम् श्याव स्याव	रुद्युः रुद्यात रुद्याम	Ho	हन्यात् हन्याः हन्याम्	विधि हन्याताम् हन्यातम् हन्याव	हन्युः हन्यात हन्याम
म० क	प्रोदीत्,)	ग्रहदिताम् ग्रहदितम् ग्रहदिव	ग्रहदन् ग्रहदित ग्रहदिम	म०	ग्र ग्रहन् ग्रहन् ग्रहनम्	नद्यतनभूत ग्रहताम् ग्रहतम् ग्रहत्व	ग्रप्नन् ग्रहत ग्रहत्म

स्वप् (सोना)

वर्ते० ग्राज्ञा विधि ग्रन० भूत प्र० ए० स्विपिति स्विपितु स्विप्यात् ग्रस्विपति वा ग्रस्विपत् इत्यादि रोदिति इत्यादि के समान रूप होते हैं।

	परस्मै॰				ग्रात्मने०			
जागृ (जागना )				शी (सोना वा लेटना)				
		वत्तेमान				वर्तमान		
	ए०	द्धि०	ब०		Q0	द्वि०	<u>ब</u> 0	
	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति	प्रव	शेते	शयाते	शेरते	
म०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ	म०	<b>रोषे</b>	शयाथे	रोध्वे	
उ०	जागमि	जागृवः	जागृमः	30	शये	शेवहे	शेमहे	

		ग्राज्ञा		ग्राज्ञा					
	ФФ	द्धि०	ब०		Ųο	द्धि०	ब०		
प्र०	जागत्	जागृताम्	जात्रतु	प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्		
म०	जागृहि	जागृतम्	जागृत	स०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्		
	जागराणि	जागराव	जागराम	उ०	शयै	शयावहै	शयामहै		
विधि						विधि			
प्र०	जागृयात्	जागृयाता	न् जागृयुः	प्र॰	<b>श्यात</b>	शयीयाताम्	शयीरन्		
	जागृयाः	जागृयातम्		म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्		
	जागृयाम्		जागृयाम	उ०	शयीय	शयीवहि	श्यामहि		
ग्रनद्यतनभूत					ग्रनद्यतनभूत				
प्र०	अजागः अ		अजागरः	प्र०	ग्रशेत 🏻	अशयाताम्	ग्रशेरत		
	ग्रजागः उ		ग्रजागृत	Ho	ग्रशेथाः	ग्ररायाथाम्	ग्रशेध्वम्		
उ०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम	उ०	ग्रशिय	ग्रदोवहि 📉	ग्रशेमहि		

इति अदादिगणके धातु

### वाक्यरचना

यास ( सांस लेना ), अन् ( जीना ) इनके रूप स्वप् के समान होते हैं ॥ वाक्य

#### संस्कृत

वीरः शतं शश्रनजयत्। सहस्रं शत्रवीऽधुनापि विद्यन्ते॥ जन् लक्षं मुद्रा गृह्युण मुञ्च माम्। मे स्वं गृहम्॥ विचित्पक्षिणस्तिष्ठन्ति। विचिद्धीयन्ते॥ चाशतं पत्राण्यपठम्। त्रिंशतन्तु पठामि॥ वं सैनिका जात्रति। अन्ये सर्वे पन्ति॥ इन्यान्न मतिं दद्यात्॥

#### हिन्दी

मैंने पचास पुस्तकों को कल पढ़ डाला। तूने ता तीसही पढ़ीं; भला यह पूंछता हूँ कि इसने कितनी पढ़ीं? यदि एक लाख मनुष्य ग्रार दश सहस्र घाड़े हां ता में ग्रवश्य लड़ाई करूं॥ इसने ता दश लाख कमाये।। तुमने कितने कमाये।

इति





## प्रस्तावना.

यह तत्त्वबोधप्रकरण श्रीमच्छंकराचार्ययतीश्वरकृत वेदांतप्रकरण संस्कृतवार्तिक सो यह मुमुक्षु पुरुषोंके अर्थ बहुत श्रेष्ठ है, काहेतें की इसकों प्रथम गुरुद्वारा अच्छीप्रकार जाननेतें वेदांतविषे पुरुषौंकी प्र-वृत्ति भलेप्रकारतें होती है, और यह प्रकरण मुक्तिमार्गमें आरूढ हो-नेकी प्रथम निसेनीका एक पाद है. इस कारणतें हमनें इसकी भा-षाविषे सीधी सरल टीका करी है. जिसमें हरएकके समझनेमें भली-प्रकारतें आवे और जहांजहांपर इसमें कठिन पद हैं तहांतहां तिस पद-नका तात्पर्यरूप सिद्धांत मलीप्रकारतें हमनें इसमें प्रकाश करा है. काहेतें इस समयमें विद्या और धर्मके न्यूनताकरिके और अधर्मकी वृद्धि होनेतें पुरुषोंकी बुद्धि स्थूलताकों प्राप्त है, इस कारणतें इस ज्ञा-नकांडमें पुरुषोंकी प्रवृत्ति संस्कृतमें पदार्थनके जाननेविना होती नहीं, और इस ज्ञानकांडमें शुद्ध अंतःकरणवालेकाअधिकार है, तातें जो पुरुष संस्कृत विद्यांकों अच्छीतरहसें नहीं जानते तिनके अर्थ यह भा-षाटीका अति उत्तम है, और विवेकी पुरुषैंतिं हमारी यह प्रार्थना है, की जो इसमें बुद्धीकी चंचलतातें विपरीत अर्थ प्रतीत हो, सो कृपा-करिकै सुधारि देवै और लेखक लोगनकों भी यह योग्य हैकी इसमें जितने अक्षर और पद जहांपर जैसे होइ वैसाही लिखें, जिसमें कोई पदार्थनका उलटपलट नहीं होवै. काहेतें की भाषाग्रंथोंकों हरएक देशके लेखकौंने नष्ट करिदिया है, यथार्थग्रंथकर्ताकी परि-पाटी रही नहीं इति.

॥ ॐश्रीगणेशाय नमः॥

# श्रीतत्त्वबोधः।

# अयं भाषाटीकासहितो लिख्यते।

## ॥ दोहा ॥

श्रीयरुगौरिगनेशके, बंद हुं पद करजोरि ॥ श। कृत परम विचित्र यह, टीका करत निहोरि ॥ १॥ श्रीशंकरआनंदकृत, जिज्ञासनके हेत ॥ ताकी में भाषाविषे, टीका करत सचेत ॥ २॥ वासुदेवपद-पंकरुह, ग्रुरुमूरित नररूप ॥ श्रीशंकरके चरणयुग, वंद हुं परम स्वरूप ॥ ३॥ जाके सुमिरनतें मिटत, महाव्याधि भवरूप ॥ दुःखहरण सब सुखकरन, यतिराजनके भूप ॥ ४॥

वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं ग्रहम् ॥ सुसुक्षणां हितार्थायतत्त्वबो-धोमिधीयते ॥ १ ॥

टीका:-मैं जो हूं शंकराचार्य सो "नला ज्ञा-नप्रदं ग्रहम्" 'ज्ञानप्रदं' कहे ज्ञानके देनेवाला जो है यरु तिसकों 'नला' कहे नमस्कार करिकै मुमुक्ष जो हैं मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुष, तिनके हित-के अर्थ तत्त्वबोध कहे पृथिवी, जल, तेज, वायु, आ-काश, तिनका कारण, कार्य अरु स्वरूप जिसतें जाना जाता है तिसका प्रकरण 'अभिधीयते' कहे कहते हैं. सो यर कैसा है? वासुदेव कहे जो सर्वभ्र-तनकेविषे अंतरजामी अधिष्ठानचेतनस्वरूप वास करता है, अर्थ यह वसता है 'वसंत्यस्मिनभूतानीति वासुदेवः' इति श्रुतेः एरुगीतामेंभी कहा है-"नि-त्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ॥ नित्यबो-धं चिदानंदं एरं ब्रह्म नमाम्यहम् ॥१॥ गूढा विद्या योगमाया देहमज्ञानसंभवः ॥ उदयं स्वप्रकाशेन ए-रुशब्देन कथ्यते ॥ २ ॥" अरु 'इदं' कहे परम श्रेष्ठ जिसतें परे जगतविषे और कोई दूसरा श्रेष्ठ है न-

हीं और एक कैसा है? 'योगीन्द्र, कहे योगि-राजनकाभी राजा है; यह अर्थ है ॥ १ ॥ साधनचतुष्ट्रयसंपन्नाऽधिकारिणां मो-क्षसाधनभूतं तत्त्वविवेकप्रकारं व-क्ष्यामः ॥

टीका:—साधनचतुष्टयसंपन्न कहे साधन जो हैं चारि प्रकारके, तिनकरिके संयुक्त जो हैं अधिकारी पुरुष, तिनके अर्थ मोक्षसाधनभूत कहे मोक्षका साधन जो है तत्त्वविवेक कहे पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पंचमहाभूत, तिनके साथ एकता, अर्थात एकमें मिलिके अभेद सचिदानंद बहा जगतका उपादानकारण है, तिसकी जीवसंजा है, तिसकों पंचभूतनतें जुदा करना, तिसका जो है प्रकार कहे रीति सो 'वध्यामः' कहे कहतेहैं वा कहेंगे; अर्थ यह है।

साधनचतुष्टयं किम् ॥ नित्यानित्य-

वस्तुविवेकः ॥ १ ॥ इहामुत्रार्थफल-भोगविरागः ॥ २ ॥ शमादिषद्संप-त्तिः ॥ ३ ॥ मुमुश्चलं चेति ॥ ४ ॥

टीकाः-पश्च-साधन ज्यारिप्रकारके कौन, कौन हैं? उ०-पहिला साधन नित्य अरु अनित्य वस्तुका विवेक है॥ १॥ दूसरा साधन लोकपरलोक-का विराग है॥ २॥ तीसरा साधन शमादि छे संपं-त्ती हैं ॥ ३॥ अरु चौथा साधन मुमुक्षुता है॥ १॥

नित्यानित्यवस्तुविवेकः कः । नि-त्यवस्त्वेकं ब्रह्म तद्द्यतिरिक्तं सर्व-मनित्यं । अयमेव नित्यानित्यव-स्तुविवेकः ॥

टीकाः-प्र०-'नित्य' अरु अनित्यवस्तुका वि-वेक किसकों कहते हैं? उ०-नित्य कहे सत्य एक ब्रह्मवस्तु हैं, 'तद्रचतिरिक्तं' कहे तिस ब्रह्मतें भिन्न सर्व जगत 'अनित्यं' कहे असत अर्थात् मिथ्या है, ऐसे निश्रयका नाम नित्यानित्यवस्तुका विवेक है, इसकों नित्यानित्यवस्तुविवेक कहते हैं, सो यह पहिला साधन सर्व साधनोंका मूलकारण है.

विरागः कः। इह स्वर्गभोगेषु इ-च्छाराहित्यम्।

टीका:-प्र०-विराग किसकों कहते हैं? उ०-'इह' कहे यह लोक वा देह ओर स्वर्गके भोगों-विषे इच्छारहित, अर्थ यह-इसलोक और परलो-कके विषयभोगोंकी वासनाका त्याग करना इ-सका नाम वैराग्य है, यह अर्थ है।।

शमादिसाधनसंपत्तिः का । शमोद-म उपरमस्तितिक्षा श्रद्धा समाधानं चेति ॥

टीकाः-प्र०-शमादि साधनसंपत्ति कौन कौन हैं?उ०-शम १, दम २, उपरित ३, तितिक्षा ४, श्रद्धा ५, समाधानता ६, ये छे संपत्ती हैं, इनका अर्थ स्पष्ट है, इति ॥

श्रादिबाह्येन्द्रियनिग्रहः। उपरमः कः। स्वधर्मानुष्ठानमेव । तितिश्रा का। शितोष्णसुखदुःखादिसहिष्णु-लम्। अद्या कीदृशी। ग्रुस्वदांतवा-क्यादिषु विश्वासः अद्या। समा-धानं किम्। चित्तैकाग्रता॥

टीकाः-प्र०-शम किसकों कहते हैं? उ०-मनकों निग्रह कहे वश करना, अर्थ यह-मनकों वि-षयनतें हटाना, इसका नाम शम है. प्र०-दम किस-कों कहते हैं? उ०-नेत्रादि बाहिरकी इंदियनकों वशी करना, इसका नाम दम है. प्र०-उपरम कि-सकों कहते हैं? उ० स्व कहे अपने धर्मका अनु- ष्ठान करना, अर्थात् चेतनसाक्षी धर्मकी निष्ठा क-रिके, शब्दस्पर्शादि सर्व विषयनतें चित्तकी नि-वृत्ती करना. तात्पर्य यह-सर्वविषयनतें चित्तकी निवृत्ति कहे त्याग करनाः अर्थ यह सर्व बाह्यधर्म-नतें उपराम कहे निवृत्त होना इसका नाम उप-रति है. प्र०-तितिक्षा किसकों कहते हैं? उ०-शीत, उष्ण कहे सरदी और गरमी सुखदःखादि अरु मान अपमान आदिकों धीरज करिकै सहना, इ-सका नाम तितिक्षा है. प्र०-श्रद्धा किस प्रकारकी होती है? उ०-एक और वेदान्तवाक्यनविषे वि-श्वास करना की, जो एर और वेदांत कहते हैं सो यथार्थ है, इसका नाम श्रद्धा है. प्र०-समाधानता किसकों कहते हैं? उ०-चित्तकी एकायता कहे ग्ररु और वेदांतके वाक्यनकों आलसते रहित चित्तकों, स्थिर करिकै प्रीतिपूर्वक सुनाना इसका नाम समाधानता है, सो यह तीसरा साधन है॥ मुमुक्षुतं किम् । मोक्षो मे भूया-दितीच्छा॥

टीका:-प्र॰-मुमुक्षता किसकों कहते हैं? उ॰-इस संसारके दुःखनतें मेरी मोक्ष कहे निवृत्ति होइ, ऐसी इच्छाका नाम मुमुक्षता है, सो यह चौथा साधन है.

एतत्साधनचतुष्टयं ॥ ततस्तत्त्वविवेकः स्याधिकारिणो भवंति । तत्त्वविवेकः कः । आत्मा सत्यस्तदन्यत् सर्वं मि-थ्येति । आत्मा कः ॥

टीकाः—ये चारि प्रकारके साधन हैं तिनकों प्रथम यत्नपूर्वक साधन करें। तब तत्त्वविवेकका अधिकारी होता है। प्र०—तत्त्वविवेक किसकों कहते हैं? उ०—आत्मा कहे अपने आप सत्य है तिसत्तें 'अन्यत्' कहे भिन्न जो है नामरूप दैतजगत,

सो मिथ्या है, ऐसे निश्रयका नाम तत्त्वविवेक हैं. प्र-आत्मा किसकों कहते हैं यह अर्थ है. स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराद्व्यतिरिक्तः पंचकोशातीतः सन् अवस्थात्रयसा-क्षी सचिदानंदस्वरूपः सन् यस्तिष्ठ-ति स आत्मा॥

टीकाः—उ०—स्थूल, सूक्ष्म अरु कारण शरी-रतें अतिरिक्त कहे जदा अरु पंचकोशनतें परे सो अवस्था तीनिका साक्षी अर्थात् देखनेवाला, तिन-तें भिन्न सत् चित् आनंदस्वरूप कूटस्थ जो 'तिष्ठ-ति' कहे तीनि शरीरनके बाहिरभीतर स्थित है, सो आसा है इति ॥

स्थूलशरीरं किम् । पंचीकृतपंचमहा-भूतेः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुः-खादिभोगायतनं शरीरं अस्ति जा-यते वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते

## विनश्यतीति षड्विकारवदेतत्स्थूलश-

टीकाः-प्र०-स्थूल शरीर किसकों कहते हैं? उ०-जो पंचीकृत पंचमहाभूतनतें पुण्यपापरूप कर्मजन्य अर्थात् उत्पत्ति, सो कर्मनके फल जो हैं सुख अरु दुःखरूप भोग, तिनका आयतन कहे स्थान वा घर यह स्थूलशरीर जो वर्त्तमानकालमें स्थित है, सो जायते कहे माताके गर्भतें उत्पन्न हो-ता है और उत्पत्ति भये पीछे माताका दूध पीकै बढता है, और बढिकै अन्नादिक भक्षणतें पलता है, ओर परिणमते कहे कुमार युवा आदि अवस्था-वाला होता है, फेरि अपश्रीयते कहे वृद्ध होजाता है, अरु अंतमें नाश होता है ऐसे, पर विकाखत् आदिअंतवाला यह स्थूल शरीर है। इति॥

सूक्ष्मशरीरं किम् । अपंचीकृतपंचम-हाभूतेः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुः- खादिभोगसाधनं पंचज्ञानेन्द्रियाणि पंच कर्मेन्द्रियाणि पंचप्राणादयः म-नश्चैकं बुद्धिश्चेका एवं सप्तदशक-लाभिः सह यत्तिष्ठति तत्सूक्ष्मश-रीरम्॥

टीकाः-प्र०-स्क्ष्मशरीर किसकों कहते हैं? उ०-जो अपंचीकृत पंचमहाभूतनतें सत्कर्मजन्य कहे सत्कर्मनतें उत्पत्ति जिसकी, सुखःदुखभोगन-का जो साधन, सो पंच ज्ञानइंद्री, पंच कर्मइंद्री, अरु पंच प्राण, एक मन, एक बुद्धि, इसप्रकार सत्तरहक-लाकरिके 'सह' कहे सहित जो 'तिष्ठति' कहे स्थित है सो सूक्ष्मशरीर है। इति॥

श्रोत्रं तक चक्षः रसना घाणं इति पंच ज्ञानेन्द्रियाणि। श्रोत्रस्य दिग्दे-वाता। त्वचो वायुः। चक्षुषः सूर्यः। रस-नाया वरुणः। घाणस्य अश्विनो इति

ज्ञानेन्द्रियदेवताः । श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम् । त्वचो विषयः मपर्श-ग्रहणम् । चक्षुषो विषयः रूपग्रहण-म्। रसनाया विषयः रसग्रहणम्। घाणस्य विषयो गंधग्रहणम् इति ॥ टीकाः-शोत्र कहे कान त्वक् कहे चर्म, नेत्र, जीभ, नासिका, ये पंच ज्ञानइंद्रिय हैं, श्रोत्रनके देवता दशदिशा, चर्मकौ देवता वायु, नेत्रोंका सूर्य, रसनाका वरुण, नासिकाके देवता अश्विनीकुमारः ये पंच ज्ञानइंद्रियनके पंच देवता हैं. ओर श्रोत्रोंका विषय शब्दकों यहण करना, चर्म इंदीका विषय स्पर्शकों ग्रहण करना, नेत्रोंका विषय रूपकों ग्रह-ण करना, रसनाका विषय रस ग्रहण करना, ना-सिकाका विषय गंधकों प्रहण करना । इति ॥ वाक्पाणिपादपायूपस्थानीति पं-चकमेंद्रियाणि॥ वाचो देवता व-

हिः।हस्तयोरिंद्रः।पादयोर्विष्णुः। पायोर्मृत्युः। उपस्थस्य प्रजाप-तिः इति कर्मेन्द्रियदेवताः॥ वाचो विषयः भाषणम्।पाण्योर्विषयः वस्तुग्रहणम्। पादयोर्विषयः ग-मनम्।पायोर्विषयः मल्त्यागः। उपस्थस्य विषयः आनंद इति।

दीकाः चानी, हाथ, चरन, गुदा, लिंग, येपंच कर्मइंद्री हैं. बानीका देवता विह्न अर्थात् अमि, हाथ-नका देवता इंद्र है, चरननका देवता विष्णु, गुदा-का देवता यमराज, लिंगका देवता मजापति ब-ह्या, ये पंच कर्मइंद्रिनके पंच देवता हैं, बानीका विषय भाषण अर्थात् बात करना, हाथनका विषय वस्तुका लेना देना, चरननका विषय गमन करना, गुदाका विषय मल त्यागना, लिंगइंद्रीका विषय वि-षयानंद करना, ये पंच कर्मइंद्रिनके पंच विषय हैं इति कारणशरीरं किम्। अनिर्वाच्याना-द्यविद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारणमात्रं सत् स्वस्क्षपाऽज्ञानं निर्विकल्पक-रूपं यदस्ति तत्कारणशरीरम्॥

टीका:-प्र०-कारणशरीर किसकों कहते हैं? उत्तर-अनिर्वाच्य कहे जो सत्य झूठ नहीं कही जाई, काहेतें जो मायाकों झूठी कहै तो जगतकी उत्पत्ति नहीं बनैगी, अरु जगतकों माया उत्पन्न करती है, अरु सत्य कहै तौ ज्ञानतें नाश होती है, जैसे रस्सीविषे सर्पकों झुठा कहै तौ भयकंपादि होतेहैं सो नहीं हुवा चाहिये, अरु सत्य कहे तौ विचारतें नाश होताहै. तातें अनिर्वचनीय है. अ-र्थ यह-ना सत्य है अरु ना झुउ है अरु अनादि कहे उत्पत्तिरहित अविद्या कहे अज्ञान अरु स्थूल-सूक्ष्मशरीर दोनोंका कारणमात्र कहे बीज है सो, स्वस्वरूपका अज्ञान निर्विकल्प कहे कल्पनार-हित जो रूप है, सो कारणशरीर है, इति ॥

अवस्थात्रयं किम्। जाग्र-त्स्वप्रसुषुप्त्यवस्थाः॥

टीकाः-प्र॰-अवस्था तीनि कौन हैं? उ॰जाग्रत, स्वप्नऔर सुष्ठित ये तीनि अवस्था हैं,इति॥
जाग्रदवस्था का। श्रोत्रादिज्ञानेंद्रियेः शब्दादिविषयेश्च ज्ञायते इति
यत् सा जाग्रदवस्था। स्थूलशरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते॥

टीकाः-प्र०-जाप्रत अवस्था किसकों कहते हैं? उ०-श्रोत्र कहे श्रवणादि जो हैं पंच ज्ञानइंदी अर्थात श्रवण, लचा, नेत्र, रसना और नासिका तिनकरिक जो शब्दादि कहे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन पांच विषयनकों प्रत्यक्ष ज्ञायते कहे जानते अर्थात् भोगते हैं, स्थूलभोगनकों तिसका नाम जाप्रत् अवस्था कहे काल वा समय है, सो यह जो जाप्रत् अवस्था है, स्थूलशरीरविषे वर्त्तमान स्थूल- भोगनकों साक्षात् भोगनेवाली तिसका अभिमानी विश्वात्मा है, अर्थ यह स्थूलशरीर जाग्रत् अवस्था और स्थूलभोग भोगनेवालेका नाम विश्वात्मा है, सो यह विश्वात्मा जाग्रत् अवस्थाका साक्षी, अवस्थातें आप भिन्न है, इति ॥

स्वप्नावस्था केति चेत्। जाग्रदवस्था-यां यत् दृष्टं यच्छुतं तज्जनितवास-नया निद्रासमये यः प्रपंचः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था। सुक्ष्मशरीराभिमा-नी आत्मा तजस इत्युच्यते॥

टीका:-प्र०-स्वप्नावस्था किसकों कहते हैं? उ०-जाग्रत् अवस्थाविषे जो नानाप्रकारके पदार्थ देखते हैं, और सुनते हैं, भोगते हैं, तज्जनित कहे तिसतें उत्पत्ति भई जो वासना सो निद्रासम-यमें प्रतीत होती है अर्थात् वासनारूप प्रपंचकी प्रतीत होनी तिसका नाम स्वप्नावस्था, अर्थात् यह स्वप्नकाल है, सो यह स्वप्नावस्था स्ध्मशरीरमें होती है, तिसके अभिमानीका नाम तैजस आ-त्मा है. अर्थ यह स्वप्नावस्था स्ध्म शरीर और स्-ध्म वासनामयभोग भोगनेवाला तैजस कहे तेज-रूप अपने प्रकाशकरिक प्रकाशमान साक्षी अव-स्थातें भिन्न, तिसका नाम तैजस आत्मा है इति॥

अतः सषुत्यवस्था का । अहं कि-मिप न जानामि सुखेन मया नि-द्रानुभूयत इति सुषुत्यवस्था । का । रणशरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते ॥

टीका:-प्र०-और सुष्ठिम अवस्था किसकों कहते हैं ? उ०-में कुछभी नहीं जानता भया, अ-र्थात मेरेकों कुछभी खबर नहीं रही कि में कौन हों और कहांपर सोया हूं. इसप्रकार ऐसे सुखतें मेरेकों चोर निद्रा आई की बहेही आनंदतें सोया, ऐसे अ-नुभव करनेका नाम सुष्ठित अवस्था है. सो इस सु-ष्ठित अवस्थामें कारणशरीर आनंदमयकोश सुष्ठित अवस्था आनंदभोग तिसका अभिमानी प्राज्ञ आ-तमा है, अर्थ यह—अपने आनंदस्वरूपके भानरिह-त अज्ञानका साक्षी तिसतें भिन्न जगत्का कारण यह प्राज्ञ आत्मा ईश्वर हैः "आनंदश्चक्चेतोसुखः" इति श्वतः ॥ इस सुष्ठित अवस्थामें आनंदका मोग-नेवाला केवल आनंदरूप सुख्य चेतनही है, और कोई दूसरा नहीं यह श्रुति कहती है इति ॥

पंच कोशाः के। अन्नमयः प्राणमयः मनोमयः विज्ञानमयः आनंदमय-श्चेति॥

टीका:-प्र०-पंचकोश कौन कौन हैं ? उ०-अन्नमय १, प्राणमय २, मनोमय ३, विज्ञानमय ४, आनंदमय ५, ये पंचकोश हैं इति ॥ अन्नमयः कः। अन्नरसेनैव भूला अ-न्नरसेनैव दृद्धि प्राप्य अन्नरूपपृथि-व्या यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः। स्थूलशरीरम्

टीका:-प्र०-अन्नमय किसकों कहते हैं? उ०-अन्नरसकरिकै जो होता है अरु अन्नतेंही वधता है अरु अन्नरूप पृथिवीमें लीन होता है, सो अन्नमय कोश स्थूलशरीर है इति॥

प्राणमयः कः। प्राणादिपंचवायवः॥ वागादींद्रियपंचकं प्राणमयः॥

टीका:-प्रश्नाणमय किसकों कहते हैं? उ॰-प्राणआदि कहे प्राण १, अपान २, ब्यान ३, उदान ४, समान ५, ये पंच वायु अथवा प्राण अ-रु वाणी आदि पंच कर्मइन्द्रियसहित प्राणमय कोश होता है, इसका नाम कियाशक्ति है. अर्थ यह-जितनी शरीरमें किया होती हैं, सो इस प्रा-

मनोमयः कोशः कः। मनश्च ज्ञानें-द्रियपंचकं मिलिला भवति स म-नोमयः कोशः॥

टीका:-प्र॰-मनोमयकोश किसकों कहते हैं? उ॰-एक मन और श्रोत्रादि पंच ज्ञानइंद्री मि-लिकै जो होता है सो यह मनोमय कोश है. इस-का नाम इच्छाशक्ति है. अर्थ यह-जो जो वस्तुकी इच्छा होती है सो सो मनोमय कोशकों होती है॥

विज्ञानमयः कः। बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियपं-चकं मिलिला यो भवति स विज्ञा-नमयः कोशः॥

टीका:-प॰-विज्ञानमयकोश किसकों कह-ते हैं? उ॰-एक बुद्धि अरु श्रोत्रादि पंच ज्ञानइंदी मिलिके विज्ञानमय कोश होता है, इसका नाम ज्ञानशक्ति है जो छछ ज्ञात अज्ञात वस्तु है, सो इस विज्ञानमय कोशकों होती है, तातें इसका नाम ज्ञानशक्ति है।

आनंदमयः कः। एवमेव कारणशरी-रभूताविद्यास्थमिलनसत्त्वं प्रिया-दिवृत्तिसहितं सत् आनंदमयः को-शः। एतत्कोशपंचकम्। मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनश्च मदी-या बुद्धिमंदीयं ज्ञानमिति स्वेनैव ज्ञायते। तद्यथा मदीयलेन ज्ञातं क-टककुंडलगृहादिकं स्वस्मादिनं त-था पंचकोशादिकं मदीयलेन ज्ञात-मात्मा न भवति॥

प्र-आनंदमय कोश किसकों कहते हैं ? उ०-इसीतरह यह जो कारणशरीरश्चत अविद्या है अर्था-त् कारणशरीरप्रधान जो है अज्ञान मिलनसत्वप्र-

धान- अर्थ यह-रजतमग्रणकरिकै मलिन जो स-तोग्रणप्रधान प्रियमोदप्रमोदवृत्तिसहित, प्रिय कहे अभिलिषतवस्तुके देखनेतें होता है जो सुख, अरु मोद कहे अभिलिषतवस्तुके प्राप्त होनेतें होता है जो सुल, अरु प्रमोद कहे अभिलिषतवस्तुके भो-गनेका होता है जो सुख, ऐसी वृत्तिवाला यह आ-नंदमय कोश है. आनंदकी बहुततातें इसका नाम आनंदमय है इति. ये जो कोशपंचक हैं तिनके साथ मिलिके अर्थात् एकता मानिके अमकरिके आत्मा कहता है. 'मदीयं शरीरं' मेरा शरीर है 'मदी-याः प्राणाः 'मेरे प्राण हैं, 'मदीयं मनः' मेरा मन है, 'मदीया बुद्धिः' मेरी बुद्धि है, 'मदीयं ज्ञानं 'मेराज्ञा-न है; ऐसे अपनेकों पंचकोशरूप जानता है, तथा मदीयले कहे मेरा नहीं जानना चाहिये. काहेतें कटक कहे कडा वा कंकण कंडलघरपुत्रक्षेत्रादि-वत् पंचकोश अपनेतें भिन्न हैं तातें पंचकोशन-कों मदीय कहे मेरे हैं, ऐसा मानना रूथा है. काहेतें आत्मा इन पंचकोशनका साक्षी इनतें भिन्न है, अरु पंचकोशरूप आत्मा नहीं है. अर्थ यह कोश मायामय कहे मायाकृत हैं, अरु आत्मा मायाका साक्षी मायातें भिन्न अनादि है इति ॥

आत्मातर्हिकः।सचिदानंदस्वरूपः॥

टीकाः-प्र०-तौ फिरि आत्माका स्वरूप कसा है यह कृपा करिकै कही॥ उ०-आत्मा सत्, चित् और आनंदस्वरूप है॥

सितंक । कालत्रयेऽपि तिष्ठतीतिस-त् ॥ चितिंक । ज्ञानस्वरूपः ॥ आनंदः कः । सुखस्वरूपः ॥ एवं सिचदानं दस्वरूपं स्वात्मानं विजानीयात् ॥

टीका:-प्र०-सत् किसकों कहते हैं ? उ०-जो भ्रत अरु भविष्य वर्त्तमानकालमें एकरस स्थि-त रहे, तिसकों सत् कहतेहैं ॥ प्र०-चित् किसकों कहते हैं ? उ०-चित् कहते हैं ज्ञानखरूपकों. अर्थ यह जो घटपटादि पदार्थनका जाननेवाला है अरु साक्षी अनुभवरूप जो संपूर्ण वस्तुनकों अनुभव करता, अर्थात् देखताहै, सो चेतनस्वरूप साक्षात् ज्ञान है. प्र०—आनंद किसकों कहते हैं? उ०—जो सर्व दुःखनतें रिहत प्रपंचातीत अधिष्ठान कृटस्थ बहा है, सो आनंदस्वरूप है, इस प्रकारका जो सचिदानंद बहा है, तिसकों स्वात्मानं कहे अपने आपकों जाने. अर्थ यह—सचिदानंदस्वरूप ब्रह्म अपने आपही है अरु अपनेतें भिन्न सर्व नामरूप हश्य जह जगत् रज्जुसर्पवत् मिथ्या है इति॥

अथ चतुर्विशातितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः॥

टीकाः—अब चौविश प्रकारके जो मायाके तत्त्व हैं तिनकी उत्पत्तिकी रीति कहतेहैं इति ॥ ब्रह्माश्रया सत्त्वरजतमग्रणात्मिका माया अस्ति।तत आकाशः संभूतः।

## आकाशाद्वायुः। वायोस्तेजः। तेजस आपः। अद्भयः प्रथिवी॥

टीका:-ब्रह्मके आश्रय, अर्थात् ब्रह्म है आ-धार जिसका ऐसी सत्वरजतमोग्रणस्वरूप माया है, तिसकों साम्य अवस्था कहे सत्त्व, रज, तम, ये तीनि उण समान एकरूप सो मायाकी प्रथम अ-वस्था है, इसीकों मूलमाया अरु मूलप्रकृति भी कहतेहैं. अरु सांख्यशास्त्रवाले इसीकों जगत्का मूलकारण प्रधान अव्याकृत भी करतेहैं, अरु यही मुख्य मायाका स्वरूप है तिस मायातें प्रथम आकाशकी उत्पत्ति होती भई, आकाशतें वायु, वायूतें तेज कहे अमि, अमितें जल, जलतें पृ-थिवी उत्पन्न होती भई इति ॥

एतेषां पंचतत्त्वानां मध्ये आकाश-स्य सालिकांशात् श्रोत्रेंद्रियं संभूत-म् । वायोः सालिकांशात् त्वगिंद्रियं संभूतम् । अग्नेः सात्त्विकांशात् चक्षु-रिंद्रियं संभूतम् । जलस्य सात्त्विकांशात् रसनेंद्रियं संभूतम् । प्रथिव्याः सात्त्विकांशात् व्राणेंद्रियं संभूतम् । एतेषां पंचतत्त्वानां समष्टिसात्विकांशात् मनोबुद्धयहंकारचित्तांतःकर-णानि संभूतानि ॥

टीका:—और इन पांच तत्त्वोंके मध्यमें जो आकाश है तिसके सतोयणके अंशतें श्रोत्रइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, इसीतरहकी वायके सतोयणके अंशतें त्वचाइंद्री उत्पन्न होती भई, और अभिके सतोयणके अंशतें चध्यइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, जलके सतोयणके अंशतें रसनाइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, पृथिवीके सतोयणके अंशतें प्राणइंद्री उत्पन्न होती भई।। अरु इन पंचतत्वोंके समष्टि कहे सब एकमें मिलिके अर्थात् एकपिंडकरिके तिसतें मन,

बुद्धि, अहंकार अरु चित्त ये चारिप्रकारकों अंतः-करण उत्पत्ति होते भये इति ॥

संकल्पविकल्पात्मकं मनः। निश्च-यात्मिका बुद्धिः। अहंकर्ता अहं-कारः। चिंतनकर्तृ चित्तम्। मनसो देवता चंद्रमा। बुद्धर्ब्रह्मा। अहंकार-स्य रुद्रः। चित्तस्य वासुदेवः॥

टीकाः—सो संकल्पविकल्परूप अर्थात् यह करना योग्य है, यह नहीं ऐसे संशयरूपवाला मन कहा जाताहै निश्चय करनेवाली बुद्धि है, अरु अहंकार करनेवाला अहंकार है, अरु सर्व वस्तुनका चिंतन अर्थात् स्मरण करना वासनारूप चित्त है. मनकी देवता चंद्रमा है, बुद्धिका ब्रह्मा, अहंकारका रुद्द, चित्तकी देवता वासुदेव है. इसप्रकारका पांच ज्ञानइंद्री अरु चारि अंतःकरण ये नव पदार्थ स-तोग्रणके अंशतें उत्पन्न होते भये इति ॥ एतेषा पंचतत्त्वानां मध्ये आकाश-स्यराजसांशात् वागिंद्रियं संभूतम्। वायो राजसांशात् पाणींद्रियं संभुतम्। तम्।वहः राजसांशात् पादेंद्रियं संभूतम्।जलस्य राजसांशात् उपस्थें-द्रियं संभूतम्। प्रथिव्याराजसांशात् यदेंद्रियं संभूतम्। एतेषां समष्टिरा-जसांशात् पंचप्राणाः संभूताः॥

दीकाः और इन पंच तत्त्वौंके मध्य जो आन्तर्था है तिसके रजोग्रणके अंशतें वाणीइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, वायुके रजोग्रण अंशतें हाथइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, अभिके रजोग्रणके अंशतें पादइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, जलके रजोग्रणअंशतें लिंगइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, और पृथिवीके रजोग्रण अंशतें यदाइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, और पृथिवीके रजोग्रण अंशतें यदाइंद्रीकी उत्पत्ति होती भई, और इन पंचभ्रतनके समष्टिरजोग्रणके अंशनतें पंच प्रा-

ण उत्पन्न होते भये, इसप्रकार पंच कर्मइंद्री अरु पंच प्राण ये दशवस्तु रजोग्रणके अंशतें उत्पन्न होती भई इति ॥

एतेषा पंचतत्त्वानां तामसांशात पंचीकृतपंचतत्त्वानि भवंति।पंचीक-रणं कथं इति चेत्। एतेषां पंचमहा-भूतानां तामसांशस्त्रपं एकं एकं भूतं दिधा विभज्य एकं एकमधे ए-थक् तृष्णीं व्यवस्थाप्य अपरं अप-रं अर्ध चतुर्घा विभज्य स्वार्धमन्ये-षु अधेषु स्वभागचतुष्ट्यसंयोजनं कार्य। तदा पंचीकरणं भवति। ए-तेभ्यः पंचीकृतपंचमहाभूतेभ्यः स्थू-लशरीरं भवति। एवं पिंडब्रह्मांडयो-रैक्यं संभूतम्॥

टीका:-और इन पंचतत्त्वनमें बाकी रहा जो तमोग्रणका अंश तिसतें पंचीकृतपंचमहाभ्रुत उत्प-न्न होते भये. प्र०-पंचीकरण कैसे होताहै ? उ०-ये जो पंचमहाभूत हैं, सो तमोयणका अंश हैं. सो ए-क एक भूतके दो दो भाग करिकै एक एकके अर्ध-अर्धभागनकों अलग अलग स्थापन करे औ अपर अपर कहे एक एक भूतके जो अर्ध अर्ध भाग बाकी रहे तिनके चारि चारि भाग करै फेरि अपने अपने जो अर्ध अर्ध भाग हैं तिनसें अर्ध अर्ध भागनके चारि चारि भागनकों कमतें मिलादेवै तो पंचीकर-ण होताहै. अर्थ यह-एकएकभूतके पंचपंचभाग हो-जाते हैं सो इन पंचीकृतपंचमहाभृतनतें स्थूलशरी-र होता है. इस रीतिसैं पिंडब्रह्मांडकी एकही प्रका-रतें उत्पत्ति होती है. अर्थ यह-पिंड अरु ब्रह्मांडकी उत्पत्तिमें भेद नहीं है. जैसे पंचमहाश्वतनतें पिंड उत्पन्न होता है, तैसे ब्रह्मांड उत्पन्न होता है इति॥ स्थूलशरीराभिमानी जीवनामकं

ब्रह्मप्रतिबिंबं भवति। स एव जीवः प्र-कृत्या स्वस्मात् ईश्वरं भिन्नत्वेन जा-नाति। अविद्योपाधिः सन् आत्मा जीव इत्युच्यते॥

टीकाः-इसवर्तमान स्थूलशरीरका अभिमा-नी, जीव है नाम जिसका, सो ब्रह्मका प्रतिबिंब, अर्थात् छाया वा तेज है. जैसे जलपूरित घटकेविषे सूर्यका प्रतिबिंब है, सो घटके नाश होनेतें प्रतिबिं-ब सूर्यरूपताकों पाप्त होता है, तैसे माया अर्थात अज्ञानके नाश होनेतें जीव भी ब्रह्मरूपताकों प्राप्त होता है. फेरि बिंबपतिबिंबभाव रहता नहीं. सो यह जीव प्रकृति कहे मायाके आधीनतातें अर्थात मायाके वशीभृत है, तातें अपनेकों ईश्वरतें भिन्न जानता है. तात्पर्य यह मायाके कार्य जो हैं स्थूल सूक्ष्म शरीर दो, तिनके वशीभृत अर्थात् एकरूप-ताके होनेतें दुग्धजलवत् अभेद विषयभोगनके

कहे विषयानंदस्रलकी इच्छाकरिकै नानाप्रकारके कर्मनकों करता है, अरु तिनके फल स्वर्गनरकादिके सुखदुः सभागनकों भोगता है. जो अविद्याकी उ-पाधिवाला है, तिसका नाम जीव आत्मा है. तहां जो रजोयण और तमोयणकों सत्त्वयण दबाए हुए है, तिनतें आप दबता नहीं, सो शुद्ध सतोग्रण अरु माया कहा जाता है, अरु जो सतोष्ठण रज तम ग्रणनकरिके आप दबा हुवा है, तिनके दबानेकों सामर्थ्य है नहीं, सो अशुद्धसत्त्व अविद्या कहा जा-ता है. तिसका नाम अज्ञान कहा जाता है. तहां अविद्याकी उपाधिवाला अर्थात् अविद्याकरि-के आवृत कहे ढंका हुवा आत्मा स्थूलशरीरका अ-भिमानी, तिसका नाम जीव है. तात्पर्य यह अ-विद्याकेविषे जो ब्रह्मका प्रतिबिंब परता है, तिस-का नाम जीव है॥

मायोपाधिः सन् ईश्वर इत्युच्यते। एवं उपाधिभेदाजीवेश्वरभेददः

ष्टिर्यावत्पर्यतं तिष्ठति तावत्पर्यतं जन्ममरणादिरूपसंसारो न निव-र्तते तस्मात्कारणान्न जीवेश्वरयो-भेंदबुद्धिः स्वीकार्या॥

टीकाः—और मायाकी उपाधि कहे माया-विषे जो ब्रह्मका प्रतिबिंब परता है तिसका नाम ईश्वर जगत्कर्ता है. वास्तव परमात्मा जो है ब्रह्म सो जीवईश्वरउपाधीतें रहित शुद्धचैतन्य अपनी महिमाविषे स्थित है. एवं कहे इस प्रकार उपाधिभे-दकरिक जबतक पुरुषकी ईश्वरजीवविषे भेदबुद्धि रहेगी, तबतक जन्ममृत्युरूप संसारकी निवृत्ति नहीं होवैगी तिस कारणतें जीवईश्वरमें भेदबुद्धी-का अंगीकार कदापि करना नहीं चाहिये इति ॥

नतु साहंकारस्य किंचिज्ज्ञस्य जीव-स्य निरहंकारस्य सर्वज्ञस्यश्वरस्य त-त्वमसीति महावाक्यात् कथमभेद- बुद्धिः स्यादुभयोः विरुद्धधर्मात्रान्त-

टीका:-शंका, साहंकार कहे देह अहंकारस-हित जो अल्पज्ञ जीव है और निरहंकार कहे दे-हाहंकाररहित जो सर्वज्ञ ईश्वर है, तिन दोनोंकी एकता तत्त्वमसि महावाक्यकरिक जो तुम कहते हो, सो अयुक्त है, काहेतें तम प्रकाश, अथवा अं-धकार सूर्यंकी तरह कैसे अभेदबुद्धि करे, यह तों महाविरोध प्रतीत होता है इति ॥

इति चेन्न स्थूलसूक्ष्मश्रारागिमानी तंपदवाच्यार्थं । उपाधिविनिर्मुक्तं समाधिदशासंपन्नं शुद्धं चैतन्यं त्वं-पदलक्ष्यार्थः ॥

टीका:-उ॰ ऐसा नहीं कहे, ऐसा जो दं विरुद्ध धर्म जीवईश्वरविषे कहता है, सो यथार्थ है, परंतु उपाधिकरिकै जीवईश्वरविषे विरुद्धधर्म प्र-

तीत होता है, वास्तव भेद कोई है नहीं. अब जीवई-श्वरकी एकतासिद्धिके अर्थ तत्त्वमसि महावाक्यका संक्षेपसें अर्थ कहते हैं तहां तत्त्वमिस महावाक्यके तीनि पद हैं, तत् त्वं असिः तत् कहे तीन जग-त्कर्ता जो सर्वज्ञ ईश्वर है सो, त्वं कहे तुं, असि क-हे है, अर्थात् तौन जगत्कर्ता ईश्वर तुं है, यह तत्त्वमसि महावाक्यका सामान्य अर्थ है. अब विशेष्य अर्थकों कहते हैं. तहां तत्पदके दो अर्थ हो-ते हैं एक वाच्य, दूसरा लक्ष्य, इसी तरह त्वंपद्के-भी दो अर्थ होते हैं. जैसे घटपदका वाच्य अर्थ घ-टका गोलाकार रूप है, अरु घटका मूलकारण लक्ष्य मृत्तिका है, इसी प्रकार माया और अविद्या-संबंधवाला तत्पद् अरु लंपदका वाच्य अर्थ है, अ-रु माया अविद्यासंबंधरहित शुद्ध चैतन्य ब्रह्म दो-ऊ पदनका लक्ष्य अर्थ होता है, तहां स्थूल, सूक्ष्म शरीर दोनोंका अभिमानी लंपदका वाच्य अर्थ है. और उपाधिविनिर्मुक्त कहे उपाधियोंतें रहित सन माधिदशासंपन्न कहे समाधिअवस्थामें प्राप्त अथ-वा सुष्ठप्तिअवस्थाविषे शुद्धचैतन्य त्वंपदका लक्ष्य अर्थ है इति ॥

एवं सर्वज्ञत्वादिविशिष्ट ईश्वरः तत्पद्वाच्यार्थः॥ उपाधिश्चन्यं शुद्धचैतन्यं तत्पदलक्ष्यार्थः॥ एवं च जीवेश्वरयोः चैतन्यरूपेणाऽभेदे बाधकाभावः॥

टीकाः-इसी तरह सर्वज्ञत्वादिविशिष्ट कहें सर्वज्ञतादि विशेषणसहित ईश्वर तत्पदका वाच्य अर्थ है, और उपाधिश्चन्य कहे सर्वज्ञतादि विशेष-णरहित शुद्धचेतन्य तत्पदका ठक्ष्य अर्थ है. एवं कहे इसप्रकार जीवईश्वरका चेतन्यरूपकरिके अ-भेदकी बाधा कोई है नहीं. तात्पर्य यह स्वरूप क-रिके जीवईश्वर अभेद है, भेद नहीं है।। एवं च वेदान्तवाक्यैः सहरूपदेशेन च सर्वेष्विप भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धिरु-त्पन्ना ते जीवनमुक्ता इत्यर्थः ॥

टीका:-एवं कहे इस रीतिसें वेदांतवाक्यन-करिकै सद्धरुके उपदेशतें सर्व भूतनके विषे जिस पुरुषनकी ब्रह्मबुद्धि उत्पन्न होती है, अर्थात शुद्ध सचिदानंदस्वरूप ब्रह्म में हूं, ऐसी निश्चय जिन पुरुषोंकों होती है, ते जीवनमुक्त हैं, यह अर्थ है।।

ननु जीवनमुक्तः कः ? यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं ग्रुद्रोऽहमस्मी-ति दृढनिश्चयस्तथा नाहं ब्राह्मणः न ग्रुद्रः न पुरुषः किंतु असंगः सचि-दानंदस्वरूपः प्रकाशरूपः सर्वातया-मी चिदाकाशरूपोऽस्मीति दृढनि-श्चयरूपाऽपरोक्षज्ञानवान् जीवनसुक्तः

टीका:-जीवन्मुक्त किसकों कहते हैं?उ०-य-थेति जैसे मैं देह हूं, मैं पुरुष हूं, मैं ब्राह्मण हूं, मैं श्रद हूं, ऐसी जो पुरुषकों मनुष्य अथवा जीवभावका दृढ निश्रय है, तैसे मैं देह नहीं, ब्राह्मण नहीं, श्रूद्र नहीं, पुरुष नहीं, किंतु कहे कौन हूं, असंगः कहे देहआदि, प्रपंचसंघात कहे समूहतें में असंग अर्थात् संगरहित भिन्न हूं, और मैं सचिदानंदस्वरूप हूं और स्वप्रकाश कहे अपने प्रकाशकरिकै प्रकाशमान हूं, अर्थ यह, सूर्यादिवत् परप्रकाश नहीं और सर्वभूतनविषे अंत-रजामी कहे अंतःकरणविषे सर्व देहइंद्रियादिकन-का प्रेरक अरु नियंता कहे अधिष्ठान, सर्वके जानने-वाला साक्षी हूं, और चिदाकाशरूप कहे चैतन्यरूप आकाश सर्वभूतनके बाहर भीतर असंग सर्वसें नि-र्लिप्त व्यापक हूं ऐसे दृढरूप अपरोक्ष कहे साक्षात्कार ज्ञानवानकों जीवन्मुक्त कहते हैं यह अर्थ है।।

ब्रह्मैवाहमस्मीत्यपरोक्षज्ञानेन निखि-

लकर्मबंधविनिर्मुक्तः स्यात्॥कर्माणि कतिविधानि संतीति चेत् आगामि-संचितप्रारब्धभेदेन त्रिविधानिसंति॥

टीकाः—ब्रह्मैवाहं कहे मैं सचिदानंदब्रह्म हूं, ऐ-से अपरोक्षज्ञानकरिकै निखिल कहे संपूर्ण कर्मन-के बंधनोंतें पुरुष निर्मुक्त कहे छूटि जाते हैं. प्रश्न-कर्माणीति. कर्म के प्रकारके होते हैं? उ०-आ-गामि, संचित और प्रारब्ध भेदकरिकै तीनि प्र-कारके कर्म होते हैं इति ॥

ज्ञानोत्पत्त्यनंतरं ज्ञानिदेहकृतं पुण्य-पापरूपं कर्म यदस्ति तदागामी-त्यभिधीयते ॥

टीकाः—तहां ज्ञानोत्पत्ति कहे ज्ञान उत्पत्ति होनेके अनंतर कहे पीछे ज्ञानी जो जो कर्म देहक-रिक पुण्यपापरूप करते हैं, सो आगामि कर्म हैं॥ संचितं कर्मकिम्। अनंतकोटिजन्म-नां बीजभूतं सत् यत्कर्मजातं पूर्वा-र्जितं तिष्ठति तत्संचितं ज्ञेयम् ॥

टीकाः-प्र॰-संचित कर्म किसकों कहते हैं ? उ॰-अनंतकोटि कहे संख्यातें रहित कोटिनज-न्मोंविषे जो प्रण्यपापरूप कर्म संसारकेविषे जन्म-मृत्यु होनेके बीजरूप सो जो जो कर्म हैं पूर्वज-न्मके उत्पत्ति करे हुये तिष्ठति कहे स्थित है, ति-नकों संचित कर्म कहते हैं. संचित कहे इकडा करना खजानारूप जमा है इति ॥

प्रारब्धकर्मकिमिति चेत्। इदं शरी-रमुत्पाद्य इह लोके एवं सुखदुःखा-दिप्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगेन न-ष्टं भवति प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षय इति॥

टीका:-प्र०-प्रारब्ध कर्म किसकों कहते हैं? उ०-उत्पाद्य कहे उत्पत्ति भया जो यह वर्त्तमान स्थूलशरीर पूर्वजन्मके करे हुये पुण्यपापरूप कर्म, तिनके फल सुखदुःखादि अनेक प्रकारके भोग इस संसारमें सुखदुःखादिपद कहे देनेवाला जो है यह स्थूलशरीर अथवा इस वर्त्तमानशरीरके जो हैं सुख-दुःखभोग, तिनका नाम प्रारब्धकर्म है, सो यह प्रा-प्त जो वर्त्तमानशरीर है और तिसविषे प्राप्त जो सुखदुःखादिभोग हैं, सो भोगनेतें नष्ट होतेहैं, तिन-के नष्ट होनेतें प्रारब्धकर्मभी नष्ट होजाते हैं. तात्पर्य यह, स्थूलशरीरही प्रारब्धकर्म है, तिसके नाश हो-नेतें प्रारब्धकर्मनकीभी नाश होजाती है, काहेतें प्रारब्धकर्मनकी भोगहीतें नाश होता है, तात्पर्य यह विनाभोगे संसारविषे और कोई तिनके नाश करनेका उपाऊ है नहीं, यह अर्थ है. तहांश्लोक "अ-वश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरिप" टीका-पूर्वजनम्बिषे

जो करा है शुभ अथवा अशुभ कर्म तिनके फल अवश्यभोगने परेंगे, विना भोगे जो कोटिनजन्म-तक कोई जतन करें तौभी तिनकी नाश नहीं हो-गी, बनेही रहेंगे इति ॥

संचितं कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चया-त्मकज्ञानेन नइयति। आगामि क-मं अपिज्ञानेन नइयति। किंच आगा-मिकर्मणां निलनीदलगतजलवत् ज्ञानिनां संबंधो नास्ति॥

टीकाः - और संचित कर्म जो हैं अनंतको-टिजन्मके बीजरूप सो में सिचदानंद बहा हूं ऐसे हढ आत्मज्ञानके निश्रय होनेतें नाश हो जाते हैं, और आगामि कर्मनकी भी ज्ञानतें ही नाश हो-जाती है. किंच कहे काहेतें आगामि कर्मनका न-लिनीदलगतजलवत् कहे जैसे नलिनी जो है क-मलके दल कहे पत्र सो नित्य जलकेविषे रहत हैं, परंतु तिनकों जलका संबंध है नहीं. अर्थात् ज-लतें जुदा सुभाववाले हैं. तैसे ज्ञानीके देहकरिके पुण्यपापरूप कर्म होते हैं, तिनका संबंध ज्ञानीतें है नहीं. तात्पर्य यह, ज्ञानी अपने स्वरूपकों देहतें भिन्न मानता है. जातें देहसंबंधी पुण्यपापरूप क-में ज्ञानीकों स्पर्श नहीं होते. जैसे असंग आकाश-कों जगतके कर्म स्पर्श नहीं करते इति ।।

किंच ये ज्ञानिनं स्तुवंति भजंति अ-र्चयंति तान्प्रति ज्ञानिकृतम् आगा-मि पुण्यं गच्छति। ये ज्ञानिनं नि-दंति द्विषंति दुःखप्रदानं कुर्वति ता-न्प्रति ज्ञानिकृतं सर्व आगामि कियमाणं यदवाच्यं कर्म पापात्मकं तद्गच्छति॥

टीका:-काहेतें जो पुरुष ज्ञानीकी स्तुति प्र-शंसा करते हैं, और भजंति कहे पूजादि मा-

न, सेवा, चाकरी करते हैं, तिनकों ज्ञानीकी करी हु-ई आगामी पुण्य मिलती है, और जो ज्ञानीकी निंदा करते हैं और शत्रुभावकरिकै नाना प्रकारके दुःखनकों देते हैं, तिनकों ज्ञानीके करे हुये जो पा-परूप आगामी कर्म हैं, सो प्राप्त होते हैं. तात्पर्य य-ह, जबतक ज्ञानीका शरीर रहेगा तबतक पुण्यपाप अवश्य होएंगे, तिनकें फल ज्ञानीकों भोगने नहीं परेंगे. काहेतें ज्ञानीकी जो आगामी पुण्य है, सो ज्ञानीके भक्तोंकों मिलती है, और जो ज्ञानीतें श-ञ्जभाव रखते हैं, तिनकों ज्ञानीके करे हुये पाप मि-लते हैं. ज्ञानी पुण्यपापतें भिन्न है, ऐसे श्रुतिभी कहती है. तथा च श्रुतिः "सुहृदः पुण्यकृत्यान् दिषन्तः पापकृत्यान् गृह्णन्ति" इति श्रुतेः ॥

तथा चात्मवित्संसारं तीर्वा ब्रह्मा-नंदं इहैव प्राप्नोति । तरित शोकमा-त्मविदिति श्रुतेः ॥ टीकाः—तथा कहे तैसे आत्मवित कहे आत्मवेत्ता अर्थात् आत्मस्वरूपके जाननेवाले पुरुष
संसारं तीर्त्वा कहे तरी जाते हैं। तात्पर्य यह तिन
पुरुषनका जन्ममृत्युरूप संसार नष्ट हो जाता है, सो
पुरुष अवश्य ब्रह्मानंदकों प्राप्त होते हैं और नानाप्रकारके शोकमोहादिकतें रहित हो जाते हैं ऐसे
श्रुति कहती है. यह अर्थ है इति ॥

तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा॥ज्ञानसंप्राप्तिसमये मुक्तो-ऽसौ विगताशयः इति स्मृतेश्च॥ इति तत्त्वबोधप्रकरणं समाप्तम्॥

टीकाः - आत्मवेता जो है, सो प्रारब्धकर्मनके समाप्त भये पीछे शरीरकों चाहै तो काशीजीमें त्याग करे, चाहै श्वपच कहे मेहतरके घरमें त्याग करें परंतु ज्ञानप्राप्तिकालमें यह जो है विगताशय कहे गत होगई है त्रिलोकीके विषयभोगनतें इच्छा जि-

सकी अर्थात् त्रिलोककी संपदाकों श्वान और काककी विष्ठावत् त्याग वा तुच्छ माना है जि-सनें ऐसा विरक्त पुरुष तीक्ष्ण वैराग्यवाला आत्म-ज्ञानी सर्वकालविषे मुक्त है, तिसकेलिये देशकाल वस्तुका नेम है नहीं, ऐसे स्मृति भी कहती है।। इति श्रीमन्माधवानंदपरमहंसपरिव्रा-जविरचिता तत्त्वबोधप्रकरणकी सुबो-धिनीभाषाटीका समाप्ता।। शुभं भवतु॥





8	CONTRACTOR OF	WA C	<b>200</b>	DESCRIPTION OF THE PROPERTY OF
6	दुर्गास्तोत्र			कि. १ आ. ट. ॥ आ.
8	देवीसहस्रनामावली.	• 114	***	कि. १॥आ. ट. ॥ आ.
	्र ज्योतिर्दिगमानसपूजास्तो इ	ī		किं. है। आ. ट. ।। आ.
10	ਜਲ <b>ਚੰ</b> ਧ੍ਰ	***		किं. २ रु. ट. ४ आ.
	हितोपदेश इंप्रजी टिप्पणी	सह.	141	
(	हितोपदेश साधा	***	***	र्षि. ८ आ. ट. १ आ. हि
8	पंचरत्नगीता ठळक अक्षर.		***	
<b>M</b>	,, फार बारीक टैपांच	41	***	कि. ७ आ. ट. १ आ.
Si	प्रश्नोत्तरपयोनिधि	111	***	कि. ४ आ. ट. १ आ. १९७ कि. १ आ. ट. ।। आ.
2	प्रातःस्मरण	•••	•••	कि. ८।आ. ट. ॥ आ.
लि	बह्मनामावली भट्टिकाव्य	•••	,,,	कि. ३६. ट. ३॥ आ.
3	भारविकृत किरातार्जुनीय:	•••		किं. २ रु. ट. ४ आ.
	मनुस्मृति	***	***	किं. २ रु.ट. ४॥ आ. 📆
	रत्नसमुचय •••	•••	***	कि. २ आ. ट. ॥ आ. ि
- (1)	रसिकाष्टक	***	•••	किं. हा आ. ट. ॥ आ.
	रामगीता मूळ	***	•••	किं. हा। आ. हि
	रामचंद्रिका संस्कृत शब्दरू		•••	कि-४ आ. ट. ॥ आ.
1	रामरक्षा. •••	***	•••	कि. ४ आ. ट. १ आ.
	लघुकौमुदी	***	***	कि.है। आ. ट. । आ.
- Mary	लक्ष्मीस्तोत्र लौगाक्षिमास्करविरचित तर्व	क्रीमदी.		कि. २ आ. ट. ॥ आ.
		341.		किं. ६ आ. ट. १ आ.
-	विदुरनीतिः ••• विद्यारण्यस्वामिकत अनुभूति	प्रकाश.	•••	कि. २। रु. ट. २ आ.
	विज्ञुसहस्रनामः	.0.00	***	किं. १ आ. ट. ॥ आ.
	विष्णुसहस्रनाम रेशमी.	***	0.0.0	कि. २॥आ. ट. ॥ आ.
in.			200	المالمالمال
9	NO CONTRACTOR		W &	

20	ক্ত <i>ে</i>	THE STATE OF THE S	90/3	
H C		संस्कृत पुस्तकें वि		
2		अष्टाध्यायीसूत्रपाठः	111	कि. ४ आ. ट. ॥ आ.
0	<u>쩷</u>	अत्रंभद्रकृत तर्कसंग्रह व दीपिका.	****	कि. ६ आ. ट. १ आ.
3	3	अवधूतगीता. साधी.	•••	कि. २॥ आ. ट. ॥ आ.
-		अवधूतगीता. रेशमी.		कि. ५ आ. ट. १ आ.
!	ल	इसाबनीतिकथा (दोन भाग ) प्रत्येकी		किं. ६ आ. ट. ॥ आ.
	8	उदासीनसाधुस्तोत्र		कि. ५ आ. ट. ॥ आ.
		कालिदासकृत रघुवंश सटीक	•••	किं. २ रु. ट. ३॥ आ.
	ST	,, किता, बारीक टैपांचा.		किं. १ रु. ट. २ आ.
	9	कालिदासकृत कुमारसंभव काव्य.	•••	कि. २ रु. ट. ३॥ आ.
ı		कालिदासकृत मेघदृत काव्य	***	किं. ६ आ. ट. १ आ.
	3	🥠 इंग्रजी टिप्पणी सं	•••	किं. १२ आ. ट. २ आ.
	60	कालिदासकृत ऋतुसंहार काव्य.	•••	किं. ४ आ. ट. १ आ.
	8	🥠 इंग्रजी टिप्पणी स॰	•••	किं. ६ आ. ट. १ आ.
	웴	कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तल ना	टक.	किं. १। रु. ट. १॥ आ.
	C	,, इंग्रजी टिप्पणी स॰		किं. २ रु. ट. शाआ.
	8	कुष्णसहस्रनाम	•••	किं. २ आ. ट. ॥ आ.
		गणेशसहस्रनामावली	•••	कि. १॥आ. ट. ॥ आ.
	S	गणेशगीता. साधी.	***	्कि. २। आ. ट. ॥ आ.
	9	गणेशगीता रेशमी पुड्रचाची	•••	कि. ४। आ. ट. १ आ.
	9	गीता ठळक टैपांची.	•••	कि. १ र. ट. २ आ.
	2	गोपालसहस्रनाम. रेशमी	•••	कि. ४॥आ. ट. ॥ आ.
	2	गोपालसहस्रनाम साधें	***	कि. २। आ. ट. ॥ आ.
	6	तुलसीमाहात्म्य	***	कि.४॥ आ. ट. ॥ आ.
	g	दण्डिकृत दशकुमारचरित्र	***	किं. १॥ रु. ट. २ आ.
	6	दत्तात्रयनामावली	***	किं. २ आ. ट. ॥ आ.

المنافئ المنافئ



